

“శక్తుచ్చేత్తి శక్తుచ్చేత్తి వేత్తగాన సుఖణి” అను వాక్యోక్తి
 పాతకము సుగీతము సమస్తశ్రుతి సమాదరణము బహుసినదని చెప్పు
 వనిలేను. అపరాధమునకు వాక్యోత్త సత్వేనముగావించినచో పూవుకు
 లావియ్యవచ్చును. అట్లు గల్గింపజేసినవే యాపరాధములు, వారికథలు
 యుక్తగానములకన్న హానికథి లగ్రహాన మలంకరించి సర్వ జనముతి
 వాత్రిమై క్రకృతి మలరాగుచున్నది. అందు రామాయణ, భారతగాథలు
 వేరువేరుగాను, సుప్రహ్లాదుగాను, శంషిత కవులచే రచియింపబడి,
 శ్లోకాలకు వక్తలకు ముక్తి ధోక్తులొసంగుచున్నవి. గాని పురాణక్రేష్ట
 మనదగు శ్రీమహాభాగవత మల్లు పూర్తిగా లేనికారణమున కొందరు
 వారిదాసులకోరికపై నేనిది వ్రాయుట తలపించినది. నేనందులకు సమ
 ర్థుడను గాకున్నను వెచ్చల యాశీర్వచనములం బొందుల కొడంబడజేసినది.
 మొత్తిముమీద భాగవతమంతయు వివరించితిని గాని “పురంజనోపా
 ఖ్యానము” వరకు స్వీకృతముగుట వదిలితిని అందులకు సహృదయులు
 ఊహింతురుగాక. యీ కవిత్ర గ్రంథమును మదీయ పరమేష్ఠి గురు
 ఎస్కలును “గుర్జరవిద్వాం తత్వికందార్థములు” వ్రాసి లోక విఖ్యాతిగనిన
 కవరామ దీక్షిత అచల గురుమంపరా పీఠాధి పతులును, అగు,
 శ్రీమద్భాగవత శ్రీకృష్ణ ప్రభువుల వారికి
 కృతినొసంగితిని. యీగ్రంథి ముద్రణకు ద్రివ్యసహాయ మొనర్చినవారికి
 ఆ పరమేశ్వరుడు చిరాయురారోగ్య విశ్వరూపభివృద్ధి నొసంగుగాత యని
 కోరుచున్నాడను. దీని శ్రీబమ్మైన పోతనామాత్యుని భాగవతమందలి
 పద్యములకు * గుర్తు నుంచితిని.

1. The first part of the document is a list of names and addresses, which appears to be a directory or a list of contacts. The names are written in a cursive script, and the addresses are listed below them.

17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851.

[illegible]

(3) 2014-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044-1045-1

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

౧. శ్రీమదామల - పు. శ్రీమదామలరాజ

తాత్పర్యము కావున • ప్రతిము కొప్పు

రెవెన్యూ గవర్నమెంటుకు తెలియజేయుట కొరకు

మా హాస్య రోజులు : తరుణిమల

தமிழகம் (1) கி. பி. 1947

శక్తి యన్వేషణకు ప్రతి ఒకరు బుద్ధులు

● 2000年12月

శ్రీ పద్మముని శాస్త్రము • కావ్యరజము

భూమియోగి నివాసినాల్ • గంగ కెందు

సతమునొనరించు పనులుచా • స్వయం భావ

శ్రీ పురిసంజరి హరికథాః ♦ శేషము

వినుచు ముప్పది రోలు గాఁ జూచియు

సిద్ధాంతి మునుకు చెప్పినట్లు • ముదమలరంగ,



శ్రీ మహాభాగవతము.
శ్రీ మహాభాగవతము.

శ్రీ కృష్ణ భాగవతము.

(హరికథ) ప్రథమ స్కంధము

1. కలికింద్ర చరితము

మంజ—మునుపు వైకృతావస్థమందుగల । మునివసుదనుజేరి

వజ్రనాథు కింధిబుద్ధిమయుని । వసుమాతునిదగజ్జరి

2 మీకరుణనుక్రోధములు భవ్యముల । మేముగుణాకరయయ్యె

లోకిహితార్థము యితీహాసములు । స్తోమింపగ నయ్యె

౩ రాముచరిత్రమెల్ల రామాయణంబని

వాంఛనుతులకధను భారతిమని

కింధిబుద్ధిల నెల్ల స్కాందంబునాదరు

నానుములనుచెప్పి నారుగాన.—

కం! తరియించితిమిక నోకొక । పెరిగింపును భక్తిజ్ఞాన మేముఖ్యముగా

సురభగవత్కథ నావిని । పరమాత్మునికథనువినును భాగవతమనక.

నవహా—౧౦౮.

ప॥ పరమానులిచె భాగ । వతనూలకింపుచీ! వర॥

అ॥ సీరబుద్ధి మీరగను । దేవపందితమిది॥ వర॥

మి॥ పరమాత్మునిచరితంబుక । భక్తిమీరగావిన్నక

దురితంబులుదలకుక । చిరమోక్షముగల్గుక॥ వర॥

ఒలిని చాతానింబునకంటే చురులుగాచాడె. పదియొకవసారి పరశురా
ముండై యిచ్చిపోక్కివరి క్షత్రియులన్నిఁకె. పదియేడవవరి వ్యాసుం
డై వేదిపురాణములకు శాశిలేర్పరచె. పదునెనిమిదవసారి శ్రీరా
మాచతారంబున రాజనాథి రాక్షసుల వెక్కురియక్కడండె. పందొ
మ్మిదివవరి శ్రీకృష్ణాచతారంబున కంనాది విమతులంజుపి ధూభా
రింబు వారిండె. యిరునూడవవరి కలియుగాద్వితీయసరింబున బుద్ధుడే
రండై రాక్షసుల మాచాచారాధియుచ్చె. యిది యిరునదియొకటన
పది కల్పిహిషాకధానియై విష్ణుయోగంబును విప్రులకు జన్మించి ధరా
ధీశుల చుండగంబుల మాయుండువట్టి భగవత్ప్రేలల నెరిగించు భాగవత
పురాణం బఖలకలుష సంహారినియగాడె—

మంజ—కురుపాండవులకి నె—రికైన ను , గరముచేయునంద

మనిశించిరి కారవులు పాండవులు ; భరణిశ్రీజయమొంద.

తే మణినియ్యను నెరిగించి మానసము

కారివేసు డర్పితామ డిపుడమి

పాండుభూహనికులములే కుండునటుల

జేయుమని వివికేగలు చింతకక్కి.

వచ అర్హిత్తామ యొక్కరండగుట వేరొండు వెరివులేమి నర్హరాత్రంబున
పలుకుటేరంబుల నిదురించు పాండవుల వధియిండు దలపెట్టిన య
వ్వార్తనెరింగిన శ్రీకృష్ణపరమాత్మ పాండవుల నెయ్యలయం దుప
పాండవుల బరుండుజేసి యమునానదీ నైకత విహారంబులకు పాండ
వుల గొనిచనియె. అర్హిత్తామ యుపపాండవుల బల్కిని నెధించిచనిన
ద్రాపది పుత్రపంజక హరణంబెరింగి కొంతవడి శోకించి—

శా! ఆన్నామాధవ భ క్తవత్సల యిదే మన్యాయమోకాని నే

డిన్నీ చుండగు వ్రాణినాకొమరు లన్నిద్రాస్తులంబుపె నీ

కన్నన్నాకు శిష్యులెరి కృతతో గాండీవి నిన్నీమునిక

వెన్నెంబుగొనివచ్చి చుపును తని న్నిసోదరిక మొక్కెదక.

మొదలు—కవిని పించెను కావ్యజ్ఞుడనా మాటలకులయమెంచి
 నిరకృష్టులనియి యేను నెక్కి యా వేల్పుచనినచెనగాంచి
 2. కవిని కావ్యజ్ఞుని పాద తిరు' కవియమాలిలచి
 నరులై నుచుచునుచుచెరుగని! యట్టివిధ కవియమైచి.

వచనంబు కృష్ణుని పదనా యాదృశ్యస్త్రబులుకు క్రతిగా నీబ్రహ్మ
 స్త్రులకు కృష్ణయోగింపుచున నతి పద్మనిర్మలని లెడును ఘోరం
 యాకా పోరుమింక—

కవి' పాదయోగమునాదికి నున్నది మరలించికింటి లెడుమార్గముల నా
 గురునందనులెరువెంటనె యింక కవిముఖ్యమను ననియహరియనుక.

కవిజ్ఞాన—మాటల.

క' చింతలనువీజయ నెది నానాటంకకుయిప్పి చింత!
 ఆ గుంటిపాలెయి నానుడు కాకిగురుని పుతుడనిరుము. చం!

మి. కెంపునఘోరింపుచు నా జేపువానినిమగాక
 చంకరాదు ప్రహ్లాదాత్మని నైకరానిజేరికెన. చం!

2 ప్రాణహింసకిన్నునిరుము! శ్రాస్త్యాగహరమాఘోరము
 గానితిని మోరివిచన. గానిలెనాదయిమిరు

మి. పూనినికేదేమిదా : గాన్వికట్టి గంపోడిము
 మానితికేక్కిగర్భాదు ముడలినియి గావించిన. చం!

ఆ: నె' అదివ మంచినియి కళయంతాతి
 కిదియియికులెన్ని చింతినియి
 చున్న వానివలకు జూప కొక్కొక్కరు
 దురితిధయమువీడి చూడరని.

వచ: కీముండ్ల కాలవాంతకు నడచిపుత్తునని గడంగొనిలేచిన కృష్ణుడు—

చ' పరచినవాని కీముతు పారుని మద్యముగోలిదేహము
 క్షణించినవాని కాముకుని మాధవుభక్తుని నన్నుగావు మం
 చరచించిన నెదిగొనచ్చెట్టి పాక్కినవాని పాపువుక
 కిదిపడిపోయి చంపుటలుభయముగా చెప్పుచైనవాని.

మంజ—కృష్ణానామై ప్రాచీతగోపిని శిః । పోత్నముగొను
జన్మనందనుడవైన నాదల । స్థిరచిత్తకుమారు.

వచ॥ అంత పాండవులు మృతులగువారలకు వైశ్యక కియబాచరించిరి
గాంధార్వీ వృతి నాష్ట్యైల శోకంబుచాదించి సుఖాచారాతి రాజ్యం
బును పూర్వబుగా నేలుమండి నర్కమనందనుం డసమూహ మొక
మఠను మహోన్నతమనకిచ్చిన యథియం బాపవంతు డెవగొన-

తే॥ గీ॥ శైవోదర వసతి బాటుండుకి
పాండవులసంతులేకు న్నగండులనుచ
నీతితోనేల విద్యోచ్చితము
చేచుకొలుచు నీ నామ చేయెదను.

మంజ—తలచిబ్రహ్మ కేసోవాసం నా స్త్రీం బ్రహ్మవిద్యవ
జెలలియు త్తర గర్భమునంది । కంఠంబునుడెగవళవ.

వచ॥ అంత నుత్తర గర్భచేదనాథిరంగున్నితేక శ్రీకృష్ణభగవానుడలది
చలయహనుతమంజతుక్రూతి.

ప॥ యగకులనందన కోకి, గిరిధాకి మురజై-హరి॥ యదు॥

1 మననదనకముని । వానసనిలయూ
సవయవ్మాదియ కే॥ శివమామోదిం॥ యదు॥

2 చంద్రానికోడల నీ శేం । స్థూలు రణరింగముం
చెల్లెరు యీగర్భబాధి । ప్రైశికనురక్షింపుము. యదు॥

తే॥ గీ॥ యిటుపాస్థాచు నుత్తర నిందిరేసుం
డవలకుమబులను నారాయణాస్త్రమునను
ప్రాణివైచిన శిరమును దిరిమిగర్చి
మండుగలబాటుప్రాణంబు లరసిగాచె.

వచ॥ అంత కొన్నిదినంబులకు నుత్తరగర్భంబున నొక క్షత్రియకులా
లంకారుడగు కొమరుండున్భవించె పాండవు లతనికి పక్షిస్తన
నామం బొనరించి ముద్దార జెంచుచుండెరి. శ్రీకృష్ణ ఋమాత్మ
పాండవులందోహ్మని శరత్బృగతుండగు భీష్మనిగరి కరిగి నమస్క-

వచః శ్రీశృష్టాంశువు లరిగిపెమ్మల నొకవిదలయిన కేయి మర్కట నిష్ఠ
జనిత నందిన మృగాలయ విచారనాగిరంజనం మోక్ష దోగుమిల్లి,
గాంధారి శృతిరాజ్యలకడకు భర్తృహిత మన జనించిత వివరం
జగుచెంది.

కేవలకాళ చతుశ్శ్లోతి.

ప॥ కురుకులచృద్ధాంధిరాజ! గురుబలవిశేషా హృదా కురు!

అ॥ నిరతిశయ సుఖంజెనెకు సేవాశ్రయపాండిత్యలకు! కురు.

2 నాచనము వినకను నీ నందినులను హృద్వింబలి

గావించితె ధీమసేయ! గదికు వాంఛ నిరతిశయ! కురు!

మ॥ సుతులుక వారల పుత్రులుక గురువ్రంక చూడంగ కేళెంచు నీ

హేతులుక నీరులు నైదికుల్లెనన విమర్శి మహాయుక్తిచ

వితియక గోరుదువార నిష్ఠులం హృదే శ్రవ్యంపు మాహారవ

ప్రతిశ్ఛేదించు విరోధులమ్ము కటంజులించి చిత్రంబుగక!

వచః అచినపని కొంతవడెనాచించి శృతిరాజ్యసింహు-

కేకా—త్రిశ్శ్లోతి

ప॥ ప్రియకేతునోవికుర నా! కెరుగజేష్టనయ విధుర! యేరు॥

అ॥ నామనంబు దుఃఖాన్న గాగియును

నానినమొందిదియ్యె చింతకే నేరు!

మి సేమాటలు వినినను మా! కీ ముష్టిఘట్టిల్లగుగద

నాహృదకట్టి సుయోధను! దేవిక్కిలి మూర్ఖమూన! నే!

వచః అచిన పనునాచెల్లరియె—

నీ॥ శత్రుసాదముచిరి సౌఖ్యమందుటకన్న మారవంతుచకు మేల్ మరణ

మనగ

గావుననావెంట గాంధారితోచను దెమ్ముకాననీమ దేవభక్తి

బూనివానప్రస్త ముగముక్తి గాంచుదు రనినమృజోధించి యతనిదార

యతముగాగొనిచయచుడకాననమున దావాగ్నిప్రబలి గాంధారినాథు

కలశమొనరింప యమిత దుఃఖముననామె

భక్త నెరువెంటనగ్నిలో బడియడంగె

మొదటి—మీదటి.

మ. శోకింపగ నేలపార్శ్వమును మేగోవాలునుకు. శో
అ. యీశ్వరః కింమానాదః విదేల్మహేర్నముః పంచినా శో
మి. వ్రాకలశౌర్యాన్వితుడవు. పడితివోపెరిపించెద
వేకతమది యెరిగింపుము వృక్షలకే పడెన్ శో శో:

2 అడికివోయనృతములు నడికివోకదానా
నూడితివో క్షితిఘ్నుల నడికివో క్షితువులకు

మి. వేడితివో నీయల నె న్నడికివోవాసలకు
వాడినప్పిస్త్రీనామి. పంచమాచ్చివోయ్యాగిత శో:

మ మునుకొనాటని చూసినయెడలకై ముక్కింటితో బోరుచో
ఘనదేనాగుల కాలకేయినిగడం పరిపాకగానేనువో
ననమందల్ల నుయోనియెడలచి చోవక వివృణులగుల్పుచో
నినులన్ని నొనువొనిచో యెరుగి వే గాంధీవి యిట్లెరికేకా.

వది! అనినవారుండు—

మంజ — ఎవరికరుణయూ తగదా? పది కర. మిట్టిబట్టినామొ
ఎవరికరుణ బాంధవ వచంబును. యేముగెల్పినామొ

2 గాంధీవను గైకొంటి నెవని స. తక్కురుణనుమున్నొకచో
దండిరాజులగుల్పితి మెవ్వరి. దయనురాజహూయమున

3 కా? పదిమానముగాచె నెవ్వడా. ధార్తరాష్ట్రస్థభను
శోపమానిపారుగెల్చి శరంబును. గొంటి నెవనిస్మిపను.

* కంఠవిజయధనుంజను హనుమద్విజఫల్గునపార్థపాండుతనయనిరమహేం
ద్రజవిత్రయర్జునాయని భుజములు తవకడవరాక పోకలచీరుకా.

మ! అనఘుడామృత శ్రీకరుండు ముని సేవ్యాకారు డబ్బాత్తు డెం
దునతుల్కుండు సమస్తకార్యముల చేదోడైననాగాచె నా
దనుజదేవీ కృపాకరుండు వరబృందారణ్య సంచారి దా
మనలన్నిడి వికూతమేగెను భరింపక శక్యమే శోకిముకా.

భారతికుజుల ప్రాచీనుననియె సద్విప్రులనృపులు సేవింప రనియె
కులిశహస్తుకుచాన గురియింపకుండుట ప్రజలుకాటకమున బడును
హీనవశజాతు లేలేదరనియె రా (రనియె)
జ్యములు వాడిగొల్గి జరుగవనియె
మనుజులన్న పాన మైధున శయనాన
నాదికర్మగర్తు లగుచురనియె!

వచ! విచారించుచుంటివి గతిందేనియె యెదిగించుమన గోరువధాత్రి
దేని యిట్లనియె -

హి. హోడి నను శ్రాతి.

ప! ఏమిధర్మదేవిత నీ! విల్లుబుల్కుచుగోనా ఏయి 246, 54, 2 -
అ! నామదిదిగులది యెను. సంగిలనోయోచిపుము. యే

1. కలికాలంబుచెందెను. రాజహీన సహజం

బులు మూడదిగెను నిలువ. గల ౩ శోకవనధి ముగ్ధక: యే

2. దేవతలకు ఋషులకు పితృ. దేవతలకు స్నీకునాకు

గోవులకును వృక్షాశ్రమముల. కును బాధలుగల్గుగావె! యే!

తే! గీ! ఇల్లుభిన్నదేవతయు ధాత్రీసతీయు వి

చారి మొందెను ఇదికలి చక్రవర్తి

సూద్ర తేజబునండాసి రాష్ట్రమూని

కలుషమెన్నక నిర్వృతం గాలదిన్నె!

మంజ—పాండవపౌత్రుడు పక్షిత్తుడు యా! పాపాత్మునిజూచి

దుఃఖినియెటు లొనరింతువెనిను! మనిమెదనని కరమూచి!

వచ! నిన్నీగోస్వర సంబు లేరుగావించినవి. కొమ్మలంబు మృనా? పాప
భయం బించు కేయిలులేక యీవత్రిమూర్తులం గాలదన్నుదువా?
శ్రీకృష్ణార్జునులుగఱించిరని విజృంభింపనెంచితివా? మరాత్మా! యని
ధర్మదేవత: దిలకించి దేవా! నీ వేకపాదలై వర్తించుట కడు విచార
కరంబు కృతయుగంబున స్నీకు తపశ్శౌచ దయా సత్యంబులను
నాల్గుపాదాబులు గలవు. త్రేతాయుగంబున నందొక్కకు గతించె.
ద్వాపరంబున యింకొండుగఱించె. యీకలియుగంబున యొటికాలి

అట్లును దివికిని పాదమునకు వానిని తలచి నిని నిద్ర
 నిద్రానెనును నుదయించునట్లు కలగజూచును. ఇట్లుజూచులంబట్టి
 తే. 1. అట్లును ఇట్లును నుదయించును

క. 1. అట్లును ఇట్లును నుదయించును
 క. 2. అట్లును ఇట్లును నుదయించును
 క. 3. అట్లును ఇట్లును నుదయించును

మంజ—అని వ్రాసినది ఇట్లును నుదయించును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును నుదయించును

వ. 1. అట్లును ఇట్లును నుదయించును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును నుదయించును

తే. 1. అట్లును ఇట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును

అనునట్లును

వ. 1. అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును

తే. 1. అనునట్లును నుదయించును
 అనునట్లును నుదయించును

మంజ—అనునట్లును నుదయించును

అనునట్లును నుదయించును

అ. 1. అనునట్లును నుదయించును

అనునట్లును నుదయించును

అనునట్లును నుదయించును

అనునట్లును నుదయించును

నిన్ను పోలుకొని పురికినూరి దాటి నాలతాలహంతాలాది తరు
నమాకిరితిండ్లై కూర్చుండుటక నిజాభూయిష్టుంబగు కాంతారంబునం
బయిన్ని క్షయమగు నిహిత సుఖాచియిల నారదుండుమరై —

కూర్చున్నాడే—తాత్పర్యము.

బ. బాలకా, ఎవ్వరినై

అ. పోలకొని పురికినూరి దాటి నాలతాలహంతాలాది తరు

1. నిన్నయనకి నేనెడికాన, నావాసంబుమరై—

నిన్ను పోలుకొని పురికినూరి దాటి నాలతాలహంతాలాది తరు

2. జనజనకులు లేనా చినునె యిట్లు చినునెడగ

గొనకొని యెదిరుచును— నిన్నయెందు మునయ్యెను "బాల"॥

చ. అరులకాశియించి నియోగి స్వరూప పృథుండుచేరు మ

క్షయిండు కీరునయ్యెను నాంధ్రుడు యత్తనవాడుచేరు యా

తినిదిరిజేరి యంకమున తమ్ముడతో సమముండు నెంచ పా

మ్మని మెడబుట్టెను ఒ చినమాత తిలంబొనరింప నేనెడక॥

మంజ—అరుబానిని వచనంబు పెంతయు నలరియ్యెనునియె

నిరునెచ్చి, పోలకొనితికము మారితముగజేయపొమ్మనియె

2. నారాయణ యచ్చాక్షిమంత్రము నారదుకాని కొనగె

కోరి పోని మది ఖేరితిరింబుగ కుంభిని తపమునమునిగె॥

వచ. పెద్దికాలంబు మధువనంబునం దిమంబాచరింప నత్తపోవేడిమి నిండ్ర

లోకంబు దహింపరుండు శిక్వాది దివిజలాతని తపోవిఘ్నమాచరింప

యత్నించి ఒక బుర్రామి కైకుఁగించి పరింజేరి—

కూర్చున్నాడే—తాత్పర్యము.

వ. కరుణానయనా కోరి, సిరిభారీ మురైవైరి కరు

అ. సురహాక్షిగ వియతా, సుజనావన మునిలాంబ కరు॥

1. పీడియూరించి, దిక్కెవ్వొక చేర

నిన్నెప్పుడున్నచాలు, నీబాధిగ దలగెగలము కరు॥

చ॥ వెల్లతులు పుట్టినవి మరొక్కటికాదు
 నెరుగజేయమిది లగునడవు
 తనము మానుదంచు వారెవరును బాలు
 నెవరునిచ్చి కిరుణ పుట్టులయె

కం॥ చిరుత తనంబున తప మీ॥ కిరణిని కావించిమెళ్లు పంజరములో నే
 వరమైన నోరుమచ్చెడ॥ నెరుగుటినాగ కృష్ణుని నారాయణతో॥

చ॥ జనకుని యంక వారమెరు నాద్యమునాకు జనింపకున్న నీ
 కనిపినతల్లికంటె నుహత్యముగిలె ననుచెంచిమిమ్ము గాం
 చిని పయితుచ్చుకొనిముల నేగిరుకోల్కె ననిచెమోక్ష ప
 ట్టన వసీతులొన్నప్పు గుండప్పజ నాన్తెరిగిన్తనావుడుకో॥

వచ॥ నారాయణుడలరి శింధి కా॥ పునెయితి ఘోరతపంబున నన్నల
 రించినవారు యీవరికులేరు ముందుంగిలుగబోవరు నీకోల్కె
 కానందించిని నీతిండ్రి నెయిండలిప్రేమింబున నెమకుచు పచ్చు
 నున్నాడు గాఢపుంబునకరిగి పెద్దకాలుబు భరాపాలనంబాచరించి
 యిరువదివేలేండ్లుచన నక్షత్రమండలంబుపైనున్న మండలంబధిపసింది
 యధ్దానిం ధృవమండలంబని ప్రకాశంపంజేయుము యని యాకీర్వ
 దించి పారి యంతి ధానుడయ్యె—

తే॥ గీ॥ అతనుత్రాన సాదుడు యితులతో ము
 నాటవికి బాలుకైవచ్చి తనయునిగాంచి
 ప్రేమిడిని ముద్దులాడి దీవించిపురికి
 తోడుకొనిపోయె యెల్లర వేడుకలర॥

మంజ॥ పడపడిధృవుడారాజ్యంబున పట్టభద్రుడై చెలగి
 ముదిమునపాలించుచు భూజనముని జనకుతుడై మెలగి॥

భచ॥ కాలాంతమ్మన ధృవమండలంబునందె—

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ



ప్రేమ - జ్ఞానము
శ్రీ మహావిద్యాసాగరము.

శ్రీ కృష్ణ భాగవతము.

(హరినిధి) పంచమ స్కంధము

4. ధర్మతో నాహ్వానము.

ఉ. అంగదనామ యోగము యుక్తమునన్ బ్రే కర్షణ మూస ము
స్థంబుని స్థితిలోని విచార హరినిధి భాగవత వ
న్వాంగదమూలమునకు నాహ్వానమును మునిత్తు నా
ర్యాంగు దేవదాస్సుని తోచుకొని మని వేరుకొక్కరికా!
వచ అతని మహత్త్వ స్థితిని విని పోవలెన మరలను తిర్చిచారం
బున నతలే జన్మమునకు అంగము విద్యావార్యులయ్యె. నతని
నవభావములకు విధియునుండె. నివేదించె చాకై యిట్టొక
ధర్మమును దోయినాడు—

మంజ—నరులువాని మండిగముల నితలై నైవలెక గురుగూడి
జననామకుడును నేరుని వివేచనకేది విగయమునాడి.

గీ. యీ విధము మునిగియెరింగి వచ్చి
పుత్రునికి మునువాచి మౌనమునున్న
రాజులేమిదియెల్లరు పుట్టినోప
యములై నానందమును నుండిరిత!

వచ. లోకం . ఈ మానవల కాకరంబైన మునులు యంగదవంశం బుద్ధ
రింపించిరి నేరునిగానెల్లరు ముఖంక నంపనారామగ్రాంశులన

కృష్ణులను లక్ష్మీమణి నుండు కౌంతియు జనించి దింప
తొలగి పాపముల నొనరించుమనః—

నీ నుతి నొప్పును నీ కడనా

మరియును కేవలము నుతియు

యోమి నుతి నొప్పును

నానిజనులు జనులును నొప్పును నొప్పును

మంజ—కృష్ణుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

కృష్ణుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

2 నుతి నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

విత్తి నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

వచన నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

ల కృష్ణము. నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

నులభించు కృష్ణుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును

నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

మంజ—భక్తుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

మరియును కృష్ణుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును

వచన నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

నొప్పును—అంతానొప్పును.

ప: నవనాభులను నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

ల: నుజుజనాభులను నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

1 నుజుజనుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

నుజుజనుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

2 నుజుజనుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

నుజుజనుల నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

మంజ—అంతానొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

మానితియు నొప్పును నొప్పును నొప్పును నొప్పును

1. ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
భారతదేశమున ప్రాచీనముగా ఉన్నది
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము

వచనం భారతదేశమున ప్రాచీనముగా ఉన్నది
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము

మంచి కాలము ప్రాచీనముగా ఉన్నది
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము

వచనం భారతదేశమున ప్రాచీనముగా ఉన్నది
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము

మంచి—యమునాటిలో ముగ్ధులగుటకు యుక్తమిచ్చుచుండ
యమిత దాహమున నిండుమాలుగల హరిణి యాభరతుడండ॥

చం॥ జలమాలి దాహమున్నది చింతింపకుండల వ్యాధి కే
కలిపి భయమునంది వడిగా కరుణెత్తుచు గిరివేద నా
జలమున జూమివైబడి వినిస్వతి సూనుపురంబుకేర నం

తెలివారి పాపయాభరతి తాపసిగాంచ జనించెదానికి॥

వచనం భారతదేశమున ప్రాచీనముగా ఉన్నది

కావ్యము—మంచి

వచనం భారతదేశమున ప్రాచీనముగా ఉన్నది

అ యాచిహితములయొక్క యాచి హితము గాక ॥దైవ॥

1. కరుణించుచుండల కాల ప్రాచీనముగా ఉన్నది

ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము

2. కరుణించుచుండల కాల ప్రాచీనముగా ఉన్నది

ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము
ఇది ఒక ప్రాచీన నాణ్యము

గీ అచట భక్తి పుష్పములైనవి
కానీయి మొదటి వానియందు
కొన్నిగా నొది శోభనముగాని నాని
కొన్నిగా నొది తనకు నిలయునుకలె

సీ వానిముఖంబుల వర్ణశాలలోనెచ్చి గోక్షేపములుదొరి కొన్నినాళ్ళు
నూనెభాస్వంబుచే నరొనినెడి యన్నంబు కనిపించి కొన్నినాళ్ళు
కానారములదరిల వచ్చినిగోని కొనెచ్చి మెలవించి కొన్నినాళ్ళు
అలఘుశాకాహారములుకుచ్చములుగొనినెచ్చి ముచ్చుచుకొన్నినాళ్ళు
గీ ముఖంబు వానినాళ్ళు నానాభావముల
తిలకమునగల గుణములు తలచినా
మృగములకుమొదటి కిది మృగమునాతి
నైమిది తపముచుమాన భక్తితుల్యత

పచ! నాహరిణానాతమృదు భక్తితుల్యతై నెక్కి తొక్కించు యారకైచిన
యతిని వస్త్రంబులుజుచ్చు వర్ణశాలలో గంతులిమను పెద్దవియై
యొకనాడు భక్తితుని కనుమొరగి యొడేనింజని దానిగానని నతి
జమితి చింతనంది—

నానాభావము— శుభాతి.

ప హాముద్ధా హరిణము అతిగా యొడేనితివె హా

అ యొన్నగమెననిచు హింసించెనేకల హా

1 తల్లి యెడనాసె దానినిను బెంచితి

యల్లమదొనిని యెచ్చె నన్నెడనాయ హా

గీ ఇట్లు విలపించుచడవిలో నె-తయె శోమ

కోట్టివెడకి కనుంగొని యొగిది ముద్దు

లామచు నిలయముం జేర్చుసూచుజెట్టు

నిలెలభరతుని బెదిరించు నటహరిణము

పచ! తపోవిహీనుడై కురంగ దత్తచిత్తుం వర్తిం నాభరతులకు
యవనావకాలంబొసర్చునై—

నీ లో నీ పాపములను నాశ్చర్యము
భరింపజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము
కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము
కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము

వచన భావము నాచరించు తన మారితేజమున బుగె. నట్లు పెద్ద కా
లము కాభివృద్ధి కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము
కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము

మ చింతలులు భరింపజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము
కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము
కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము
కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము

వచన. పులకాశ్చర్యమున విడిచిపెట్టింపు భరింపజేయుచు నీ పాపము
కలగజేయుచు నీ పాపములను నీ పాపము

మంద—యమునానాలో ముగ్ధహృదయము యన్యమిచ్చుచుండ
యమిత వాహమున నిందిమాలుగల హరిణి యాభరతుడండ॥
చంద జంతులు వాస్తవమైతిని చింతింపజేయుచుండ వ్యాఖ్యి కే
కలిపి భయమునంద నడిగా కరుణెత్తుచు నిచ్చువేద నా
లమున భూమిపై బడి వినిస్వతి సూర్యపురంబుకేర నం
తెగివారి పాపయాభరత తాపగణన జనించెదానికి॥

వచన. యచ్చితుల కురుగము నాభరతుండు గాంచి—

కావ్యాశ్చర్యమునంద

ప/ వైదికవి వివరము, భావన యెవ్వరికైన ॥ దైవ॥
అ/ యాచింతనాతమయి, యాచారి కావ్యము గాక ॥ దైవ॥

1. కరుణచేతనము కాల, తిలకము యాచారిము
జనించెదానికి యిది, చాయబ్రతుక గలదో గద ॥ దైవ॥
2. కాలచక్రముల కరుణ, గుట్టి నీవిని చింతన
దేవతలందఱు నీవి నీవి విడిచి ముదియుచు ॥ దైవ॥

గీ ఆరుమడుగుల కిక్కిరిస్తూ
కానీయు మోచుగి నాచింత ముదిరి పువ్వు
కరమున నెంచి నేను నాహరిణి శా
విలసిల్లుచున్నది తనకు విలసిల్లుచున్నది

సీ! నాటియునుల పల్లశాలలో వెచ్చి నోటికి ముసురున కొన్ని నాళ్ళు
నూనెరూపముచే నరికినెండి యన్నెము విడిచి కొన్ని నాళ్ళు
కానీరములదరిగల కచ్చికిరిగి కొనివెచ్చి మెసవించి కొన్ని నాళ్ళు
అలఘుశాకాహారములుకుచ్చములుగొన్నవి నేచ్చి ముచ్చుచు కొన్ని నాళ్ళు
గీ! ముసుగు వారికొచ్చివు నావచ్చి నెచ్చి
లిక మొదలగు గుణములు తనకికొచ్చి
మృగములకుమెచ్చి కనిన మృత్యుచాత
నైచునని తపముచుమాన భవతుడంత

పద! నాహరిణిసోతమ్మను భవతుడై నెక్కి తొక్కుచు యారనైచిన
యెరివి వస్త్రములుండునచు పల్లశాలలో గంతులిడును పెద్దదియై
యెకనామ భవతుని కనుమొరగి యుండేనింజన దానిగానని నతి
డమితి చింతనంది—

నా నాటకము— గురుభాషణ.

ప: ఈముద్దు హరిణిను అకిల యెడోతివె పద!

అ: యేమృగమోచనిచు 'హింసించెకల హా'

1తల్లి యెడగొనిన! దానినిను బెంచితి

యల్లనుచ్చెలులు! మొప్పె నన్నెడగొను పద!

గీ: ఇట్లు విలసింపుచుచునో నెంతయు శ్రమ
కోర్చివెడకి కనుంగొని యెగిరి ముచ్చు
లాడుచు నిలయముం దేర్చునూమెట్లు
నిలెభరతుని బెదిరించు నలుహరిణి||

పద! తపోవీహీనుడై కురంగ దత్తచిత్తుడై చచ్చిగు నాభరతులకు
యవనానకాలంబాసన్నుడైన—

రక్షులగావించి వారిమ్మున్న కలియె

గంపయోదాగ్రే కాలంబు గడుపుమనె.

వచః పృథుభంబులొలి చరించుచు వైచిత్రగర్భక రజోకటలహ్నాన
గర్భంబజిన దివ్యమూర్త్యిమల్లు కనుకడవి బహ్మనిర్భయమై మలి
నాంబరమమీలిస్త యశ్శోపవీతుడగుట బాహ్మశాఢాసుండుగా కుల
జులు పాటింఁచి సవతితిల్లి దిక్కులు భరతుని వ్యవసాయంబునకు గ
డంగంజేసి నూక, తవును, పొట్టుమాడతిబైడలం బెట్టినను యమ్మ
తోపమానంబుగా దలంచి భరించుచు పాలమునం గావున్నయెడ
నొక్కనాడు—

మంజు—కలడానగరంబున వృషలుండచు చిలకేమిబలుడు

తలపడుప్రకార్యాచరణుడతి తానునుకలులుడు

2 సంతానార్థము కాధికాంబ సత్వీయభక్తి భజించుక

చింతింపక నరబలి నొక్కొక్కడ చేయుచు సంతోషించుక॥

ఉ॥ ఆతడు నొక్కనాడుమది నంబనడిప దలంచి దేవికి

బీతిగనేడు మానవ బలినొనరించెదతెను యొక్కనిక

పూతచరితునంచు భటముఖుల నంపగ ముచెనున్న న

వీర భయాత్మునా భరతు వేగొనిపోయిరి రాజపాలికి॥

వచః ఆవృషలుండను నృపాలుండును సమంత్రకంబుగా దేవిస్సించి అం
జులిబట్టి—

శ్రీకవిరాం—ఉ)కృ)ఃతి.

ప॥ శంభురాణి నీ । వేదిక్కుమాకు ॥శంభు॥

అ॥ శంబురారిజనకు । సాహూదరదేవి శంభు॥

1 అంబదేవికరుణ । నాదరింపవే

కంబు కంఠిహేమ । గాగ్రిసుచరిత్రి॥

మి॥ దంభములన్నిటి నీ ప । దంబులనుక బట్టి

జృంభణతనసుతునిడగా । జూడవె కాపడవె ॥శంభు॥

21 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

యొక్కప్పుడు వాటికి నొకప్పుడు మున్నెడను శివుడు :

22 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

23 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

24 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

మృత్యువును దేవుని కంటె చాలా ముఖ్యముగా

వచనములు పరివారింబులయు నెందోపరచిన సంతభరతుండు పాం
జలియె—

శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

25 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

26 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

27 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

28 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

29 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

30 శ్రీకృష్ణునివాక్యము :— శ్రీకృష్ణునివాక్యము :

మి! సేరములన్నిక్షుమిపుము ! నిచ్చిగనన్జూపము

కూడిమి నేలుము. నో! కుధిరాధుని తనమా శివ 'యెంత!

గీ॥ అనుచుపొమ్మి ధరితున కిటులెనాచు

గాకయనిదేవి జనియెనస్తాకభక్తి

భరితుడు భరితుడు యెప్పుడోవిధంబు

గా పొలుంబునకాపురా నాటివర!

వచ॥ కొంతకాలంబుజన సింధుదేశాశ్రమంబున నున్నాడు నుండచు నృపా
లుండు ఆంధ్రభాగ్యంబున కిట్టిలగువాని యాశ్రమంబునకరిగి
సేవించి తిత్విజ్ఞానంబున గెంచి చనుచున్న భరితునివాసంబు గు డ్దేతం
బువరియునరికి రజకులయందొకరింబలక మూలంబు కాభారంబు వహిం
పంజాలమి భరితుని గొనివచ్చి తనకాలంబునన్నిల్పి నతనికడుగు
కుదరమి వక్రిగతి నడచుటకులకి యూగాడుచున్న నృపుడుకోపించి-

గీ॥ యెవడురామూర్తి డిక్కితో యిటులు వక్రి

గతినిబరెడు కిటగామ కనులులేనో

పొగలొనావిని భరితుడు భూమివాలు

కనియెనిర్భయత్వంబున మహామగించి!

సీ॥ జనవర నీవుచెప్పినరీతిభారంబు తనువుకేగాని యాత్మకునులేదు

బాల్యయన్వనాదిపరిణామకృతమమకారములునుదేహమునెబోందు

గానినాకేరియుగలుగవుస్వామి భృత్యాదివిధేదంబు యాత్మకు విన

రాజాభి మానతచే జగంబునునీవు శాసించువీ జన్మసమసినంత

గీ॥ యెట్టిజన్మంబుగాంతువో యెరుగ వింత

యేని యున్నత మూకాంధతే నిజంబు

నాజరించెడునను శిక్షణంబొనర్చు

వేనియును నదివ్యర్థంబు వింటిరేయన!

మంజ—నరపాలుండు తత్వాద్వియె గానపల్లకిని డగ్గి

భరితునిపాదంబుల మొక్కియన నె బాహులనం జలులొగ్గి॥

హం దేవా! నా బుద్ధి నీ దయతో నాకు కలిగి. ముందు బుద్ధి నోకడేకం
నా దేహాని నాకు కలిగి ఉన్నది —

మీ దయతో నా బుద్ధి నీ దయతో నాకు కలిగి. ముందు బుద్ధి నోకడేకం
నా దేహాని నాకు కలిగి ఉన్నది —

మీ దయతో నా బుద్ధి నీ దయతో నాకు కలిగి. ముందు బుద్ధి నోకడేకం
నా దేహాని నాకు కలిగి ఉన్నది —

సంసారము — మోక్షము.

హం సంసారము కేవలము ను స్తరకానకతుల్యము యీ ససా!

అ! హింసాదుల కాకిరము ను హింసా జననమరణ యుతిము ||సంసా||

మి! హంసయిర్వదొక నేయిరైన! యాహుమ్లాప్త వృథాగతింతు వి

భవంసమాను దేహామవల! తల్లిగర్భమున బుట్టును "సంసా"!

2 తల్లిదండ్రీ! సుతులని మది! జలది ఒడికినంతవరకు

తల్లిడిల్లు చీల్గినంత! కలికిరారు వారలెవరు

మి! యుల్లనుండు దామోదరు! నుంచి భజించిన దొరులకు

చల్లగనిచ్చిన యదియును! చనుచెంచును మనవెంట ||సంసా||

గీ! శాసతారక భజనంబు గాంచయవల

యజమానతీ! మంత్రోత్తయంబు నెరిగి

జగదాహిత్యమందగ జనునుగావె

పురుషుని సహాయంబున పుట్టినయెడ!

౩౩. పాదుచూర్చానామ. పాదానంతరం మహావజ్జలు కడుగుదు
 యు ప్రసాదం ప్రాప్తిపూర్వకం. అనంతరం పుష్పవజ్జలు
 లుడగు. ఇప్పుడెవ వాడుంటాడనిమమ పుష్పగు స్థితియను
 బుడకేయ. పేదనాది విధమున జన్మములు తప్పుచి నా
 దుత్పాదం పొందుదు. కాదు—

జ. అర్థము. ప. ప. స. తిమిల మంగిము. సెరుకాకుక్కోచ్చును
 పురిమనాను ముగ్గుణి కారిములు. న్నెలుంగుకైచి మ
 ప్పురిదాని పుత్తులును సున్నమునందలి జంతుబాలము
 కుక్కనునది పీకుమంజుశబదంక సర్పమును జనించు వెంజియుకా.

బడ కాపుర యాసంబాదనాః నిమగ్నత వర్ణనః యమసంయో
 గంభీరీ తరింపునుని మోదించి యతిని గడతేచ్చింపి కొంతకాలం
 బుడ కాపురయోగధరితుఁడగు ధరితుండుదేహంబువాసి మారినివా
 సంబుచ్చేదనని పరీక్షన్మహారాజునకు సేకయోగీమంజరింగించనని
 కౌనకాదిమహర్షులకునూతుండుదెట్టె. నిద్రాశ్రీమహర్షాగవతాంతర్గత
 పంచమస్కంధము—

(1) (2) (3) (4) (5).





ప్రతిభా-పాఠశాల
శ్రీ నృసింహ స్వామి వారికి.

శ్రీ నృసింహ భాగవతము.

(హరికథ) పుష్పమే పుష్ప-విధిము

సంకల్పము.

పం. కొలకానుని కూతురయ్యది ఇదే పుష్పమే పుష్ప-విధిము
ప్రతిభా-పాఠశాల—పుష్పమే పుష్ప-విధిము—

మం. జననాయకనియ కన్యాశుల్కము నగుచుండెను
దినమువానిలో నామిహిమచు భార్యనుచుండెను.

కావ్య—ప్రతిభా

పం. అజమిహునిచితముచిను వజ్రలకలును సంహారము | అజ|

అ. ప్రజగంబులలేదునాటి ధీనుమీతా గుణభరితా | అజ|

మి. అజనంశంబునబుట్టెను | యశులనేత్రములు పెట్టెను
సుజనుండచు మిరుముట్టెను | సుందరాంగిచేట్టెను | అజ|

2. వేపంబులవల్లించెను | విష్ణు శిష్యులబూజించెను

బీజలసంక్షేపించెను పితృమాతల సేవించెను

మి. సాధువులంగలసిమోక్ష | నాథుని లారంభించెను

మోక్షమున శిష్యుల విద్యా | వైకుంఠ గావించెను | అజ|

గీ. అమరావతిలో వాకపరి యయ్యకోర్కె

వెనకల...లుచేర కావముకరిగి

నమ్మి నోకొక్క పూటాని నమ్మక ?

నోక చెవియిచ్చి వినిన నోకెక్కినదీయి !

వచ నమ్మి నోకొక్క పూటాని నమ్మక ?
నోక చెవియిచ్చి వినిన నోకెక్కినదీయి !

దీ పరికరానికి మారులు భయమున నొకటికే పుగిల్లి పో
నాటికి నోకొక్క పూటాని నమ్మక ?
నోక చెవియిచ్చి వినిన నోకెక్కినదీయి !

నమ్మక — నమ్మకము

వచ నమ్మి నోకొక్క పూటాని నమ్మక ?

నోక చెవియిచ్చి వినిన నోకెక్కినదీయి !

1 నీమలసంకల్పమున నీకేటిననుగూడుము

యోచింపకొనిక నాకు నున్నదన్నియున్నదేద ?

2 నామలసంకల్పమున నీకేటిననుగూడుము

యోచింపకొనిక నాకు నున్నదన్నియున్నదేద ?

3 అనుచుపొందెదవామీనీ కనియెనీచ

వచ్చినానిని వినునేనుభరగతిని

సీసేరితుచ నన్ను నీపేమనతిగ

నేలుదువెయన నతనిపై నిష్ఠమగుట !

వచ అంత నజామీలండా తెలికులాంగిన దారగా నవ్వనియందే వర్ణ
శాల నిర్మించుకొని కాపురంబాచరించుచుండె—

నీ కుసుమాస్త్రరేణురంగగోష్ఠీవ ర్తించుచుగూరువేదవిదుల సన్గోష్ఠిమాన
లలనామణీయాన రతినినుండుటనుదా భవ్యనాటక కలాపాఢిమాన
సతిచిత్తవృత్తిని సంచరించుటచేత దేవదేవాదులసేవమాన

అంగనాబద్ధచిత్రాబ్జుడైమెలగుట కులమతంబులతోలి తొలుతమాన

నీచకామిని సంపర్క నియతివలన

నీచవర్తన మలవడెనెత్తి పెట్టు

వచః కాపున చిత్తబోధియః కాన్త్యంను నాది యమయాతన్వాన్త్యంను
కామః పరిలుండన యమకింకరుల సహారానోమిన్వాన్త్యము. ఇవి
తంబంతయు వాచనకులంబుగాగిడిలి మృత్యువ్యాకంబుననుండి వా
రంబలందిన వాచనకులందలి వికుంఠ ముంకిరంబుచేసెనా ? అదియును
వారివలనిభిక్షినిగాక కుమారుల మునుతికేత క్షేలచే నిట్టివానికానై
కుంతములని నిషీననారామనగూతల్లెనని—

అంతరంగ — అంతరంగ

పా వారివామ స్మరణము విను. విభులకలును సంగళము ।హరి।

అ। దురితాత్ములైన చోక్క. పరిమలచిన మోక్షిరము ।హరి।

1 భక్తిచేర రక్షితు. పరిమలము. కెన

కక్షిచేన పుత్రిమితి. వారివామనుచియెన ।హరి।

2 పరిమలత కాలసింతి వానము మునరించిన

మృత్యువేను వారిమియెన మునరించుమోక్షిమియెన ।హరి।

వచః గానమింతిని విడిచిపోయిన వారలు మావలెతికతియూన మింతి

వారిము ముతినినికపుమనిన విష్ణుమాతలు యమకింకరుల దండింప

వారితినివిడిచి యమాలయంబునకేగి యంతికునకెడిగింప—

శా పౌరా యెంతిపింతివిష్ణువిభుల యానీమనై కుంతముక

జేరింకొంచుకుం దలంచుమిముకేశ్చించితే నారుడా

కారింబున్ విచిత్ర ముండునుమి ప్తమామిత్రీ నిభిన్న ప

ర్వారా తిష్ఠిస్తే యజామిళం గృహానాస్తంజనెక సంతటక।

మంజ—యిటలరుదెంచియు విష్ణుమాతలను హింసింపగబూనక

పటుశోకింబున వారునేగి యావాసుదేవునకు దెలుపక॥

వచః గరుడవాహనా మాఘుడై ముకుందుడరుదెంచి—

గీ। దండధర నీదుపాబిల్య మండనంబు

నాకుజూపెదె మరణంబునందువేళ

నన్నుస్మరియించెగాన నీకెన్నడిటకు

వచ్చుటకువీలుగాదు పోవచ్చునిక॥

అట్లు ముప్పు భాగ్యమును సంతకమునకు విడిచిపెట్టి
 పాపమును విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును
 విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి
 ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును
 విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి
 ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును
 విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి
 ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును విడిచిపెట్టి ముప్పును

[illegible]

ఉ ఆనానాయకాగి నకి యుగి నలుంకి కిటినుంకి యా

చాంద్రశేఖరశాస్త్రి గారు వ్రాసిన సరియైన సరియైన గురు:

అనంతరమును జరిగిన కార్యక్రమములను జూడవలెను.

ತಾಣಮು ಸಿಂಹದೊಡನೆ ಪಾಪವೆನಿಸಿದುದು

ಶ್ರೀ ಕಮಲಾಚಾರ್ಯರು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ

మొ.నా.గెల్. పుష్కలము

ನನಿಮುಂಗೆ ತಮ ನಾತನಾಳಿಗು.

వాయుస్థితి సమసాక్ష్యము.

కను దానిం దనవలెనుకొనితెచ్చును శ్రుతివ్యవహారం నాయునుభవించి
తత్ఫలముగ గన్పట్టెనును పూరితె—

౧. అష్టమశబ్దాశ్చైవశ్చైవ ధృమగ్రామో యాశించితలుగడునొప్పియుండె

బహుళిక మొండొకటి వాల్మీకిని పంపిస్తామన్నాడు. చూచుకంటే బులునల్పుతో చివలె

జఘనంబులనువయ్యెత్వొసలుచుండయ్యె జనులుమాడగ రాకవారిపోయె

నిర్దురమెండయ్య నిలుచుండలేకయ్య పింజీవంటలమడి మోడుగోరె

ನಾಡು: ೧೨೨ ಮೈ. ಚಕ್ಕುಲನಿಗೆ ತಿರುಪ್ಪ

శాస్త్ర విజ్ఞాన పాఠశాలకు విజ్ఞాన

తెలుగు రాష్ట్రాల్లో నీతికాండలకు అదుపు

అలసీరేమిటిమరిచితిగమున జన్మవమయ్యె:

మంజ—కొమరుగనియె నతిసుకుమారుని కొమలగాతుని చకికిక

సమమకు తేజమునెగువని జయజయ ధ్యాచుంబులులేగక :

వచ|| చిత్రోకేతుండు పుత్రోదయసంతసంబున భనకనకవస్తు వాహనంబు
లవసేసురులకుం దానంబులూచరించి క్షేమక్షేమముగా జాతికర్మనామ
కరణ అన్నపాశనాదు లలరించి శ్రేష్ఠముయితింబుగా పెండుచుండ,
కడమకాంతలందొకచోజేరి—

చాన్ద్రా—శ్రీపతి.

ప|| వింటిచేచెలులారా మన! విభవమనసు మారిపోయె విం||

అ|| తుంటవిత్తుబాకికటలు ! దుర్గింకుమనల కంటచూడదు విం||

మి|| తింటకాదిసవతియింట ! తాటలూడుకాక

వెంటబుడతనిడుకొని పు|| నిఘలించుకుంటున్నది వింటి||

2 బాలుడుద్భవింపకమును నునువెమితోడ మనల

నేలనిప్పుడా మగువయ్యె సేమిపాత్రమయ్యెజూడుడి

మి|| చాలుచాలువిభవిప్రేమ : సంగిహింపకున్నబ్రతుకు

తలజవ్వనంబదేల ! యేమొనర్తము యోచింపుడు వింటి||

చ|| అననొక చంచలాక్షియనె నాతనిప్రేమ గడింపనెంచునో

తనయనిచుపగావలె పృథాయతనంబుఫలంబులేదు యా

తనిమది వానికై సవతి దండవసించెను వాడులేమి య

వ్వనమునసించినట్టి సశిషుచను నిల్చునెఘామిపాలుడుక||

వచ|| అన యీచుకవిచారించి యెల్ల రండులకుసమ్మతించి విషంబుక్షీరం

బునంగల్పి యొసంగిన గోలి బాలుండు మృయందయ్యె నవ్వార్త

నాలించి కన్నతల్లి—

నాదవాచక్రియ.—త్రిశ్రగతి.

ప|| హామోహనాకార ! అకటామృతినందితివే హా||

అ|| ప్రేమవనధిమము ! వెల్పొయింతలో హా||

1 లేకలేకగల్గిన సుతుడీవని ! మాకన్నులనిను పెట్టిపెంచితిమి

ఆకాలుని కనుగుట్టెనెతనయా ! అవనిపైని యెటులుందును హా||

నీ కంఠశ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై నీ—

నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై

నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై

వచః అని విలసింపుచు నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై

నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై

మంజ—వచః పుత్రశ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై

వచః అని విలసింపుచు నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై
నీ కంఠ శ్శవాసమునకు నేటి లోయమిదై

నెను నెను కన్నవానియెడ నేనుత్పన్నుని పాతుడనైతి నా
కెన వెలసింపజేయ నుమ్మనాధికంపు నెలం గొల్లలే.

మ మునియెడ కెనంబునలకు నేనుల్ నన్నముల్ నేను యెం
డరిగొల్లం బుట్టినానా ధననానుండు నిత్తొనె పో
లికనా నాజ్ఞానంబుల కిచ్చెనుని నిచ్చెల్ల నన్నోక్ష నా
జ్ఞానమా లెంగన నాజ్ఞానంబులక యాత్మజ్ఞాని దుఃఖించుచే.

వచ లని మరచించిన నృపాలంబు కేకాంధకారింబును పుత్రజోధిత
జేమంబున ఛేదించుకొని నాననునకు ప్రవాసునాడరించి దేవా!
యింక నీనాజ్ఞానంబు లెట్లు పొరచింప సమారాధన చెరింపరిగింపు
చన నా కుండు—

—చననా—అనాకాశం.

ప పరినునావనము నుడిచిపొయింపు పారిచరనాధిపము నృపాలా
అ పరచెనాక్షము ప్రహరినుండుము! లెరియింపుముజపియించినన్నలత ప
1 సునివిరచేన్యము నరకొట్టెన్యము! వెరిగించెన నారాయణకవచము! ప
వచ" అని నారాయణ కవచంబును మంత్రిం బుపదేశించి సప్తరాత్రంబులు
జపించిన హరిదర్శనం బబ్బునని సురముని యరిగిన చిత్రకేతుండట్లు
జపించి నారాయణదర్శనంబంది హరివలన విద్యాధరాధి పత్యంబును
తలచినయెడ కరుగు శక్తియు వడసి సుఖంబుండెనంత—

మంజ—చిత్రకేతు నరిపాలుండొకడరి! రజితగిరి కన్ధినిరిగి
అత్తై, నేత్రుని దివ్యపాద ! కంజాతాళికి దగ నెరగి—

గీ' దేవమునులుగొల్ప దేవినివామార్థ
భాగనుండు నిల్పి బాయకున్న
శర్వుజూచి నృపతి చాలమిక్కుటముగ
నవ్వె నవ్వె హరున కివ్వెధనన!

కేవలగౌత—రూపం.

ప! ఏమిచోద్యమయ్యెశర్వ! యీనీ నడతనుగనగ! యేమి!

ని కామహునిశక్త్యేన కర్మం స్థూలచేదనోపాది యేమి!

మి: ప్రజ్ఞానం స్థూలకర్మం విషయకేంద్రం నూనెలిలో
నోమలినిని కౌగిలిచే నుభవకే నోకమాలకింక, చేమి!

2 ముగివానెత్త వట్టచేకి ముగివెడె కినినెడె
నగలే నూపనామిన్న నగలివి నెలచేషీయయే

మి: ఎగిదానామినిని నోనామిని యింతి—న
ముగి వట్టచేకి నీమిని, మునుల్వెలుల నైచికట! యే!

కిం అనికల్కు చిత్రకేయిని, గనిశాంధవికోపమూని కలుపాత్మయిటులో
చనుభవనిమాలనామిని నమికి తత్కలమురురాక్షసుడనైధరణికి!

వచ ఆది కేంద్రం శ్రీకృష్ణాంబు చిరుశివున నంగా నీశాంబునకు వెను
వరు నిన్ను మదిల కేసింపగలకేడ్తీ శ్రీహరి సమారాధనవలనం ఒడ
సితి. గాని జగన్మాతవగుట న్నాచిరిపడలంకను భవదీయ శాపం
బున రాక్షసుడనైపట్టియు పారిపదారాధనంబున ముక్తిగాంతునని
పల్కి యోగాన్నియం కుమికి మృశింగని తిష్టయను మునీంను
జాచరించు యోగాన్నియం వృత్తుడన రాక్షసా కారంబున
జనించి—

సీ! యొకపరిపామాణ నికరంబుచేబూని దేవలోకముమీద వివిరివిసరు
నొకపరిమునివాస ములునుగ్గనూచంబు గావించినేలలో గల్పివైచు
నొకపరియాగంబు లుచూలనముజేసి యగ్నికుండుంబుల నాల్పివైచు
నొకపరినిర్జర ప్రకరంబుహింసించి సురలోకమంతయు చూరగొనును

యిట్లు: వృత్తానుకుండు శాధించుచుండ
నిందుడిచెలుమ సురలోక మెడలిపడ్చు
గర్భకంకరులను మొక్కి గావ్రమనుచు
ప్రాణనెలచేచి వారలు పల్కిరిలులు!

మంజ—వృత్తానుకు ముడింపగల్గు: నవిధమెరుంగరాదు
ధాతీధప్తుడు విష్ణునికడకిక, దరలుచు మనపనిగాదు.

వచః కల విష్ణుగోకంబులకేగి వృత్తానుబంధము వాచరించు మునితములు చెరి
గిరి వృత్తములు మునునొక్కటియే.

చు జలదళవాన్వినాయమున దగ్ధమునందు సమస్తభోగ భం
గిలె విడిచిచి నెల్లకము ధోరణినాంతమునం దగ్గచి నా
విలసతి నాముః క్కడు తమిళుడు నాతనివెన్నుపూస ప్పి
విలునకుదాచ్చి బాఁగితి వేదనవృత్తు డడంగువాసనా!

వచః బ్రహ్మచార్యా పాతికంబునకై నెనుకావేన వృత్తానుబంధము వేరొ
కింట వాతుండుగాడు వాకు వరమభిస్తుడు దగ్గచియు నట్టివాడే
భిస్తుడు భిస్తునివల్లనే నెరిపవలయు నెల్లన నినుము నినుమువల్లనే
కథంపటమని యంతి ధామ్యుని విచారము-
గావ్యము—హరిః.

ప॥ ఏమిదేతునాదగ్గచి నెల్లకంపునాడును నే! నేమి!

అ॥ యీమహా వృత్తానుబంధము కివితప్పక నరిపులేది! కేమి!

1 కులమునవిప్పుడు ఘను! మజ్జలతివశ్యక్తియుతుడు
జలజాక్షుని భిక్తుడెట్లు! చంపుదుగితి వేరులేది! కేమి!

గీ॥ పాపమునగుజంకి వాని చంపకయున్న
వృత్తుడెట్లుచచ్చు వృద్ధిజనులు
సుఖమునందుటెట్లు చూడగాద్వింద్వ సం
కటముదోచెనాకు గతియి కేమి!

వచ॥ అని విచారించి వేరొండుమార్గంబులేమి-భిధిచిహానిందరిసి పాంజ
లియై,దేవా! తిమవలన ముల్లోకంబులు సుఖంపగల తరుణం బడుడెం
చినదన. నతండు మహేంద్రా ముల్లోకంబుల కధిపతివగు నీవర్ధివై
వచ్చిన కొదువేమి—

గీ॥ కోరుమెద్దానివాంఛించి చేరితిటకు
నాగ నిందుడు వృత్తానుబంధమునము
తనకువిష్ణుం డెరుంగజేసినవిధంబు
తానరుగుడెంచు విధము నాతనికిదెల్పు!

వచః కలివిదివిద్యోగం, వాక్యాత్మకం నీరసానందము లింతపుష్కలప్రదంబు.

మంజు—నన్ను మనోనిరసానందము వాకెన్నెమునింజొంచు

నన్ను మనోనిరసానందము నన్నెన్నెమునింజొంచు.

గీ. కలివిదివిద్యోగం నీరసానందము

నీరసానందమునింజొంచు

నీరసానందమునింజొంచు

నీరసానందమునింజొంచు

వచః కలివిదివిద్యోగం, వాక్యాత్మకం నీరసానందము లింతపుష్కలప్రదంబు.

మంజు—నన్ను మనోనిరసానందము వాకెన్నెమునింజొంచు

నన్ను మనోనిరసానందము నన్నెన్నెమునింజొంచు.

మంజు—నన్ను మనోనిరసానందము వాకెన్నెమునింజొంచు

నన్ను మనోనిరసానందము నన్నెన్నెమునింజొంచు.

గీ. కలివిదివిద్యోగం నీరసానందము

నీరసానందమునింజొంచు

నీరసానందమునింజొంచు

నీరసానందమునింజొంచు

నీరసానందమునింజొంచు

నీరసానందమునింజొంచు

మంజు—నన్ను మనోనిరసానందము వాకెన్నెమునింజొంచు

నన్ను మనోనిరసానందము నన్నెన్నెమునింజొంచు.

వచః కలివిదివిద్యోగం, వాక్యాత్మకం నీరసానందము లింతపుష్కలప్రదంబు.

మంజు—నన్ను మనోనిరసానందము వాకెన్నెమునింజొంచు

నన్ను మనోనిరసానందము నన్నెన్నెమునింజొంచు.

గీ. కలివిదివిద్యోగం నీరసానందము

నీరసానందమునింజొంచు

నీరసానందమునింజొంచు

తచ మానవభోజంబున వాసి నాపురుషేలు చంద్రవంశ వర్ణచండగు
నవాసంజోక్తునిండు సకల సర్వశాకయము చతుష్వేద పథయందు
పర్యంత్ర నిమగ్నయందు హితము పఠుండు తొంబవత్వైదివర్షము
లాపరించు వాడులందుండు ముల్లోకంబులన్ని ప్రపదవీక్ష్యంబును
మంజ—కొరతచివ్వి చొరక దన్నులఁగలముం గూడయూతినికొసంగి

సురపరిక్షేయద మనుచున్దిదలు జూచినానికి పరిగి

వచ స్వస్థంబునకుజేర్చి తత్ఫలంబునిం గని చిరంత చింతామః రత్నపీఠం
బును కేర్చుటకు సైన్యము ముగారున్నదివెచ్చి యతిని నందునిచి
మోయుచుండు నుం గనిండు-

చ సురపరిక్షేతి నాద్రక్షిధ మూషదళంబు దలంచి కీకముం
దిరమును సత్వహిమియ నెంచుచుండుల సర్వసర్వముం
చుచు చగస్యనూనని యొగిడి మొప్పగి దిండినం బొన
ర్పరుడను యమ్మగి నెడు నృపాలశిషిచెను నర్పహువుగా

వచ! నహంషుండు మెచి యతినిపాదంబులంబడి ప్రార్థింప నాశాపం
బమోఘంబు అయిన నిండుక కరుణజనించినది నీవొక సర్పాకారం
బున హిమాలయ ప్రాంతంబున చరించుచుండుము. యీద్వాపర యు
గాంతకాలంబున పాండురాజనందినులు దాయూదద్వేష ఫలితులుగా
పండ్రొకపంపురుంబులు వనవాసంబాచరించుట కందరు దేర ధర్మజ
దన్ధిన సుభాషణమాత్రంబున నీశాపంబు దీరున నతం డిట్లనయై వన
వాసకాలంబున మీధీమసేనుంబబ్బుకొన ధర్మజం డితనిశాపంబుదీర్చె
నంత బృహస్పతి యింక్రునిపాపంబును నాల్గుభాగంబులు గావించి
యొకటి నీటియందును, వేరొకటి వృక్షంబులయందును, మరొకటి
యగ్నియందును, యింకొకటి స్త్రీలయందునుచె. తత్ఫలంబుగా నీటికి
నాచును, వృక్షంబులకు బాకయును, అగ్నికి సివురును, స్త్రీలకుఋతు
మణి యగుటయు గలిగె. నంత పాపవిమోచనంజై మహిమంబు
ముల్లోకాధిపతియయ్యె. నిది శ్రీమహాభాగవతంబునఁపఱుగ్గంధము.

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.



శ్రీమద్భగవద్గీతా
అష్టాధ్యాయము

శ్రీ కృష్ణ భాగవతము.

(హరిః ఓం) సప్తమ స్కంధము

—:—

రీ. పోర్టుచి చిత్రము.

వచ! మున్ను నానిమంది ద్వారాచాలకుల జనువిడిములు సనకసనంద
నాకు లొసంగిన శాపంబు కఠంబున దితిగన్గంబున హిరణ్య కశ్యప
హిరణ్యశూలై జనించిరిగదా- అందున చిరులివాడగు హిరణ్య
శూని శ్రీవారి య్భివరాహనూపంబున వధించెనని పరీక్షి దూభిపా
లా వింటివిగదా. ఆతని యగ్రజుండగు కనక కశ్యపుని త్రిమారి నర
సింహవతారంబున వధించెన - పరీక్షిన్మహారాజు శుకయోగికి
యిట్లనియె—

మంజ—యేవిధమున నా కనకకశ్యపుని హింసించెను యానృచారి
దేవానామది కౌతూహలమయె డీచిబెప్పుడడవారి.

తే! గీ ఆనుడు శుకహారి విరుమిక నట్లెయ్యుచు
హరినిప్రార్థించి వ్యాసుని నాత్మిదలచి
పాండుమత్సరగణికి నిల్లు పల్కెకనక
కశ్యపుడు సోదరుని చావుకైగడసరి?

వచ! సభాకంగంబురాచ్చి మంతులంగంచి యిట్లనియె!

కన్నడవర్ణన—తృప్తము.

ప! వింటిదే ముహూర్తారా! వింటి!

అ తుంటరినూ సేరికివండ ! తోడుబాహులొనరించినవని, వింటి!

1 నాతమ్మునతోడి పుది ! భాతీకుంకల వృక్షపును
పాతీకుంకల మోసుంబున ! పరిమాణ్యేనంట మీను : వింటి!

2 నాచుట్టల పైకుగిడె నీమీ ! మాధిపుంకల క్రొవ్వకచేర
సాధించెన బాధించెన ! చుడితిసము చవిచూపెన : వింటి!

మ ! జలహతాక్షుని చంపకున్నదికి మీసంహ విధింగూర్చి కా
నలలో ఘోరతపంబొనర్చి వరముకొనె కొంచు నేరెంతు మీ
రలు నారాజ్య కమన్వితోధులరు చేరక సేక నేనున్న య
ట్టలె పాలింపును మత్సికీమనోని మామండెల్ల సౌఖ్యంబులక !

తే ! గీ ! అనుచుమంతుల నియమించి యుడిచివచ్చి

యొకట నాహారనానాబు లుడిగెను

నాంశ్రీ యంగుష్ఠమున్నేల యుండుమోపి

యూర్ధ్వకాయంబునై తిలంబుండెనధిప !

మంజ—ఇట్లుకనక కశ్యపుడు తపంబున కేగినవిధమెరిగి

గట్లవెరి తనపగనాధింపగ గడగిసేవతో బరగి.

వచ ! అమరాలయంబు సమీపించి భీకర కడనంబున కనకకశ్యపు మం
త్రులుగాఁగించి నుగ్గాడి సురలచే లగ్గలబట్టించి నాంబు న్వాధీనపర
చుకొని పరమపతివ్రతయు నిండుగర్భిణియు పతి విరహితా కుల
మానసయు నగు లీలావతీదేవి యంతిపురంబు వృందన-

కం ! ఆలీలావతినిద్దుర ! లోలతనుండంగమూడు లోకంబుల వే

పాలించునిమ్మడ మెను ! కేలంగొని యెత్తించియెక్కవణుండగుచుక !

మంజ—పాపభయంబది దలగిస్వర్గమునకై పోవగనడుదానిక

ఆపెమేలుకని తనయవ స్తగని యనెనిట్లు బలారిక !

కోకలము—హాపకం.

ప ! వేలనన్నుబట్టితివో ! యిమ్మడ నీకేమిఘోషము ! యేల !

అ ! గోలను గర్భిణినిసతిని ! క్రూరత్వము జూపగనిటు ! లేల !

మి. : అతడు ముందుగానే కొందఱు కైదుకొనినాడు
వానిచున్నప్పుడుకొని నదిలుగూని దియజూపుము ? యే॥

2 మూడికి నది నవాదని హింసకుకొని పుడిపుడ
నాకిము కష్టముకొనినను నానిము గావింప నెనురి

మి. : లోకములుగావంపడ నానీయింతుకదా
నీకొనుకు నూకనన్ను : నిలయించుచేసియుదయ నేల॥

తే. నీ అననిండుగిడు చూచి యతడు మమ్ము

పెట్టికట్టి కట్టులలో విధిచేసి

కొంటి నెలావుకొన్న నీకొంటికిదు

తలపుగలుగు మమ్ము మన్నిలయమునకు—

మి. : అనుచున్నందును బట్టికట్టెడ కరంబుమానిలాగంగ న
వ్వనితారత్నము వేదనాధరము కోవావేముంగూడ నె
ట్టనదూషింపుచు వేరెలుంగున కృపాలంకార వ్రాణేశ రా
వె ననుభ్రావవె వీనుడుడగముల స్వీక్షించి శిక్షింపవే॥

వచ. : అని వాపోవుచుండ తిలోక గమనుడుగు నారదన్ని వారిని
సమీపించి-

మహాంశి—చతురశ్రాంతి

వ. : కూడదిట్టలోకకాఁగి నీవేది నతులబట్టులేడ చాలాలో॥ కూడ॥

అ॥ చూడగర్భవతి యీతలోదరి॥ వీడువావభయములేదేనీకిక॥ కూ॥

1 మూడులోకములు యేలుదంటవిటు॥ మోహపాశబద్ధత వర్తించిన
కీడునెందవే ధర్మమేది యీ॥ కీల్గంటిని విడు నావచనమువిని॥ కూడ॥

వచ. : అనిన యిందుండీల్గనియె-

చ॥ మునివర యీచుధాధని మోహమునం జెరబట్టలేదు యీ
వనిత మహానాదరంబున ధృవంబుగ వెల్లు హిరణ్య కశ్యపుం
డను దనుకెనుచాత్మజుడు నన్నిలివాడు జనించువాక పా
వనియగు నీతలోదరిని బుధితగా నొసరింతువంటిచే॥

నచి అనల నాకుసూరునినిధించి యాయమును విడతునన మహేంద్రా
యాయము గర్భస్తుండున బాలునే చంప నెంచితివా. అతండు -

సీ॥ సకలభూతంబులనొకభంగితనవోలె నమహితంబగుప్రేమ జరుపువాడు
పెద్దలగాంచిన వివయంబునంజాసి సుహృదలనుజేయు చుండువాడు
పరికాంతలంగన్న భానింబుతోమాత్రు హుంబుగాభక్తి జూపువాడు
అర్థులగుగొన్న నదిప్రేమపుత్రుల గతివారికోర్కెలు గడపువాడు

నోదరులభంగి సభులను చూచునాడు

మానసంబున పాదభక్తి నూచునాడు

సకలసద్గుణజాలముల్ వికటియును

నలరియశేమందు గలదు ప్రస్థానమెవగ॥

మంజు—అతినికతమున కిదినికలపుడు నాతుడగు నిదినికక్రంబు

యీతనినిదిడుగునిన కిదినిక యిబులనె గిసియనుమానంబు॥

వచ॥ అయ్యా కుమారునికలింబున ముహూర్తవిజయుండును, విధాత వరం
బుల గినున్నవాడెను, నగు హిరణ్యకిశ్కపుండుంతులెంచునే యిట్టి
కట్టుకధి లెందైనగలవే యన నారిదుండ్లిట్లునియె॥

తే॥ గోత్రము వారిభక్తుడతని కిదిరుచింప

దుడుగుముచి నివారించునొప్పకున్న

ప్రారిహింసలపాల్గేయు కుధరధరుడు

భక్తునింగాన నాతిని ముక్తిపరచు॥

వచ॥ అనియొగించిన యింద్రుండు లీలావతిస్వీడి సురలోకంబున కరిగె
నంత నారగుండు లీలావతిం దన పర్వతాలకుం గొనిచని యామెచే
నారాయణ కథాసుధారసంబు గోలించుచు-

వశోజు—త్రిశ్రగతి.

ప॥ హరిచరితము॥ పరమపావనము॥ శ్రీహరి॥

అ॥ మరితాటవి భీకరకుకారము॥ వారి॥

1. జననమరణ దాయణహరణము మా

ననీయముగు మహిమాస్పదము॥ వారి॥

2 సురలచేతనైన కన్నులచేతనైన

నరగరుడో రుభేదర నాధిపులచేతనైన

మి॥ హరికరి భల్లుక న్యామ్రం బాసిమృగామలచేత

మృశస్త్రాస్త్రంబుల కరవాలాబున ముడిపడితి కరు॥

3. గాలినలన వహ్నివలన॥ ఘనపిడుగుల వర్షమునను

లేలైనను పగలైనను॥ పృథివీనైన నభమునైన

మి॥ నాలోగిటనైనను బయటన్నైనను చీకటిని

విలగుతేజంబున మృత్యుయేలేనటు నరమమ్మిక॥ కరు॥

తే॥ గీ॥ అనుచుగోరు హిరణ్య కశ్యపునకనియె

దనుజనాయక తొల్లి యేఘుచులునిట్టి

ఘోరతపమున మెప్పించి గోదావరి

వరమాలను సరినిత్తు నిభక్తికితెచి॥

వచ॥ మరగద్వింబున కన్నుగానక పంచరంగ న్యామమాగ్ధాను గామివై
వర్తింపుమని వినించి యంతిత్తుడయ్యె. నంత హిరణ్యకశ్యపుండు
నిజపురంబుచేరి మంత్రులవలన దేవేంద్రుడొచ్చిచరించిన యకార్యం
బాలించి-

మ॥ భభిరాయెంతటి ఘోరకార్యమును యాచాకారిగావించె మ

ద్బలదర్పంబులు జ్ఞప్తిలేవె బ్రదుకన్వాంఛిపడే లెండు య

త్తులు వన్మత్తులుశాతఖడ్గమున దుగ్గింతున్నేడే ముల్లోకముల్

విలసత్సౌర్య పరాక్రమకృమమునకా వేచాలనంజేసెనక॥

వచ॥ లెండని మంత్రుల నేనలంగొని సురపురంబుపై దాడివెడలిన॥

సీ॥ యింద్రునిబలమెల్ల సంద్రవాసంబుండె వీతిహూత్రంహోడి భీతిబారె

సంయమినీశుండుశరణొనర్చితొలంగె వరుణుండుజలమున పాశముంచె

పవనుండుమూలంబుడిపారిపోయెను యక్షేశుబలముయలక్ష్మమయ్యె

యీశానుడేమియు నెరుగకగిరిదాగె గంధర్వులవనిపై గానరారు

మునులు మోరవనంబులం దునికిగనిరి

మానవతులు బ్రదుకును మానవలసె

కనకాక్షుడు కనిపించినాడు. ఇ
ప్పుడుగా నన్ను చూచి బాధపడితి.

వచ్చి ఇంక చూచి చూచి మూలమునుండి విజయగంధుల కరువెం
దిగి నన్ను కనిపించి నానిమిత్తము సుతియుక్తి లీలావతిం
గొలిచెను.

నీ పురుషుని ప్రతిమనుకొని
దివిజనామల తిలకమున
గొంతునకునుండి గాంచి నానినాని
నుండి గాచినాడు నిండియుచు

మంజు—నానినకు నీ చూచి యీ బాలకుని కన్నుల గదియే
యేలుకొనుము నిన్ను గురించి నున్న నీయందుక నవియే?

వచ. హిరణ్యకశ్యపుడు నానినకు ననుష్ఠించి యుచిత సత్కారం
బుల దన్నిన పురిచించి యమ్ముచియుచు. సంత దాన మేమిచ్చును బా
లుని మెత్తి ముద్దాడి.

మామ—అప్పుడు.

ప: కన్నతండ్రియైన నన్ను చూచి నా కన్ను
లు పున్నునుచుకలమును బోగొట్టెను కన్ను.

1. గురుపద సేవా దికి ముసల్గును

సరవిశాస్త్ర కావ్యాభిరుచులగు కన్ను.

మ: ననుగన్నయ్య యటంచు శుక్రసుతు చెదామాయులంజో భ
క్తివిబాజించి కృతస్థానము సుతుకృష్ణింగులు శాస్త్రార్థ వే
దునొనర్చుండని యప్పగింప నతడెంతో సంతసంబుది బా
లుని కేలంది బిచ్చి కేతనము కామాక్షి భవాకాంక్షయై.

వచ: ఇట్లు ప్రహరముని గొనిచని శాస్త్రపురాణాది వాగ్దేవత లెరింగింపు
యిడి సంతసం స్వయము నెరింగి యన్నిట నామృతంబు చెప్పంబడు పర
మాత్మయందు ద్విగుణకృత భక్తి యస్మింకృతయందుండె యాంబెనంత
కొంతకాలము గలింప.

సీ. నరుడకడనున్న మును తనయుకేను
చగునకొనలించి కోనాని చదివెతిల
మీము మెగుగుగోలి నామ్రానుగాని
తనయుడెన్నుని కొనిసేనకునికీ బెచ్చ

వచనముచిరిగి చండామూర్ఖుల సహితంబుగా బాబునిగొనిరాగ దను
జేసిం దెరుగుచని కుమారునెత్తుకొని మున్నాడి అంకతలంబున విల్పి
యగునె.

ఉ విద్యులనేర్చుకోనగి వెక్కుడినంబులు నెల్లె గురువు లే
మృగధిపురాణశాస్త్రములు నెన్నిదెచ్చెనో వానియందుమేల్
కన్నముకండువాకొనుచు భావమువెల్లడి చేయుచున్నవో
నెన్నియుగాని తప్పితిభరి నెన్నియెంతవ వెక్కులేటికికొ.

నచ. అనిన ప్రాంతములకిచ్చెనె.

వివాదము—మూలము.

ప. చదివించితి ననుగురువులు : చదివితీ ధర్మాభిన్నెల్ల : చది
అ. మొదల శ్రీహరినామా : మృతిమేఘునమనినమ్మితి॥ చది
మి. నుదితులు ధనభాగంబులు : మదినమ్మి నభోగతిబడి
పదిరులు శ్రేయమె శ్రీహరి పాదంబులె గతిగానను : చది
2 సంసారమునిన్నారము : శాస్త్రంబులు మదిచెరచును
హివాకర మీదేహము : స్వీసంబగు శౌర్యముగన
మి. హంసగనుచు జనకునిమది : యందునమ్మి కొల్చినముని
హంసలగని హరిదలంచి : యధికమోక్షముంగొనుమని : చది॥
గీ. అనుచువచ్చియుచు పంక్లను నంకతలము
నుండి బడవొచ్చి యీబుద్ధి నొండుగూర్చి
వట్టిదెవ్వరు నీచుడా హరినిగొలిచి
నాకు కోపంబుగల్పింప బోకుమెప్పుడు॥

సీ. అబ్బాడుగనలేని యక్షద్యమంజేల హరికడకరుగని యంఘ్రిలే
నభవుపూజింపని హస్తాల లవియేల శ్రీహరిందలదని చిత్తమేల

విష్ణువానినిచేరి నీచుఁబోయి ప్రసంగించి పలుకుతేల
శ్రీకృష్ణునియొద్దఁ జరిమాని నీకల శ్రీకృష్ణునిఁజల వేవమేల
కనులవానిఁ జూచి నీచుఁబోయి
వేదవంశుఁడగు నీచుఁబోయి
దానినిచేరిమిమిదలైతి తిరిగివేయి
నీచుఁబోయిమిమిదలైతి తిరిగివేయి

వచఁ అని వచియించి కవికినొప్పుండు నకొప్పుండు గురువులంగని
క విష్ణులచేర్చి నాచుల వివేకులచేయుదువంచు నన్నిసం
వత్తిధివంబులొనగి నాకలగర్భుల చేయఁబుగ
రొప్పుదును మో వెల్లిదండ్రుల నొప్పుదును వివాకమునవై
వ్యాధ్యపురాణములొప్పుదీ లక్షిష్టంబులొప్పు నుతంజచేర్చుదే
వచఁ అని చూచువానియొప్పుదే

నానికే—నూరిం.

క. తిష్ఠలేదుమావలనఁ బ్రెత్తినాథ త్తరుయిపుము! తప్పా!
ల. చెప్పముని తిరుయనకేల. శ్రీనివాసుని గొల్వవరుచు! తప్పా!
1 మితులము పునోహితలము! పాత్రులము భర్తపులము
కెతులమేయిలచేయగి. నర్వివా కేవేకులము! తప్పా!
గీ. మరలగొనిచని నాచకు మంచిబు
నానిగావించి తెత్తుము చనివునొయి
యిట్లుమిమిదలైతి తినివచ్చునట్లుచెప్పి
పాత్రనాచకుగొనిచని బాలుగాంచి।

మంజ—నూచెప్పించయటు లుచ్చరింపకను; మానవుచెప్పెదవె
నీచదువంతయు నెందరిగెను మము! నిందింపగచేయుదువె.

వచఁ అనిదండించి కొన్ని తెరంగుల బోధించిరి వారు లేనపుడు ప్రహ్లా
దుండు బానిసంజేర్చుకొని అన్నలారా! అత్తిరంబగు నీ శరీరభ్రాంతి
వదలి నీచు నాకే రమానవు భజించుచే జన్మతారకంబుగాని మన
గురుని లుచుబోషకానకే దానవాక్యమునకు బోషి చెడుబోధగా

మించెను. నాచెక్కున దాచింపుడు. మనకు తలదగ్గదాదా లెందరో
 యీవరకు గతింపిరి. మన మిచ్చిదగ్గము లెత్తికొమ్మో యిక నెన్ని
 యెత్తవలయునో, సంతానాగరింబున దరిగానక పుట్టుచు గట్టుచుం
 డుటకాని పరమాత్మలు భజించి తపించి పున్నెన్నె హిత నాలోక్యం
 బందుట సులభంబైనను ప్రహంసజాలక మూఢబావంబున చరింప
 నేల. శ్రీరమాక్షిసంభవించి కడతేరుడ మని నాచిదోక్తమాగ్ధంబున
 వారిల నందర భక్తితులుగావించి వారితోగిలసి సుకీర్తన సర్త
 నానకం బాచరింపుచుండు గురువులకుదెంచి విభాగితులై దండించి
 యిక నీతినిమాన్గింబడికట్ట నాపలనగానని ప్రహ్లాదుని గొనిచని హేమ
 కశ్యపుంజూచి.

మంజు—అసురవర్షి బాంబులందర కిదికీ హరిభక్తిబోధించి

పసురులగావించె నివ్వెన్చో! పలువిధములనాధించి

2 హరిభక్తి విషనాడచెయుమా! కలవిగాదనుచు నతకు

యరిగిన కనకకశ్యపుండు కడు కోరి; ధాక్షిణ్యగుచు దుగ్ధముడు!

శ్రీని—చతుశ్శ్రితి.

ప॥ అద్దర నాయకులకు నావారి! దలచెదవా తులువ! అద్ది!

అ॥ బుద్ధిలేద యాపారుబోతు వినుతుడానీకు! అద్ది!

1 పందిరూపమూనినాను! భౌతజంపునతిడా ఖలు

డెందుజేరె నేవెదకిన! నెంచెనంగానరాదు! అద్ది!

2 అతనిదలచెదేనిన్ను! హతుమొనరించెదజూడుము

నుతుడనిదయజూడవతడు! చోరుడు కూర్మిడు దూరుడు! అద్ది!

వచ॥ అనిన ప్రహ్లాదుం డాతనికిట్లనియె. జనకా హరిని నిందింప దగునా-

నీ! అతనిపాదమెసుమా పతితపావనదివ్య జననతగౌరవీ జన్మభూమి

అతనిపక్షమెసుమా శతదివాకరదీప్తి రాజులు శ్రీవత్సరంజితంబు

అతనిబాణమెసుమా కిణిజమహావాన్నత పర్వతఖండన వజ్రతుల్య

మతనిహస్తమెసుమా క్షితిసర్వదీన రక్షాదక్ష దివ్యదీక్షాకరంబు

అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు

వచ్చి అస విది హేమశక్తిపుం హరా? యితంకు దండనంబును గాని
చిహ్నముల విది తెలియి-

మొదట—అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు

2 యెందులోను తనకున్నది... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు

3 అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు

4 అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు
అదిగో నోరు... అదిగో నోరు... అదిగో నోరు

అదిగో నోరు... అదిగో నోరు...

ప' ఏమిసేతు నిబాలకు : డెట్లు వసుదనునాకు యేమి?

అ' యేమోనాధలు పెట్టితి : యిందు కేని గంధకతిరు : వేమి?

మి : నామజంబులచేమోక్కగ : నల్పితిగుడియలమోదితి
పాములగిరికించితిని : నేమిసరుమిరనింపడు : యేమి?

2 శూలములందరునాలు : స్రుక్కగి దేహమునొడువగ
బాలకుండు భువిబడడు : పాదమడిక్కులకైతను

మి : వాలింపుము విష్ణుభక్తి : వదలితినిపాదంబుల
శాలమునొడిగి మొక్క : పిపాయము గనదేమికతము?

వచ అది చింత... ఏనితోడి విరోధంబుకలన తనకు మృత్యువు తప్పక
సిద్ధిమనని నిశ్చయించుకొని శత్రుహననదక్షుండై బాలకునికిట్లనియె:

మంజ — నానోడంబు భావలూకెదపు నాకన్ననుమరిదేవుండు
సూక్ష్మత్రేకక కేడికొక్కడు. హాంకొక్కచుండు

2 నాతమ్ముల జంపిన గతివిని యానా రాయణుకొరకరయన్
గోతిన్వోహులొనలేడు. నాడెండుండును చెపురా తెలెయన్

ఎచోటిని హాంకొరిచిన ప్రక్కదుండు బాలనర్తనంబున నర్తనం బాచరిం
చుచు యుండు

కోతిన్వోహులొనలేడు.

పా. ఇందుగలంబును లేకవి. నుదేహమువలకుఁతుండి. యిందు

పా. యెందెందరినీనశ్చిహా. యిందెందరినీనజము. యిందు

మి. బృందావతికి నేర్పించుచు. పూజితిహామంబు సుజనా
నందితుండు క్రీలక్ష్మి నామంబు భక్తాచరుండు. యిందు

2 కలహంబునగాలిగలదు. గలహంబున మున మునిని
గలహంబున దిశలపడ్డిని. కాంతునయెడ సోమునిలో

మి. కలహంబున నొకరిము. గలహంబున మున మునిని
కలహంబున నొకరిము వెనుకం. గానలను నీనాయెడ. యిందు

మంజ — డింభకనస్వస్థలములయందున. సంభోరుహనేత్రుండు
విస్థంభంబున గలదేని చూపుమి. స్తంభంబుననీయండు

మ. అనికాదాకృతి నల్లహంసమున చైత్యాశీశుశాస్త్రాన మం
దున స్తంభంబుచువాసి ఓక్షణకరంబునాచి నీదేవునిం
దున చూపింపవయేని నీశిరిము మన్దోశ్చక్రేచ్ఛెదించు మా
నవలంబునవిడి వ్రేసెదేన నరగంధరుల్ భయంబునగక

మంజ — దంభంబున నాకనకకశ్యపును. తాడించినలోహన్
స్తంభంబున శ్రీహరివరకేసరి రూపంబునవెడలెన్

సీ. గంభీరభీకర గర్జారంబున బ్రహ్మాండభాండ కర్పరమువగుల
చలులనడచుచు చలనసంజాతి ప్రచంపతాతావారికొండలగము
కాలానలాగేల కీలాభజహ్వ ప్రభావభింజగమెల్ల చేపురిప
తరణేందుభాను ద్వైతపథిచ్చాసులుయెలనుకున్న బసువెన్నెలలుగాను

సీ కరము లురమును నెరచుచును మమాక్షి నాకెం క్రిందిగాగంబుననుని
నాల్గి యలది నరసిహరిపున యుచునుచ నా క్రిత పదాయ
నుండు భక్తాచరుః

గీ! యెన్నుకొలకు ప్రకృతమోహిని నింట్టెక్కి ధీకీ క్రికి వరుడనాడు
నేత్రములు యుంధితిగిని నెదిరియిడిల | కృష్ణచరితము దాదితి
కృష్ణచరితము

మ చరితములు చరితములను మోహినియై నా దాన్తి నమయి ధీ
కర చీల న్నుఖముగదిలియనిన ప్రకృత చేతి హంసించి కా
దారవావేతి శాంతినిద మిడుచేంద్రాదత్ మహాగీతిని
దివి ముచాక నతికరుణాకలితు హంసించు కేయంగిదే.

వచ! అది పండిత రిమాదేలియూదెంచి నెనుహమూ క్రిందిగాంచి-

సీ! ప్రళయప్రభాకరునిదినున్నదిగాని పూర్ణచంద్రునానుమమోముగాను
జ్వలనుధీకతులునా వెలయుచున్నదిగాని చూపుప్రసన్న భాసురముగాను
భయదరావ్రావేత పుతగన్నులుగాని కరుణారసన్నుని గానరాదు
భీనుదంప్త్రాయితాభీల నిక్తముగాని చిరునవ్వుయిండుక నెరయరాదు
కట్టిహంసమును న్నెన్న దేలివిన్న యదిముకన్నులజూచినయదియుగాను
యిపుడుదగ్గరాల శాంతియినెరుక | నత్తుననిద్రాగిదేవి ర త్రిందెని.

వచ! అంత కమలాసవ, కుకరి, దేవేక, ఋషి, కిత్తిదేవత, సిద్ధ, సాధ్య
విద్యాపిత భుజంగ ముచగంధర్వ చారణయక్షకిన్నరికింపురుషవైతాళి
కాదులు నుహరింప్రార్థించి నిరాశులైన ప్రహ్లాదుం డిమ్మరారింగని-

గీ! భీమశాకారి నుహరి భీమహంస! మునకు భయపడువాడనే వినుము
ఘోర! మాయమయమగుసంసార మహిమకేరు | జడియుదే గాని
నీవింక శాంతిగచును

వచ! అంత క్రిందా ప్రసన్నుండై ప్రహ్లాదునకు వరంబులనొసంగి అంతర్ధా
నుండియెరిగి పక్షిమృగాచలునకు శుకయోగీండు జరిగించిన నిది
శ్రీమహాభాగవతమునకు రత్నప్రాయంబగు సప్తమస్కంధము.

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.



ప్రతిభా—అక్షరములు.
శ్రీ లక్ష్మణాచార్యము.

శ్రీ కృష్ణ ఛాగవతము.

(హరికథ) అష్టమ స్కంధము

—(3)—

గ. ముద్రాపాతము.

గీ. ధర్మనాథవిను సుధానాథుని భాక
వచ్చితి బుచ్చితి నీతియు
మగుచుడిచుచి వ్యమగు నెలయేదల
కిన్నరాభిలయ మున్నగుంబు!

వచ మెడియు నమ్మహాధరింబు మాతులుంగ లవంగలుంగ చూతకేతకీ
మందార భిల్లాతి కామ్రూతక సరళపనస బదనీనకుళ మందారజంబీర
వనాల కుండకురువ కికురింబక కోవిదారి నానికే ఖిన్నార జంబు
మొదలగు నానావిధ వృక్షసమూహ సంయుతంబును తుహినకర
కాంత వజ్రవైషాన్య నీలగోషేధిక పువ్వరాగ మనోహర కనక
కలఘాత శిఖరింబును గంధగజగవయ గండధేరుండ ఖడ్గకంఠీరవ శర
భశాస్త్రాల శశచమర శల్యభల్లూక సారంగ వృకవరాహ మహిష
మర్కట మహేశ్వరగ మార్జాలాది మృగసంకుల సందంభ సంయు
తంబును నై వెలయునదాన-

మంజ—కరీణీసంఘము నాఘుడై । యొకగజరాజం దలగారుక
వరబలసాహాయ్యంబున । వనమృగవర్గంబును దగమిారుక

1 అన్యోన్యమునఁ బడవత్తుటాదనకల
 గలమునముగిగిడి నిరూపానములను
 పొంకొక్కానాగమున పడవమున్నవాడ
 కాంచీ వనగమ్మగిరియల కడలకాది

సీ: పులులనమూహించు చువలలోపలమాకె భల్లూకములు గుహాపటల

గాలియలలోపానముదాకకొట్టులు అడవి పెందోపారెహరిణచయము
 మహాచూపూపైలయగువలవిరబారె గంధగిరిలబాకెకపికులము
 వనభుజంగింబులువెక్కికములమాకె నింగికినెగినెడు నెమిళ్లలెల్ల

ఇట్లునర్పజంతులెంతో భయంబున

గెజచయంబు కొలనుకాంచి త్తిష్ఠు

చెలి కీడికాత్తిలై త్తిరుంబులు

మునిగి త్రావి ప్రేమ పొందుకాంచి

హాకంబు—చతు:శ్లోకం.

ప: జలములదిగి గజములుకడు కలకలంబు కాచివెను జల

అ: పలుతెరగుల తిరిగలుదివి | బ్రాకగగనగళుమచుచును జల

2 కడుభయంకరంబగు శృంగారై యొక రనమునప్పిలి

చెడి నక్రగ్రాహకొటి చెవిది చలువెలంకులజన జల

సీ తనకుంధకాశిన్యతకునోడియంగినా జనస్తనంబులుపైట చాటుజేర

తనయానలగ్న నిదానంబుగని యువశీయానముద్వినం చెలనుగోర

తనదంతరుచిగని తలికుబోడులహాస మాముఖచంసుని యందజేర

తనకరంబులకాంతి గనుగొనిబాలల తోడులుమెఖలకాంతి తోడుజేర

దనదిగజరాజ కాసారమున నిరంకు

శముగ నర్చించుటంగని జలధినుండి

బాచులంబులు రాహువు పగిదిగొక్క

వెలిదిగి నెగిలె: నామదగజముచు

మంజ—తను స్త్రీనముకరంబును । జంపందలచి యమ్మదగజంబు

పెనుబలమున పడకకముల । తాడిపంగ నాజలచరంబు ।

వచ. పట్టినపట్టును నీడికున్న నావనచరద్వయంబు నన్యోన్యజిగీషాయ త్త
చిత్తంబున హోరాహోరింబెక్కుదిసంబులు పోరిన—

గీ. ఆన్న పానీయములు లేమిసరిగజము । చిక్కి సగముయ్యెడలచరంబుక్కు
మిగిలె । న్నానబలమున వెవ్వార్చితైన న్నాన । బలమె బలమగుతన ఘజ
బలముతగిదు ।

వచ. అంతస్థ జేందుమ నాన్ముసిల్లి నీ రాటంబునకోడి తనరక్షణకుకర్త
శ్రీమన్నారాయణుడైనవితలంచి కరంబెత్తి భక్తిరసావేశంబున—

భాజిల్లాకో—వరుణశ్రీగతి.

ప. కరుణింపరా । కనకచేలా శిశు ।

అ. పరమోదరా । స్వహవాశ్రీహరి శిశు ।

1 జలచరమునకుచిక్కి, చావయంతినియ

తలచిబోవుయింక । ధామోధరావారి కరు ।

మ. బలమాసన్నగిలె తలంబులెడలెక్ పాణినిలంబుల్ నిజూ
ర్పులుపెచ్చెక్ తరువన్నసన్నగిలె మూర్ఖదోషముల్ గొమ్మె బ
ధులుసర్వత్ చవిదొందుచోటులకు తోడ్పొన్నరక్షింపుశ్రీ
లలనాధీశత్వమేన యర్థిసయితెక్ లక్ష్మీసమేతంబుగా ।

మంజ—అలనైకుంతపురంబుననగరులొ । అతులపూవసంబునను

జలజేక్షణలక్ష్మీదేవితొ । సాఖ్యంబు గనుచుండిగను

2 కాసారంబుననుండియెచ్చు । నగ్గజపతి మొరవినుపింపక

చేసెదనాహాయంబుచి । హరిలేచెను జనయనుకంపక ॥

అకాణా—మాపకం.

ప. వడిచనుడెంచెను శ్రీహరి । వారణపతిగాపాడగ ॥వడి॥

అ. కడువడిరమచేలచెరగు । కరమునదగిలినవీడక ॥వడి॥

1 సిరికిజెప్పకచక్రము । చేతదాల్చుకురువడితన

పరివారంబునుడీరక । వైనతేయుపయి వెక్కుక ॥వడి॥

2 తనమెట్లుకామూమీ జరుగవచ్చో భజనంబా

వెనుకచుకట్టించుచు వెనుక నెట్లుకావచ్చో ములురా వడి||

వచన మొకచుచెంది హరికానాదంబుసమీపించి గతేందుని వెనువకుమని
సెదిక్కునెట్లుకావచ్చో—

మంజ—మనరంబును మనుమానోజవలెని | మరుపునుచుచక్కంబు

మకరాలనుమున వైచిత్రమునని | మగ్నించెనుదిర్వక్కింబు||

కం సీ రాటంబదిహతమైయారాటంబుడిగిహూహు యనుగంధర్వా

కారంబుననదివెలువడి శ్రీరమగేనాథుజాగడి చేరెనుదివిక్కి||

వచన గజవలియును యిందోద్యున్న నామ భూపాలుడై విష్ణునిం బా

ర్థించి నెలవంజనోజిజేరింబునకరిం. వారిలగ్నోహతుడై గరుడ

వాహనంధమ్మీచి వైకుంఠంబునకరింసన కరిత్యహారాణి శుకునిం

బాచి ఆమహారాకెతింబున గిజవిరావలన వె నెనుకుండ్లెనియె—

మ. భవిగేనాథిసం కలంకెమును యిందోద్యున్న భూపాలుడి

శ్వరుసంఖ్యోద్యయ దిత్తచిత్తమున కిష్టోద్యోగ సంయుక్తి మా

నరతిన్నుండనగిస్తున్నెయ్యెడికురా నారంబులేవండుటం

చురుదాయుత్తత శాపమిచ్చెన్మృపుని శుభదగ్ధజంబానటల్||

వచన అశాపంబీహరి దర్శనస్సన్నిహంబునదీరె. నదిగాక సముద్రమధనం

బున శ్రీహరిగావించినలీల లవంతంబులన నవియెరింగించుడన వ్యా

నాత్మజంజిటనియె—

సీ: వాసపుకడకుదూర్వాసుకొక్కపుడేగు మంజులపుష్పదామంబాసుగె

నద్దానినై రావతాగోకుంభ స్తలి నుంచగానడిదాని దృంచివైచె

మునికోపియైయుబులనియెస్వల్లోక సంపదలంబునిధియందుబడునటంచు

నడికెంబుగలోకమైశ్వర్యములబాసి కాటకంబునగడుగాసిలగని

దిట్టంబునావతింబట్టి గతినిహీను

లంబునాదోమలారమా మగనిచేరి

విష్ణున మునర్పి శ్రీరాధానిధిగతుల

తనవసంకతహం నిర్గుణకనియె.

మంజ—సుకలందకు తృప్తహా! సాయము ముకవిరోధివలన

నెరిగితిజలనుదాసి 'వై'మదిమరచి మైత్రికలచ!

వచ! ముచిగావించుకొని యందగుంగలసి మందరాచలంబతియత్నంబున
పెకలించి తెచ్చి క్షీరాక్షయంబునిచి వాసుకినిబట్టి రజ్జువుగానమచ్చి
ఓషధులు పెక్కింటినుంచువైచి సర్పశీరంబు దనుజులుచు, పుష్కంబు
నమరులుచుట్టి, బలంబున, కుడియెడల, యెడమకుడికిందిప్పు
చుండ కేషంబుబాధినింపంజాలక తోకలాగి కొన దేవతలచేతులు
జూచి మందరగిరిని గుంగున జలంబులచునిం. నంత దేవాసురులు
వెలవెలంబోయి చేయువనలేకిమురారింబొద్దింప వతంకు కూర్చొ
నిపోచాచ్చి మంధరింబు పుష్పకైనించికైలేపిన—

చ. సురలసుగుల్ పయోదధినిచుట్టి మధింపజనించినట్టి భీ
కరితరకాలకూటమును గాంచివిడిచి ముఖాదులెల్ల ని
ర్జరులునుతంప కంఠువచిరాన విసంబుచుమింగిలోకముల్
కరుణదల్లిర్పరాచివారి నెరవపూజలునందియేగిన॥

వచ! హలాహలాపహరణానంతర మప్పాలకుప్పయందు యర్జిజనరక్షణా
సక్తినమృతంబు జల్లుజల్లునజల్లించు స్తవచతుష్కంబుగలవేల్పుమొ
దవుజనించె. దానినిందమయాగాది కంబులకువలయు సంచారంబు
లొసగుననుపేరాసం దేవమునులుచేపట్టిరి. ఆపైనిపక్షయతయగుచు
నుచ్చైశ్రీవంబును హయరాజంబును నాపెరుండకల్పవృక్షమును నా
వైనిశ్చేతికాంతుల న్నెదజల్లునైరావతంబును మదగజంబును, అమిత
సుందరులగు రంభోర్వశీమేనకాద్యపురసాతండంబును, శీతకరుండును
జనించి రనంతర మప్పాలవెల్లిలో—

సీ॥ తేలులాకరినాచుదాటులాసీలంపు గూటులాకరిమబ్బుదాటులోక్కా
కల్పలాకరిపుల్లు చెల్వలా నెరిమీను చెల్వలాతుమ్మది చెల్వలాక్కా
పండులాబంగారుగిండులా కొండమ్మిచెడులా జక్కవగండులాక్కా
మించులాపవడపుసంచులాదిక్కలమించులా హిందీవసంచులాక్కా

యశశ్చైదిహకూమారో యన్యాయగతి
కుసయుగమును క్షయకాంతి కలుకఁపూర
నఖలలోకకమాత భాగ్యైకేత
తోపలచెడిగాని తోమలలోచెచ్చి.

జాగ—చక్షుశ్శాంతి

ప॥ పరిణయమాపెనుపురుషాన్త్రయదాసిదిని పాండువంశాగ్రణిజనవర॥ పరి
అ॥ సురమునినికముహూర్తహా॥ సురకాంతలు వైసేనలుజల్లగ పరి
మి॥ మదిలోనులులు కల్లగ॥ తోసమెల్లలోకంబులనిండగ
పుమాత్ముడు దగన్మాతయని॥ భక్తజనులమది యుల్లసిల్లగ పరి
చ॥ జగములకన్నతిండియగు చక్రిజగత్త్రయి మాతనిందరక
దగికిరమునిదాడిగిచిదాల్చె సురంబుల నెల్ల సంపదల్
మగుపచెలంగె నాకమున మంజులమై తగుకొన్నభంబు దా
నొగినిడ ననిరాజు ముద మొందుమి నల్లనకున్నభక్తితో॥
వచ॥ ఆవై నాసముద్రంబున వారుగోమను నామంబున పెద్దమ్మజన్మించె
నావల కొంతవిషయ దయవ-

జాగ—కూర్తిం.

ప॥ పుట్టెనమృతకలశమును॥ చేపాని దానభవంతి పుట్టె॥
అ॥ పట్టెనామము పీతాంబర॥ మట్టిపడిగ నవయవ్విను
మి॥ పట్టెయున్నతోరిన్కుం॥ పగునాశుం పమరవెళ్ల
డిట్టాయుచ్చేడిపావనుడు॥ దీర్ఘ బాహుపదులమూర్తి॥ పుట్టె॥
2 మిక్కిలికాతుకమున సుర లొక్కమొగిని నిక్కిమాడ
రక్కసు లమృతమునీరికి॥ చిక్కింతు నె యనితిలంప
మి॥ నొక్కటబాములుసర్వమును॥ దొలకెను నాకటంచు
తక్కకవాసుకీడలంప॥ తామరసాక్షుడు మెచ్చగ॥ పుట్టె॥
వచ॥ ఆయ్యున్నతకలశం బసురులు లాగికొని సురలకీమి రెండు తెగలకు
సంకుల ననుచుచయ్యె నంత త్రివారి-

గీ॥ అమరకుండల కేయూర హారకంక
 కామలై పావమాజీర నాన మొలయ
 నల్ల నవ్వులపద్మ దళాక్షుడనుర
 కతులనడిగింప నామరూపంబుదాల్చె॥

మ॥ ఇట్లున్నోహినిరూపమూని దనుకాళిన్మామలో ముంచి య
 ఘటమునెక్కిని మామబావమనుచు గాంచి వాల్చాపులం
 ఘటముల్ దూల్చి సుకాళికిహాక కొలంకిజాచ్చి సరస్వింబు మీ
 కటువైతావగ బోతునంచని యున్నత్రేణి కిన్నిట్లచుక॥

మంజ—అమరులార మీరందింకయెడః నధివసించవలయు
 కృమత నమృతము పంచిమీకిడెడ గాన దావవలయు॥

వచ॥ అని అమృతంబుతయు సురులకే పంచుచుండ. రాహు కేతువులను
 రక్కసులుగ్రహించి సురులలో మారురూపంబుల దాల్చి సుధం
 ద్రావుచుండ సూర్యచంద్రులెగించ వారి చక్రంబున వారినివధించె.
 వారలు గ్రహంబులై ఘోషంబుల సూర్యచంద్రులంబట్టి బాధించు
 చుడిరంత. మోహిని యమృతంబుతయు దేవతల కొనగి యంతిర్ధా
 వంబైన సురారులు దివిజాలపైగవిసి సంగరంబాచరించ నమరులగుట
 నిర్వహలేజయించిరి. యివ్వస్థింబుతయు నారమవలన శంకరుంజాలించి
 పారిదిరిసి—

చక్రవాకరాగం—రూపకం

ప॥ చూపవేముకుందనీను॥ సుందరమోహినిరూపము॥ చూప॥

అ॥ పాపవే మత్సరియము॥ కృపాపరిజగదాధారి॥ చూప॥

మి॥ యీశులను నారమము॥ యెరిగించెభవల్లెలు
 తేవకునందియము బా॥ ధించుచుండ నమ్మజాల॥ చూప॥

2 శరమపురుషుడనగ నీ॥ ప్రపంచమెల్ల గావాడును
 సరిసికాక్షిపై ననుజుల॥ సంభ్రమాచ్చియుంచి తెల్లు

మి॥ మురివిరోధకామారినినను॥ మోహపరచగలదేమాతము

సురమునియెగి తెరుగుల॥ సుందరచంద్రమోహినికాకో॥ చూప॥

వజ్ర అనిన దీనిచేత నుపరిహారమునకు నది నుపక్షపాదముని యనిపి
 పుచ్చి హనుంపెకాని ముగ్ధులన పోలి పుండితిగానిత్య మధ్యభా
 గంబున పూర్వమున నున్నదిగానిత్య భావమున యునుక
 మేను వాని కింతి కాకానభాగము నుపక్షపాదము నెమ్మొగంబును,
 వికారాంబుజ కై నెమ్మొగంబును లలకరు చెక్కులును సంపది
 పూర్వమున నానెయు. పంజాపింబును, కంబు కంఠింబును,
 యున్నత వస్త్రములును, తామరహంజుల మలకింబు మాస్తంబు
 లును, చీమలకాకుండాను నూగారును, పానిమద్యమును రంభోరు
 యుగళయు, సూర్యోదయ జంఘలును పద్మపదంబులును గల్గి
 మూర్త్యవించిన పుండిరిజోయన చిరునగవున విహంభింపించి గా
 త్రంబున గవమోపించి త్రిస్తయి గ్రామచూర్ణన లొప్పార పంచమ
 వస్త్రము కైక నిహదాది స్వృణ్ణిజంబు లలర ధైర్యాది వస్త్రాంశవా
 గంబుల నానెపించి మోక్షులు చిరున గావించు సంగీతమునకు
 విహంచికా జంత్రములపై నాబ్యంబుసల్పు కరంబులందలి కంకణ
 రుహారుణతామరంబు తాళమానంబు రచింప వానిచ్చుపుల నిరువై
 పుల నలరు తిరులకు తోరణంబులుగట్టును నిల్చియున్న జగన్మోహి
 నిం దిలకించి ధైర్యంబుమాలి యప్పుశుపతి యిట్లనియె

గీ మదచుకరమనంగ మహాజెల్లునిచ్చు వో

యిందునదనసిప్త యెవ్వరితవు

నామ మేమియును నదియాహా నేమి

కత మొదెల్పునునగ కలికిబలికె

తపోజ్ఞాన—దూషణ.

మ॥ మునిరంజన ఖలభంజన॥ ముదితాఖలలోకజన॥ ముని॥

అ॥ వినుపించెద మచ్చరితము॥ వేదాత్మజనవనిరథ॥ ముని॥

మి॥ దనుజాదినిధి క్షిప్త॥ వినుతినేయువేదక్షిప్త॥

వసమంపిలుండుకె॥ ధలములుగొని తింటుకె॥ ముని॥

2 అవివాహితవయస్య నే । నదీధరునిగోచియుంటి

ప్రేమిమల సుమములకొరకు । బరగి నాచెలుచీవని

మి! భవితంబేదిధని । బరగునొ యెవరా రసిసి

తవదరిశన భాగ్యంబిది । దరమే నుతిసేయనట్టె । ముని!

వచ! అను మోహినింగాంచి కామాతురుండై వెంటండగిలిన శంకరునకు
యాపె యిట్లనియె-

నీ! ఉండకొంపయులేక పండమంచములేక కొండపైకాటెయంచుండినావు
కట్టపాతయులేక పెట్టసొమ్ములులేక పులితోలుపాముల బూన్చినావు
యొక్కతత్తడిలేక మొక్కబోలెయులేక పగులపాలుబుల బట్టినావు
పెట్టుకున్నానికి కట్టుకున్నానికి సరముతనువు నెరజేసినావు

యిట్లనీవెడ సౌఖ్యంబు లిచ్చుటెడ

చాలు మగతనమన సగపాలుగావె

మదనునకు సెకువైంబు గద యిక్కె

సుఖమొసంగెను మరుకేధి పొచ్చినాకు!

వచ! అను మోహిని వెంటండగిలిన శంకరుంజూచి నీవిగిక్కొంటం జిక్కు
నన్నాకాలాహులు విమానల తప్తుకేమవే. ఘననార చందనలేప
నంబున నలరారు చుదేహాలతీకి పాడుబూడిదె యలచుదే. నీవేడ నే
నేడ సుపరకంబేడ నో కాటిరేడ నలదిట్టి యడియాస మాచుమని
కొంతదవ్వున కరిగి తనవెంటంబరతెంచు శివునకెంతో యాసగా
ల్పుచు, రమ్మ అబలతోనడువజాలవా అర్ధనాదిగాబోలునని మేల
మాపచు అండకాడా! నీమందిమేమి నీనిశ్చయంబారయ నింతికాల
యాపన మాచరించితినిగాని వేరుగాదురమ్మ రమాలింగనాభాగ్యం
బుప్రసాదింపుమనుచు సమీపించు శంకరునిచెప్పపై నోకదెబ్బందగి
లించి పరువిడుమోహినికై శంకరుండు గుట్టలనక, పుట్టలనక పరు
విడుచు యెదురురాళ్ళతాకున బోరగిలంబుచు లేచుచు కైలాస
ప్రాంతమ్మనకరుగ పార్వతిగాంచి కోపించి మోహినింబట్టకొనయిర్వు
రకు కయ్యంబుదొడరె. నందుపారగతి—

అర్జునః — మాధవ.

పరి ఎవ్వరితఁ జెడవచ్చు కేలెప్పు తారచ్చి తెచ్చు

అ యివ్వనినావిధునిలల, విహరింపగిల్లదినావె

మి జవ్వనికే నెవనిని నులు! నాహరించితోహకము

లివ్వరుభాతిలమందునిచ్చిలదే నేకేనామందుచువినవో యెవ్వ!

మోహిం:—

2 చాలుచెడినెందునోకు హరిబోకుమేయగాను

హరిరాశినిగోపము మాచివెరుచువారులేను

మి! భాసిమగింపనిచ్చు! నవలె నచువరించెని

కేలెప్పులోనవలె నాకీపు కేవళేయవలయు! వెవ్వ!

గీ, వింపొరులులు మాండుకొనుచునుండి

ననుచునుయెంచి వెచ్చు న్ననత్విచుచి

నకకుమి మోహింజేని నునకరిగ

కొగిలింపగి ప్పూడికేకాపుకయ్యె!

వచ! అంత వెలవెలంబోవు నెంకరునాదాచ్చి, మాచితివా నామోహిని

రూపంబు యెరింగించె నావలశ్రీహరి వామనావతారంబున బలీం

దుగ్గిని కనాతలంబునకనిచి బోకంబులగాపాడెనన పక్షిన్మహారాజు

శుకమహర్షి క్షిప్తనిము—

మంజరి—యేకారణమున హరినామయడై యెవ్వరికుదయించె

నాకెగింప వె న్నెవరావేయముగ, నాచిని మునిపచియించె!

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.



8. వామన చరిత్ర

మంజ—దేవేంద్రుని కోడిబలియ నెడు : దీక్షితసుంహాకనాడు

భామినినదింబించి ముక్తియు నె! భామినిగనియెకనాడు

గీ దేవ, గురునరసుకుండు చేసిన్

శాధిలిపిచేయునదివేక బొదికివచ్చి

యొన్నటులనుంచి పీఠికొక్క తెచ్చు

చూపుచు వానివ మొన్న శుకుండులరి!

వచ! బలీంద్ర! విశ్వజిహ్వగిరిని నిర్విఘ్నముగా సేయంజాలుదువేని
నీకెల్లదల జయంబాన నాడగలదన నతుడద్రాని నాచరించి కృపీట
యోని వలన వాయురథగజ కాక్కుకాది సాధనంబులంబొంది దేవాది
ముగ్ధకంబుల జయించి పుష్కలత్రాణకర్తృబుగా చక్కవయై
చాలించె-

గీ! అమరులునుగాము లదితీ సతమునీ

యాలకించికన్య పాఖ్యబ్రహ్మ

మంతనంబుకేరి మహనియనాచిక్ష

లసురవరులచేత నగడునడిరి!

నకజ—తీర్థిగిరి.

ప! నాధావినుమా! నాదెనగనుమా! నాధా!

ల! సాధుకానిర్జనుల! బాధలరయుమా! నాధా!

1 దితిసుతు లతిశయ! తేజోనిధులై

వెలలందించెద! చేమిసేయుదును! నాధా!

వచ! ఇది నా కుమారులకేగాక ముగ్ధకంబులకును భరింపరాని కష్ట
ములు గల్గించుచున్నది యిందుకేదేని తెరవుంజూపరేయని ప్రార్థించిన

మంజ—తెరవా నారాయణమంత్రంబును దెల్పెద నిత్రనినుమా

మరువకసతతము భజించినదను మానితనిర్జనుమా!

గీ! అనుచు నారాయణంబును నట్టెమంత్ర

రాజ మొసగంగ నదితి పరమసుగు

చిత్తమున జరిగిన సర్వము వినితడన
మానమునచొక్క చిన్ని కుమారుగనియె
వచ 'అర్జునుడు కడుహృదీనానిగుట వామనుడను నామం బిడి
సెనుచునుండ వినినప్రవృత్తమానుండై -
లిలవారి - కూడరి

ప! అంతట వెనిమిదియేనులు | యాబాలకునకునిండె | అంత |

అ! స్వాంతములను నిర్మిలులు | వంతబాసిమువమందగ | వంత |

మి! బాలక్రీడలుజరుపుచునని | బాలురతోనాడుకొనుచు

లిలజనని ముద్దులుగొనుచు | ప్రేమదనమెలగుచుండు | వంత |

వచ అంత నబ్బాలునకు కశ్యపుండు మహమ్ములంగలసి యుపనయన
కర్మంబు నిర్వహించిన సనితనానితి, ముత్రంబుపదేశించె. బృహస్పతి
యజ్ఞోపవీతులొసంగె. కశ్యపుండు ముంజయు అదితి కొపీనంబును
భూదేవి కృష్ణాజనంబును, సోమండు దండంబును, ఆకాశదేవత
ఛత్రంబును బ్రహ్మ కమండంబువును సరస్వతి యక్షమాలయు,
సప్తర్షులు కుశ పవిత్రంబులు నొసంగిరి -

*కం॥ భిక్షాపాత్రికనిచ్చెను | యక్షేశుడు వామనునకు నక్షయమనుచు
నాక్షాత్కరించి పెట్టెను | భిక్షునకు భవానిపూర్ణ భిక్షనరేంద్రా |

వచ! ఇట్లుచితకర్మ నిర్వహితుండై యమ్మామావటుం దున్నయెడ -

మంజ - బలియొనరించెడు జన్మంబునకా | పారులుజనునెడగాంచి

పలికెమీర లెటకేగెద రెచ్చట పప్పున్నంబిపుడెంచి |

వచ! అనిన నాభూసురు లర్భకా భూలోకంబున నెందరో వదాన్యులు
గలరు అర్థంబు దన్నుచుండుగు గాని బలిచక్రవర్తియంత వాడెందును
లేడు -

కం॥ అడుగుటయెతడ వర్ధుల! నుడిచొప్పునభాగ్యమణులనుగృహనిచ్చుక
నడితును పలుచురుమాతని | కడకుఁదనాపేక్ష విప్రకాండమువించె |

మంజ - లోకంబులరక్షింపగ | వామనుడాకర్ణించి తమక్తుల్

లేకుననినని జనకుల | యానతితో కడలెనువీక

2 మృగమధ్యమున పానవినుగు | సర్వదనవిని దరించె
 మృగమృగపుల దాటెయ్యుత్తరము | తోడ్జనిదగగాంచె॥

సంగ్రహ—అది.

శో బలియన్తి వాటము | పానమునకలకాటము | బలి॥

అ॥ విలసితమంత్రాకరము | వివిధవస్తు సంకలితము | బలి॥

1 అతిశయ పోమావృతము | యాజ్ఞగంధవహము ప్రమో
 దితయర్థజనాభిషేన | నతితిని మారుచోగి | బలి॥

వచః కవిశాయంబోవు నక్కుపానానిలు దిలకించి యచటివారలు—

సీశంభువో? కామయాచర్యంబుముసూలముక్షిత్రముముదోచదయ్యెగాన
 విష్ణువో? కాడు దీక్షితసుదర్శనశిఖ ములుకొస్తుభముగన బోముగాన
 ధాతయో? కాడు సంతత వేద వాదిన ముఖచతుష్టయముండ బోదుగాన
 చండాశువో? కాడు సర్వజనార్హతా కారుడై యలరారుగాన

యింక నెవ్వరో కిడుమహానియుషితడ

టంచు చూపరు లానందమందుచుండ

సామగానంబులాలించి చని బలిగని

చిరుతపారుండు యిట్టలా శీర్షింపించె॥

మంజ—స్వస్తిజగత్రయ విజయునకును | సర్వామరవినుతునకు
 స్వస్తియునీంద్ర నుతాకర యజ్ఞ నిర్వృతి సర్వణగణికి-

మ॥ అని దీవించిన యవ్వలుంగని మహాత్మా యెవ్వరోమోదు నీ
 కనువౌతావు యిటేలవచ్చితిని నీ యాకారమత్యంత హ
 ర్షనదన్మించెను తల్లిదండ్రులెవరో సర్వబధిష్ఠించి పా
 వనతంజల్పము నాదుకర్ణముల నాబాలుండు దానిట్లనుక॥

సవరోజు—చతురశ్రింగు.

ప॥ ఎవ్వరివాడనం | చేమని తెల్పును

అ॥ ఎవ్వరికైనానే | నేగతిజుమి | యెవ్వ॥

1 ఒరులుగారునాకు | యెరులకునేనాచు

ధరణియంతకునేనె | తల్లిదండ్రులను

వి. కనుకలందును నాకు లేనిదేనాకు

యెప్పుడును నాకు లేనిదేనాకు నాకు లేనిదేనాకు

2 ఇది నా నానాని యెప్పుడును

పదియునానానాని నానానానాని

మి. కనుకలందును నాకు లేనిదేనాకు

పదిలంబుగ నుడువాలెనిది వచ్చినిది నామిదిగ

మంజ—ఎరచేలంబుల మూడలంబుల మూడలంబుల

వాడుతో రత్నముతో కాంచనమో అన్న మొకస్థలనో

2 కరులకొ రిథములనో నిలయంబుల గామంబుల ధూములనో

ధరణీఖండమొ మొమడిగొవొనను ధాత్రీసురయుర్వరిలో

గీ. అనినదను శేషకులంబులయొ మూకు

లంబువాటిలో నెన్ననలవియ యనఘ

నుంజొకంకైచగలంజే మునుపుహిరణ్మయ

కళ్యపునిపుతుడెనలేని భూతిగనెడ

వచ. అదిగాక మీమాదవతాత హిరణ్మయంబు గదాయుధ ధరుండై
ముల్లోకంబులజయించి నాటిలేనిమేటియన నలరారుచుండ హరి వరా
హాకారంబున బొలియించిన యతనియగజంబు భాతువైరంబు
దీర్చ నాహరికారకల్పెడలవెడకి తుడకు వికుంకముంజేసిన యతనికి
భయమంది శ్రీమన్నారాయణుండతని గర్భకుహరంబునం జొరబారె
నతండు మీకోడెలామహండు—

మంజ—పురుషులారాదులు వేసిన! జీవంబులు మీజనకుంజొసగె
చిరికిని యాచంద్రార్కముగా ధరణినిల్పియెసగె

ఉ. అట్టి కులంబునంబొడమి యత్యధికోన్నతి పందివైరుల
గొట్టెడిలోకములకొకట గూరిచిధర్మము గాగనేలుచు
న్నట్టి నినున్నుతింపవగు నాఫలదాతవు నిన్నుకోరగా
నెట్టివరంబులైన కృపనీయవె కోరెడ దానవేశ్వరా

వచ. చుట్టచక్కంబులులేక నిలువనీడలేక యేకాకియై యలరారు నాకు
నివసించుటకొక మూడడుగులమేర భూమిసోసంగినం జాలు బ్రహ్మం

మీ సమస్తమును నాది చేసి నామనస్సునందును.

గీ॥ అనిన వాసుదేవకు పరిచయమొనర్చి

కొలదిపెట్టి కృష్ణుని కోరికను

జూపింపి కృష్ణుని కోరికను

భూములలో గాని మనుష్యులలో గాని పోలుకదనా

నాదకథలు—కూడె

మీ పరిచయములు దాన నేనైనాకు తగవుగాదు యేల!

అ॥ చాలు బ్రహ్మచారిని మును. తేల నెక్కినొట్టుకొన నె॥ యేల!

మి॥ చాలనె మూడడుగులు! జడమాలకేల బూచిటికె

పోలునె యీగలవెటంచు! పుడమితిగని దాని గోరి! నేల!

2 వరుగునైన నాకేమియు! వెలదు కిమిహెయి

గోమనో జన్మిదమో నాకు! న్మృత్యుమొ మదిచర్మము

మి॥ నెమయులు తగుగాకరి ప్తి వాంఛలు యారభిహయగజ

మకినూనెబులవేటికి! అడుగులుమూడిమ్మచాలు! ఏల!

వచ అనిన నాబాలభూసురు వచనంబులకలరి బలి పదత్రయం భాసంగ

సిద్ధమెయ్యుడి సుకుండ్లవియె-

మంజ—పొట్టిపాడు డడిగిన యీ! వరమెట్టులునిత్తువు దీనక

గట్టువెరికోరికపై వచ్చిన! కంజాక్షుంపిత డిడినక॥

మి॥ సురనామా! జ్యమునంది యిందుని రణక్షోణి వినిజ్ఞించు నీ

చిరకీర్తి వినియచ్చ్యతుం డిలులునిక జేరెక పడంబులత్రయం

బురయంబొప్ప గ్రహించిలోకముల నామూటికిక హరింపంగలం

డెరుగంజాలవు నాహితోక్తివిని నీవీదాన మీబోకుమా॥

గీ॥ అనినబలియను గురునకు సంతవాడు

లోకనాథుండుననుగోర నీక మాను

పెట్లు రాజ్యంబు కొరకునై యిట్టివేళ

సమృతమాడుగ నోడుమ నార్యవర్య!

శ్లో ౩—త్రైకూటి

ప. గురునాథావిరు శ్రీహరిః | యేనేషీలాగునరుదెంచెనామేలు || గు||

1 వరమాత్మ్యుష్ణి గోవిదా | ప్రితమా రాజ్యాధిభోగములు
తిరమా కిలకాలమొక్కగిత | జరుపుచీరికైవగాని | గురు||

2 కాశే ముచురాచాజులు | యీశే యర్థులకునుగోర్కెలు
వాశే యెడనెడియింపకె | పేశేయిల నిలచుగాని | గురు||

మంజ—నిరయంబైన నిబంధమైన ధరణీః | నిహృలనమైన
మరణంబైన కులాంతమైననే | మాటదిరుగజాలక ||

గీ|| అనుచుగురునకు మారాక్షితచసతి జల
కలశముంబిని క్షిప్రోయగా ఎటునకు
ఆర్ధ్వపాద్యంబులన్నిచ్చి యమలభక్తి
నూనిమదిని మూడుదుగుల దానమిచ్చె.

వచ|| గురుండా దానకలశ రంభంబున కష్టవహిన జలంబురామి నమ్మా
యావటుండు గ్రహించి కుశనంజుగొని యందునంబాడువ భార్గవుని
కన్నకండ్లకుగె దానంబుపరిగ్రహించి బలింగని వామను డిట్లనియె||

గీ|| భభిరదాతవనంగ నోబలిడితిసుత
నీకయేచెల్లు నాపదా శీక మొగివి
కొలచిగ్రహియింతు నంచని కుహనవటుడు
ప్రీతిమెయినంత విశ్వరూపంబుదాల్చె||

శ్లో ౪—త్రైకూటి

ప. హరివిశ్వరూప! మపుడుదాల్చెను! హరి!

అ! సురగరుడోరగ ముని | సంస్తుతులు మిన్నుముట్టుచుండ! హరి!

1 ఇంతింతైవటు | డింతయంతయై
అంతుగానరాక బెరుగుచు | నభముకంతయై హరి!

2 పమనాలుగుభువనంబులు దాన్తై
తుదితేను వాక్యేత హుపుండయి! హరి!

వచ. హరికింబునకుంబాడిచై భువన్లోకంబుమీరి సువన్లోకంబు దాటి,

మహాకర్ముగడచి జన్మలోకంబులకు మీరై తపోబోకంబు నిర్ల
మించి సత్యబోకోన్నతుండై చరిత్రతలంబు రీనాతిలంబును వాదంబు
లభరాతలంబును జంఘలు మహాభింబులను పాపపులమను క్షణం
బులును, గుహ్యంబున ప్రియాపతులును, జఘనంబున దానపులును,
నాశితలంబు నభంబును, ఉపరంబున సప్తసముద్రంబులును ఉరంబున
తారాగణంబును, హృదయంబునభర్తృంబును, స్రవంబుల రుతుసత్వం
బులును, మనంబున చంద్రుండును, విక్షంబులలక్ష్మీయు, కంఠంబున
చతుర్వేదంబులును, ఘంజంబునచాదిదేవతలును, కర్ణంబులవిక్కు
లును, శిరంబున నాకింబును, శిరోజంబుల మేఘంబులును, నాకిక
యందు వాయువును, చెత్తంబుల సూర్యచంద్రులును, ముఖంబున
సన్నియు, వాక్కున నఖిలచంద్రోదకేంద్రంబులును, నోమంబుల నోష
ఘలును, నఖంబుల శిలలును, ముక్తికాతయు, గాత్రంబు నఖిలజం
గమస్తావరసంఘంబులును, విలసిల్ల శంఖచక్రగదాఖడ్గ అక్షయశాణ
తూణీర విభ్రాంతింబును, మకుటకుండలకేయూర కిరీటముక్తాహార
కంకణకస్తూభ మణిమేఖిలాంబర విరాజతుండునై విజృంభించి—

మంజ—ఒకపాదంబున నుద్వీయంతయును । నొప్పమీరగహియించి

యొకపాదంబున నభోతలంబును । యొగిదాహరియించి ।

గీ॥ మరలవామనుడై బలీశ్వరునిచూచి

భూమియంబరములు చెల్లిపోయె పాద

ద్వితయుమున నింకమూడవదేమిగలదు

సత్వరముచూపుమో బలిసాక్షిభౌమ॥

వచ॥ అనిన బలీంబును హరిమాయావిధిసరింగి తరించితిని దలంచి
దేవా నీవే సర్వమున్నువుగానిదేమిగలదు. నీపదత్రయంబున కీనశ్వర
లోకాదులుచాలపు మదీయతను మనధనంబులు నర్పించితి నైనను
భవదీయ తృతీయపాదంబు మదీయశిరోగ్ర తలంబలంకరించి నన్ను
భవత్కింకరునిగా కృపంజూడవే యనునంత ప్రహ్లాదాదిపరమభాగ
వతి శిఖామణులరుదెంచి హరింబ్రాద్ధించిన వామరుండు—

మ. ఎట్టి ద్రోహుల నీ నాశమును నాచాము.ల హృదయ నీ
వలపాదానిని దివి నై నుచుచానన్దాన్దము కాలంబును
దెలియించితిమింబుదెనిగు లోకేశ్వరమున్నీరు కా
జలికాన్త దియింతునందని పాదానిమున్నీరకా!

వచ అతితోడింబూషీ పుష్కలంబును కచాతలానానం బావరించె శ్రీ
వారి వారిద్వార దిక్కుకుం యుండేనిలచెనని శుకుండు పరీక్షన్మహా
రాజునకు వామరుచరితః వెరింగించిన వలలి మునీందా మత్స్యన
తారంబేదిధింగలెనన శుకుండ్లనియె- మున్నుకల్పాంతవేళ—

మంజ—దివిభద్రేమును వాలించెను. నొకభార్యనేవరుండు
పరిమలశాంతును సత్విజ్ఞతుడన పరిమేష్వరుభక్తుండు
2 కృతిమాలికయును దోహదజలంబున కృతిన్నాతుంచైవారిని
నుతికేయును దోయిదిసేరఁబున! పలిచిరుమీనమునుగని!

వచ మరల జలమధ్యంబున విడువ నమ్మిన్నాంకంబు—

గీ. క్షాళిఘాతులు యీజలఘృషములెల్ల
చిరుతనగు నచ్చుచంపునంచెంచి నీరు
దోయిటంకేరి క్షింప కోయిమరల
నీటదోయిదువేమది నెలరులేకె!

వచ! అదిగాక జాలరులు వలలగాలంబులంబట్టి మురికింతురు. దీనజనా
వనుండవని నీయండజేరితినని మరుజభావణంబులవచియింప నాసత్య
వ్రతుండార్ఘ్యంబున నాశకుల శాబకంబును కమండులువున నిడు
కొని నెలవునకుంచేకె. నదియొక్కరాత్రంబున కాకమండులువునిండి
తనకుండనిమ్ముచాలమి నారాజన్యన కిట్లనియె—

మంజ—క్షావరనేనుండుట! కీకుండికచాలమ వేరొకచో

భావించియు విడనాడుము! నావరపాలును గనిదానొకచో!

సీ! గండికొంబును దెచ్చినిండుకలశంబున విడచెనయ్యదియునుపాదప్రచాల
కున్నుచోమడువునకుంకేర్చెనదిచాలమినిహ్రదంబునరాజమీనుచేర్చె

వాసిశ్ఠాక్షుఁడు పరమేశ్వరుని దివ్యుల చాలదనంగ నృపతిదాని
 గూచి మున్నెముకవేసి నిలిచినామోనంబు నరపాలమేలెయిన్ని
 నములు పుట్టించియున్న పరధనుని
 కొని గుండ్లనడమ్రుంగగా పోవించె
 యశగనత్వవ్రతుడు యత్నాతిభక్తి
 భరితమానసుడైయంతి నెత్తితిని

వచ్చిదేవా పరాత్పరా! సీమాయలనెరుంగ నాతరింబుగాదని యెంత
 యోప్రాక్షింప నామీనాకాఁ జేచారియుల్లవియె. నరపాలా నేటి
 కేకవదినంబున రాత్రి కష్టపాపకృతకృత పగులు నిండు నాకతంబున
 ముల్లోకంబులు విలయింబోధి ముగ్ధులై నీరసంతయు జలార్ణవం
 బగు నడ్డానినొక నానయి. కిమియెచుచు నావయచే దానియం
 దోషగుణులు, దీక్షగుణులు, సత్తమహర్షులును యరు దెతురు.
 అనాన ప్రయచాతాహతి మునుంగికుండి నేనడ్డానికింద దూరి
 నాతల్పాచగు శేషుని నాయంబున నాతంబును హరింప చేయుచు
 కాపాడుచు. నీవును ఆసరికిం దరుదెంచి దానినెక్కునువి మీనంబు
 జలరాశిమధ్యంబునం దూరె నుత సత్యవ్రతుడు నగరంబుచేరి దన్భ
 శయ్యయందు తూర్పుతలగడగాని యమితకాలంబున కెరుచుచూచు
 చుండి—

మంజు—అంబరమున మేఘంబులుదాఁరెను ! యమితచీకటులుగ్రహ్మక
 లంబుధారలొక విధిగాఁబవ లమితమ్ముగ దాగురియకః

గీ. కడలులన్నియు చాలియలికట్టదాటి
 విట్టకల్లంబులేక మై మేదిసి త
 లంబు లేకుండసల్పె జగంబుసృష్టి
 చేయుటలుమాని కనుమూసె సృష్టికర్త

కం. అప్పుడు హయగ్రీవుడుదా ! కపటతనో తెంచిధాత కవవేదంబుల్
 కృపణత గొనిచనిజలనిధి । నపుడేడైరదూర హరిమహామీనంబై।

ః జుక్తానోపకాంతిః సుఖాచరః లబ్ధాః
 సుఖానాం సుఖైర్జితైః
 సంశయేషు ముఖ్యములను పునఃసంశయముచేసినాడె
 సన్నుతలక్షణముగ నె యానందముగాను'

వచః అంతః సత్త్వవ్రతుండు యుద్ధించి యానానందపై నెక్కి సుఖంబుండె
 మునులుం దాను నమ్మినాకాక కలమూర్త్యుగాంచి-

కవచం—సమస్తం తే.

శు. సకలలోకావనా, సుక్తితీర్థస్తపాలనా, సక!
 అ! వికసిత్వానేత్రచురస్త్రత విమలకాంతి నుతపాత్రా! సక!
 చ నిర్మలాంగినిర్వికార నిజలహరిసంహరి
 కర్మహర గరుడగమన, కనకచేల పీఠపాల! సక!

వచః అనిప్రాప్తించిన వారి సత్యవ్రతా నీవిక వివస్వతుండన బరగు సూ
 ర్యునకు శాన్తిదేవుండను పేరునొఱచించి నైవస్వతుండను పేర నేడవ
 మనువుగాగలవు అని యెరిగించె. నంత పెద్దకాలంబునకు విధాత
 మేల్కొంచ పశ్చిమంబంతరించె. జలమంతయునికి మేదిని గనం
 బడియె నపుడు శ్రీహరి మోనాకారంబువదలి వేదంబులు విధాత
 కొసంగి మునిజన నుత్పంజై యంతర్హితుం డయ్యెనని శుకమహర్షి
 పరీక్షన్మహారాజా యిది శ్రీమహాభాగవతము దప్తమస్కంధము దీని
 నాలించిన పఠించిన చిరమోక్షంబు లభించునని యెరిగించిన-ఆవలి
 కథానిధానం బాసకీయవేయన-

శ్రీ శ్రీ శ్రీ శ్రీ శ్రీ.





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ಶ್ರೀನಿವಾಸ ಶ್ರೀಪಾದ್ವೈಯುಃ.

(అ) ఆ ఆదేశము.

(హానికాఢం) నవవం: స్క-ంథము

20.

9. అర్జునోదవాగ్ధానము.

మరిజ—మునుపుఁ జూమ్మా చనుచకు । సుకి ముచినాఁడుఁ జిమిలనియె

వినుముసూర్యనంశంబొరిగించెడి విష్ణుప్రభాతయగనియె

2 ధాతకుమరీచి నాబడఁగుచుండు | తనయూర్జై జన్మించె

ఆతినికొమరుడు కష్టపుండు ! నానవనిని దగచెన్నొంచెకా !

వచః। ఆకశ్యపుండు దక్షునిపుణ్ణియగునవతివలన సూర్యునిగాంచె నయ్యా

దిత్యుడు సంక్షాదేవియందు శ్రాద్ధదేవుడను మనువునుగనియె. నతం

దు శ్రద్ధయను సతివలన సంతాన విరహితుడై.

గీ! కులగురుండు వశేష్ఠుండు కూర్చినముని

గణముమెచ్చగ సంతాన కాక్షచుఘము

సర్వకాతనికొకపుత్రి, జననమందె

నేల పుత్రికయని రాజు జాలిదూలె!

జ.జ్ఞ. జన్మస్థానమునకును తపోవలంబు నాయులాబాలను సుద్యుమ్నండు

గామార్చిన యశ్శాలుమ పెద్దయె రాజ్యంబుచేయుచు-

మూజ—బి.పొకతరి ఘోరాటవిద్యుగముల నొంచుకాంక్ష పేరేష

దండిసెనికుల గొనిచనిదునిమెను । దరిమెనుశూరతజూపు

వచ్చి అబ్బరణ్యంబున చనిచని కుమారవనంబు వొచ్చినంత:-

౧. హయకు పరిమలయై యడలఁజేసెనును

రాగముని విక్రేమమునోయె

నది నెరుగెను వియవనీపది సెన

నలు కేరికలకు నానోము

వచః సుకుంభిల్లనియె నొకఁడని శాస్త్రాశ్రయు నభిప్రంకు నవ్వనంబున
విహరించుతరి మును లగుమెంచి పరికించి నెరువెగించని రదికారణం
మనా పవనంబునోద్భవ వారెవ్వరైన నబల లగుచు గాకయని
పార్వతి శాపంబుచ్చె నాకతుంబున సున్దరమౌనులు తరుణులై రట్లు
కాంతిలై విహరించుచును-

మంజ—చంగురుకొమరుని బుధివోక్తెడ నాచుండరాంగిబాడగాంచి
మోనిమనశ్చెనె నుగవిచరిముల పిలవెనానిగాంచి

2 యిలయును మది నోదేకంబున నామును తనయుగోరి

పలవించుచు కేరతమునుట వాసంబొనరించెనుమిరి||

వచః వారలకు పురూరపుండరు కుమారుడుడవయించి చంద్రీవంశము
నకు మూలకందంబయ్యె. నట్లు సున్దరముండు యటవీకరుగు కతన
మనువుమనల యక్షంబాచరించి యున్నాకును, నృగును, శర్యాతిది
ప్రేమ, దృష్టదు, గిరూశకును, నరివ్యంతును, బ్రహ్మమండు, నభగుండు
గవియనుకుమారులంకాంచెను. వారివారివంశంబులు వేరువేరుగా
పాడవైన వందు దిష్టానికులంబెరిగించెద నాలింపుడు—

మంజ—అదిష్టానిగర్భంబునబుట్టెను. యాభాగుండరువాడు

నాదటకర్మవంబున! వైశ్యుండై చెలంగెననతడు!

వ. నాభాగునకు హలాధనును, అతనికి వత్సక్రీతియు, నతనికి పాంశువు
నతనికి బ్రహ్మని, యతనికి ఖనితుడు, వానికి జాక్షుఁడు, వానికి వివిం
శతి. వానికి రంభును, వానికి నఖనినేతుండు, వానికి గరంధనును, అత
నికి యదీప్తియు, వానికి మరుత్తను చక్రవర్తియు, నతనికి దముడు, నతనికి
రాజవర్ధనుండు, అతనికి సుదృతి, యతనికి సౌధృతేయును, వానికి గేవ

లును, వానికి బంధువునుతును. వానికి వేదవంతును, వానికి బంధు
గును, వానికి తృణవిధువులునును నదిగాక మనువునునునును బృహ
హస్తింను తిరువలికరికె విక శిర్యాతినుశేం బాలింపుము.

మ. మునుశిర్యాతి శిర్యాలువాత్మియత సాంపుష్టిర తోష్టజనక
చనులగుమ్మియచో శుకస్యకమహావల్లీకముండాపి దా
నన నన్యాయుని కాంతిగాది తృణముంకొంచు గుమ్మకథరా
జనంపుం: శిమాకె యంధులును కేచుదంబు చిత్రంబుగాక.

వచ: శిర్యాలుం శింకుకేమి కితిమాయుని విచారించి గతంబెరింగి వల్లీ
కంబుడాసి యందు తపగావరించు చ్యవనమునిం గని నమస్కరించి
తన కుమారక నాయనఘనకొసంగె నాయిమములంగె నమ్మని
యాబాలికంకూడి కాపురింబున్నెడ నెప్పటిదేవత లరువెంచి యాతి
ధ్వనింబడి యమ్మని నమిలియన్దిన విలాసునిగావించిరి. ఆశిర్యాతి
శిర్యాలునకు ఆవర్తంబు, ఆతనికి చైవతుండు, వానికి కేవలీయను
బాలిక జనింపు నామెను ఎలరామునకొసంగెను. సంతతో వానివంశ
మంతరించెను. యిక నాభగునికి నాభాగుండును, వానికి విష్ణుభక్తు
డైన యరంభోడు మదయుచె నతనిపల్ల విప్రశాపంబును రిత్త మయ్యె
నవిప్రశాపం బాలింపుము.

పూరికల్యాణి—ప్రకృతి

ప. అంబరీషునిచరితము | హరిమరితము రసభరితము! అంబ!

అ. అంబరచరవినుతము ఘన! సంబగు మోక్షాకరము! అంబ!

1 హరిభజనామలము | అతిపావనతరము ధీ

కర దురితహరము భక్త! తతివినుతంబగున! య్యంబ!

గీ! చిత్తమబ్జాక్షుపాద సతీవయంద

చూపులామురవైరి శీహూపమంద

కరములా పద్మనాభుని కార్యమంద

నిల్పుసతతము యాధరానేత నిజము!

మ॥ హయమేధంబులొనర్చె పెక్కురుమునుల్ యచ్చించె నారాయణుం
డె యటంచెంచి సమస్తధర్మముల దా నెమ్మిన్నొనర్చె మదిన్
ప్రియకాంతాసుత బాంధవప్రతి యుద్వేగముల్ మిథ్యయుం
చు యెడ న్నెంచును నంబరీష విభునెచ్చిసాటి వారుండురే॥

మంజ—ఆవిభుడేకాదశీవ్రత । మొకడాచరించు నెపుడు
దేవచతుర్ముఖ యర్థులెల్ల । భూదేవులుసంతసమందన్॥

గీ॥ అదియెటులటన్న వినుము పత్రిదశమిని యొ
కపరిని భుజించి యవల యేకాదశి నువ
వాసమొనరించి ద్వాదశి పారణ యొన
రించునారాజునిచ్చలు పేమమీర॥

మంజ—కాళిందీతీరమ్మున వ్రతమును । గడపుచుండనొకనాడు
బాళిముక్కోపి మానించుచు, దూర్వాసుడు యటజనినాడు॥

జంక్షోటి—రూపకం

ప॥ దేవా ధన్యులమైతిమి । తావకాగమనముననో॥ దేవా॥

అ॥ పావనతంగాంచెనాదు । భవమువ్రతము భవనమును॥ దేవా॥

మి॥ నీవిపుల కృపానిభూతి । నెన్నతరమెయజునకైన
సేవించెదమీపదములు । శ్రీకాకరమనితలంచి॥ దేవా॥

2 ఏకాదశీవ్రతంబు । సేనాపర్వుచుంటినేడే

చేకూరెనుద్వాదశియిక । చేయవలయు పారణము

మి॥ లోకస్తుత్యప్రభావుడ । ఏకరణి లభించితిదయ

చేకొనియాతిధ్యము । నాశీర్వదించి చుడయ్యా॥ దేవా॥

మ॥ అనిపార్థించిన వలెయంచు ముని స్నానార్థంబు కాళిందికిన్

జనిస్నాతుండయి ముక్కుమూసుకొని యజ్ఞాధీశునింగూర్చి పార్థ
ర్థనలంజల్పుచు నుండ ద్వాదశియు వంతంబుండుకాలంబు డా
సిన రాజేంద్రుడు వ్యర్థమావ్రతము నేజేయంగ నేమున్నదో॥

పచ॥ అని విచారించుచుండ కాలాతిక్రమంబగుచుండె నిక ద్వాదశి రెండు
ఘడియలకాలంబు మాత్రంబుండె నాలో పారణగావతె-

రాగవద్గీతి—త్రిశ్రగతి

ప॥ ఎట్టి మోరసంకటము నీశ్వరా! సమకూర్చితివో॥ యే॥

అ॥ కిట్టామునిరాడుపోయి । కాళిందీనదికిమరలి॥ యెట్టి॥

2 ద్వాదశిఘటికలుయన్ని । దాటిపోవుచుండెవ్రతము

భేద మొసగె పారణ యిం । కెటులుజరుగు భయముగల్గు॥ నెట్టి॥

సీ॥ కడుపావనంబు యే కాదశీవ్రతము జీవితకాలమొనరుపబ్రీతిగంటి

దూర్వాసుడారాడుతుదియయ్యెద్వాదశి పారణసల్పవి సాపమొదవు

మునివీడిపారణ మునుజల్పగారాదు యిదియునుసాతక హేతువెయగు

నవనీసురులుక్షుధ నాగజాలక పంక్తులందీర్చి కూర్పుండ్రముందునాకు

నూయి. వెనుకకుదిరిగిన గోయిపగిది

యయ్యె పారణసేయటా యాగుటా యి

కేమిగావించునని విచారించు సంబరీ

మనకునెల్ల వే త్రలీ చీతిననిరి॥

మంజ—ఓయిన్మపాలా యోచించుచు । నటులూరకుండె దవిడేలా

పోయినద్వాదశి వ్రతభంగంబగు పొద్దుపుచ్చగానేలా

2 ద్వాదశిఘడియల జలపానంబున । పారణసేయుటచాలు

యాదటదూర్వాసుని తోభోజన । మారగించుటలుమేలు॥

గీ॥ యిట్లుగావింపనుభయుల కెగులేదు

వ్రతఫలంబును ప్రిప్తించు పరమమౌని

రామిభుజియింప కుంటను లగ్గుగాదు

యనగసరియని జలపాన మాచరించె॥

వచ॥ ఇట్లు జలపానంబున ద్వాదశీపారణ మాచరించిన కొంతవడికి యా

దూర్వాసుండరుడెంచి—

ఉ॥ ద్వాదశిమారిపోవుటలు పారణసల్పుటలో నెరింగి యే

రాదురితాత్మ కావరము బ్రాహ్మణశక్తి నెరుంగవొక్కొనక

సాదము మెక్కరమ్మని విశంకటవృత్తి ననుకత్యజించి నీ

వాదట పారణస్సలుప భావ్యమెనిర్భయ ఘోరత చెల్లునే॥

వచ॥ అనికోపించి యెందరెన్నిగతుల విన్నవించినను నాలింపక నాశక్తి
నిం దలంపవే యదే నిన్ను హతమొనరింతును గాకయని—

మంజ—జలనోకండు దావెరికి మునీందుగ్గుడు । క్షౌపాలుదెసవదలక
పటపటార్భటుల ఘోరశక్తి । సంభవమై సృపులెడవులక ॥

గీ॥ విప్రతండంబు చెదర ఓన్వీధినుండి
హరి సుదర్శన చక్రంబు నంబరీషు
రక్షణ నిమిత్త మంపగా తక్షణంబు
వచ్చి మునిజట శక్తిని వచ్చివైచి॥

వచ॥ శ్రీహరి భక్తులకుం గీడాచరింపందలంతువాయని దూర్వాసు
వెంటనంటిన సతండతిభయ విహ్వల మానసుండై బిరబిర—

మంజ—దివిదూరం దివిదూరువనుల । యందేగిన వానితోనేగు
భువిలోచొచ్చివచ్చొచ్చుయెట । జనబూనిన గనితోనేగు॥

గీ॥ యిట్లు చక్రంబు వెన్నంటి యేగుదేర
హానివరుడాత్మ జీవితాశాని పీడి
తాత్పర్యై సత్యోకంబు సరగి భార
తీ మనోహరునిట్లు ప్రార్థింప దొడరె॥

మ॥ అనఘా విష్ణుసుదర్శనంబిదె మహాగోగ్రాహ్యులలక గోక్కుచుక
ననువెన్నాడె వధింప నీపదములే నాకింకదిక్కుంచు భీ
తిని మీసన్నిధి చేరినిగ్రుణ నీదీనాత్ము చక్రానలం
బున జానీకయనుగ్రహింపవె స్వయంభూ భక్తసంరక్షణా॥

వచ॥ అని ప్రార్థించు నమ్మునికి విరించి యిట్లనియె—

గీ॥ విష్ణుచక్రంబు వారించు వెరవునాకు
గలదెయూతని పుత్రుండ కమలనాభు
కరుణ సృష్టిని గావింప గల్గినాడ
వెరువనేటికి పామ్మ శ్రీవిష్ణుకడకు॥

మంజ—అనియెరింగించిన హరిపాలిటికిక । పరిగివ లాభంబేమీ
దునుమ చక్రమంపినవాడే । విధినను పాలించునుబూసి॥

గీ॥ దివిజవాహిని భరియింసు దేవుడింక
దిక్కునాకని దూర్వాసు యొక్కపరుగు
తోన కైలాసమరిగియెంతో భయము
గమరశంభునిగాంచి యీగతినులించె.

భగవద్గీత—రూపకం

ప॥ పరమేశ్వర కరుణాకరనిను । శరణంటినిరా

అ॥ దురితాటవి దమనాముని । తోషితవరప్రదాన॥ పర॥

1 వారిచక్కానల జ్వాలను । హతముగాగమంటిని
కరుణింపుమునీదానుడ । కనకాచల కామ్యకహర॥ పర॥

2 నీవెనాదిక్కుసకల । నిర్జరవందితపాద
దేవాభక్తుడమానిత । దేవగణాదుర్వాసుడ॥ పర॥

గీ॥ అనుచుప్రార్థించు దుర్వాసుకనియె మునివ
రా వారికినిజంకిన సినురక్షసేయు
శక్తియేరికి గలదు యీశ్వరమలికేల
పొమ్ము శ్రీహరినిండాసి మ్రొక్కుకొరకు॥

వచ॥ శరణాగతత్రాణ బిరువాంకితుండగుట తప్పక రక్షింపగలదు అని
యెరిగించిన మునికులగర్వింపండగు దుర్వాసుండు వైకుంఠముంజేరి
హరినిగని-

ఉ॥ నీమహిమార్ణవంబు తుదినిం గనజాలగ శక్తిలేక నీ
ప్రేమనుగన్నభక్తులను గ్రించుడనంబొనరింప నెగ్గుతె
న్నో మహానీయ సల్పితిని యుమ్మలికంబును బొందిదేవ నీ
నామమునమ్మినచ్చితి ననాధకృపాకర నన్నుబ్రోవవే॥

కం॥ తవచక్రానలజ్వాలల । భవనంబులు భస్మమంద బోయెడు నను నీ
పవిత్రప్రేమంబునగన్లు । మవనీధవభక్తపాల నాహరియనుచు॥

వచ॥ ప్రార్థించిన శ్రీహరి తాపసాబుద్ధిమంతులగు నాభక్తులు నన్ను భక్తి
పాశంబులం బంధించివైతురు. భర్తులందుజనినను గోపువెంటదగులు
కోడవిధంబున యనుసరింతును. తను మవధనంబులు నాయధీవం

బాచరించి దారాసుతాదులయందు మమకారంబువీడి నన్ను నమ్మి
భజించినవారిని వీహంజాలను పంచేంద్రియంబులు వర్జించి వడ్డికా
రంబులడంచి నన్నెల్లప్పుడు స్మరించువారికి నాకు నావంతులును
భేదంబులేదు. గాన నివ్విధంబుగా నేనత్తుడై యలరారు సంబరీషునకీ
చక్రింబు స్వాధీనంబైనది గాన వాని నాశ్రయింపుము నేనతండగుట
నిన్ను రక్షింపగలడు—

మంజ—అనియెరిగించిన శ్రీహరివచనం । బాలించిముసీందుగిండు
వెనుదవలిన చక్రానలమున కతి । భీతియుతుండై ముందు
2 బిరబిరపరువిడి యంబరీషపుప । పరునిపాదముల చెంతకా
నొరిగిశరణుకాపాడుమునన్న ని । యున్నవానిగనియంతకా ।
గీ । అంబరీషుండు కరుణ నయ్యవనిసురుని
లేవగాదీసి మిమ్ముగారించినట్టి
తప్పునైపుము మునినాథ దయదలిర్ప
నింక చక్రానలముభీతి యేలతమకు॥

వచ॥ అని యూరడించి సుదర్శనంబునుచూచి హేచక్రరాజమా! సమ
స్తంబును నీవయే నీక క్తి నెరుగ నేరితరంబు నిదురలో నినుగాంచి
దనుజులు వెండియు తెలివిగనక దీర్ఘనిద్రాంగాంతురు. నీపాదభక్తుండ
నగు నన్ను మన్నించి యీ మానివర్యుగాపాడి హరిమందిరంబు చేరు
మని ప్రార్థించిన రక్షకుల గొంగయగు చక్రింబు యంతర్హితం
బయ్యె నంత దుర్వాసుడు అంబరీషునిగాంచి—

పాప—ఏకతాశం.

ప॥ అతుల దివిజసన్నత మీచరితము । అంబరీష సార్వభౌమ ॥అతు॥

అ॥ నునియింపగ దరమే నీ । స్థితి శ్రీహరిభక్తి రతి ॥అతు॥

1 ఆకలములు నమలుచువను । లందు పెద్దకామముండి
జోక తప మొనర్చునుమ్ము । గాకనిన్ను పొగడె శ్రీహరి ॥అతు॥

2 నీపవిత్రచరితవ్రాయునేని । చదువ వి నెనేని
పాపశరధి గడచి విష్ణు । పదమును చేకొందురుభువి ॥అతు॥

వచ॥ అని వినుతించి యాతిధ్యంబుండి యధోచ్చం జనియె. నయ్యంబరీషు
నకు విరూపాది తనయు లుదయించి మశంబు నభివృద్ధిగావించిరి.
యింక నిక్షావుకు వంశింబాలింపుము. ఇక్షావుకునకు కుక్షియు,
వానికి గకుత్సుకు, అతనికి నేనసుడు, వానికి పృథుంకు, వానికి విశ్వ
గంధుకు, వానికి చంద్రుడు, వానికి యవనాశ్వండు, వానికి శవస్తుండు
వానికి బృహదశ్వడు, వానికి గువలయాశ్వడు, వానికి ధృతాశ్వ
డు, వానికి హర్యశ్వండు, వానికి నికుంభుకు, వానికి బర్హిణాశ్వడు
వానికి గృతాశ్వకు, వానికి సేనజిత్తు, అతనికి యువనాశ్వడు
జన్మించిరి—

మంజ—ఆతడు సంతానార్థియై యొక్కయోగంబును గావించె॥

బ్రీ॥ మంత్రజలకలశము సతికిప గాడలంచదగదాచె॥

గీ॥ దప్పిగల్గినపుడు దాని నెరుంగక

త్రావిపిదప నోగి తల్లడిల్లి

చూలుమోసిపాట్ట వీలిచచ్చిన బాలు

డుదృఢించె చిత్రమొప్పునట్లు॥

వచ॥ అంత నిండ్రుండరుదెంచి నృపాలుని బ్రీదికించి బాలుని యాకలిదీర
నోర దన వ్రేలిడిన కతన నతండు మాంధాతయనంబరగె నామాంధా
తకు శశిబిందుని కూతురగు బింతుమతియంను పురుకుత్సుకు, అంబ
రీషుకు, ముచికుండుకు నను మువ్వరుతనయులును యేబదిమంది
కూతులుంగలిగిరి. ఆబాలికలందరు యమునానదిం జలకంబులాడు
సౌభరియునిగోరి వరించిరి, మాంధాతకుమారుండగు పురుకుత్సుకు
నర్మదయును నాగాంగనను వరించి నాగలోకంబున పెద్దకాలంబుండి
మరిలివచ్చి ద్రౌపదన్యుని గాంచె. సతనికి అరణ్యండు వానికి హర్య
శ్వండు వానికి అరణుండు వానికి త్రిబంధనుండు వానికి త్రిశంకుండు
జన్మించెను. అతండు గురుండగు వశిష్టు శాపకలంబున చూడాలుడై
విశ్వమిత్రు నాశ్రయంబున దేవలోకందేగి వారిచే తీరస్కరింపబడి
తలక్రింమగా నాకసంబున నిలచె. నాత్రిశంకునకు హరిశ్చంద్రుడు
జన్మించెను—అతండు—

సీ॥ అన్యతమాడగ లేక యఖిలధరాతలం బలకౌశికునికిచ్చి యడవి జొచ్చి
 గాధేయకృత ఘోరికిష్టును లదాటి కాశీపురమ్మన తనచెలువనమ్మి
 చండాలదాసుడైచని యణమున్నుడై బాధలు దలగి యీశ్వరనికృపను
 మరల ధరాతలపరుడై సుఖంబున్నయంత వశిష్టుండు నాగ్రహమున
 కౌశికునిజూచి నరపాలు గాసిపెట్టె
 తొర గృధ్రము చూపుగొమ్మంచు తిట్టె
 గాధిసూనుడు యతని బకంబుగాగ
 కోపమున నొడలెరుగక శాపమిచ్చె॥

మంజు—శాపంబుల కతమున నిర్వురు । పక్షములు గల్గియంత
 చూపోపక పోరాడుచునుండిరి । చూడచిత్రముగ నెంత॥

వచ॥ అంత హరిశ్చంద్రుడు సంతానార్థయై యాగాదు లాచరించి నిష్క
 లుండై వరణుగూర్చి తపంబాచరించ సతండు వరదుండై నీకు సం
 తాన ఫలంబులేదు. ఐన నీకు వరంబొసంగనిచ్చ వొడములుగజేసి
 కుమారునొసంగుదు నతని పాలామంబాచరించ నొప్పదేయన సం
 తానాసక్తు డగుట వలెయన వరుణు డంతన్ని తుండయ్యె—

గీ॥ చంద్రమతి చూలునాల్చి పృజ్ఞావివేక
 వంతు పదియననెల నొక్కబాలునిగ నె
 పారులెల్లరు సంతస భరితులగుచు
 పబ్బమునరించి రావిభుండుబ్బిపొదల॥

మంజు—పురిటిలోపలనె వచ్చివరుణుండు । పుత్రువేల్పుమనియె
 ధరణీశుడు యాహరిశ్చంద్రు । డత్యంత శోకముగనియె॥

వచ॥ పుత్రీవక్షాబద్ధుడై త్రిశంకునందనుండు పురుడు వెళ్ళనిది పనికి
 రాదని వరుణుం బుచ్చెనంత—

మంజు—పురుడువెళ్ళినంతవచ్చి వరుణుడు । పుత్రువేల్పు మంచనియె
 నరనాథుడు పలురాకయున్న । యన్యాయంబౌ నంచనియె

2 పలువచ్చిన వెనుకనుయా వరుణుడు । బాలువేల్పు మంచనియె
 యిలపతి విద్యావిహీను వేల్వగ । నెట్టులు తగునంచనియె

3 చదువుకున్న పయివచ్చియింకయిన | నల్పును హోమంబనియెన్
 కదనంబులు గావించి జయంబును | గనమిలాభ మేమనియెన్॥
 వచ॥ ఇట్లు పుత్రప్రేమంబున జరుపు తండ్రిని గని లోహితుండు వని
 కరిగె. నంత హరిశ్చంద్రుడు వరుణపీడితుండై మహోదర వ్యాధిపీడి
 తుండయ్యె. నచికర్ణాకర్ణిగాపని—లోహితుండు అజీగర్తు మధ్యమ
 తనముండగు శునకశ్చేపుని యాగపశువుగాగొనివచ్చి యాగమాచ
 రించిన వరుణుండు వరదుండైన కతిన హరిశ్చంద్రుడు రోగబాధా
 నివారితుండై విశ్వమిత్రే పశిష్టుల శాపంబులుదీర్చి లోహితుని
 రాజ్యాధికారిం గావించి యోగముద్రాంకితుండై యెరుకను వర్జించి
 పరిపూర్ణంబెరిగి నిర్వికార సమాధియందు పునర్జన్మ రహితుండై
 చెలగె—

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.

—:0:—

10. సీతా కల్యాణము (హరికథ)

—

మంజ—యీవిధి భాగవత కథా | కలనేచ్ఛదవిలి నృపవరుడ
 దేవా యావలి సూర్య | వంశమును దెల్పుడు వేనాకిపుడు॥
 వచ॥ అనిన శుకుండిట్లనియె. నాలోహితునకు హరితుండు వానికి
 జంపనామకుడు వానికి సుదేవుడు వానికి విజయుండు వానికి రురు
 కుండు అతనికి వృకుండు వానికి బాహుకుండు జనించి రాతడు—
 గీ॥ రాజ్యమెల్ల శత్రురాజులు హరియింప
 సతులతోడ వనుల చాలకాల
 ముండి కాల వశతను సురులు దొరగెను
 కర్మగతిని చాటగలరె యెందు॥
 వచ॥ అతని పట్టమహిషి సహగమనం బాచరింప నుండ యశార్యమునీం
 దుగ్గిడు గర్భవతివగు నీకిది యొప్పుడని వారించె. నంత కొంతకాలం

బున కామెసవతు లోర్వరు నన్నంబున విసంబు గల్పిపెట్టినం జావక
ద్దానితో వెలికరుదెంచు కతన సగరుండన నప్పుత్తుండలరె. నతండు
పితృవిరోధనంబునంజేసి శతృలగు మైహయాదుల నిర్జించి వాజిమే
ధం బాచరించుచున్నంత నిండుకా హయంబునుగొని రసాతలంబున
కపిలమౌనిదరి నిల్చిన—

మంజ—సగరుడు హయంబుగనగాబంపెను । చారుల కొమరుల నెల్లరను
జగతీతల మెల్లవెదకి దానిని । గనజాలక వారందరును॥

గీ॥ పటుబలంబున భూమినొక్కట పెకల్చి
నాగలోకంబునండు రంగంబు గాంచి
దొంగమునియని తలచి నొవ్వంగజేయ
మునికనులు దెరువగా వారు బూదెమైరి॥

వచ॥ యీ వార్త నారదుమూలంబున సగరుండెరింగి మనుమండగు నం
శుమంతునింబంప నతండు తండ్రిలు ద్రీవిన్ బలమార్గంబున నాగ
లోకంబునకరిగి కపిలమహర్షింబ్రార్థించి తురగంబుదెచ్చి యాగంబు
పూర్తిగావించె. నంతతండ్రిల భస్మరాసులమీది కనిమిషనదించెత్తు
నని తపంబు గావించుచు నంశుమంతుడుదీరె అతని కుమారుండగు
దిలీపుడు నల్లై కాలగతింబొందె. నతని తనయుండగు భగీరథండు
తపంబున గంగనుమెప్పించి శివుని జటాజూటమునుండి యిలయందు
ప్రసితామహుల భస్మరాసులై పారించె నిట్లు—

మంజ—భగీరథుని యత్నంబున భూమిని । పారుచున్న కతమునను
జగమున భగీరథియన మునిసన్నతమై యన్నదితనరు॥

వచ॥ ఆ భగీరథునకు శృతుండు వానికాభావరుండు వానికి సింధు
దీప్తిపుండు వానికి యుతాయువు వానికి ఋతుపర్ణుండు జనించినలుని
పోషించి యతనికడ నశ్వహృదయంబను విద్యవడసె. వానికి సర్వ
కామండు నతనికి సుదాసుడు పుట్టె—

సీ॥ అసుదాసుడు వేటకరిగి వనంబున నొక్కరక్కసుగని యుక్కడంచె
వానితమ్ముడునడ బాలవర్తనమున సరపాలు నింటనుండగ నొకతరి

గురుడగు వసిష్ఠు గుడువచేయగవలెనని తెల్పవాడుబ్రాహ్మణునిజుపి
 వండివడ్డించిన వాశిష్ఠు డెరిగి కోపించి శపించె భూమిశురాక్ష
 సుండవగు మనియాతండు స్తుతినొనర్చ
 గరగి పదిరెండుయేండ్లు రక్కసుడవగుము
 నాగనట్టులెయని రక్కసా కృతిగొని
 అడవులచరించె నారాజు యపుడెగదవి॥

వచ॥ ఒకానొకతరి ఆకటమాడుచు విప్రదంపతులం గని మగనింబట్టి
 భక్షింపనున్న సతిహఃఖంబున పార్థివచినను వినక మృగంబుచందం
 బున నతనింభక్షించిన నాపతివ్రత నీవు సతింగలయువేశ మృతినందు
 దువు గాతయని మరణించె. నది కతన శాపవిమోచనా నంతరంబు
 సంతానంబులేమి వందుర వశిష్ఠుఁడొక కుమారు ననుగ్రహించె.
 నతండు పరశురామ వీరవిహారకాలంబున స్త్రీరూపధరుండై దాగు
 కతన నారీకవచుండన బరగె. నతనికి విశ్వసహుండుపుట్టె. అతనికి
 ఖట్యాంగు డుదయించి మరణకాలంబున రెండుగడియలు హరినామ
 స్మరణంబాచరించి వైకుంఠము చేరె. నతనికి దీర్ఘ బాహుండును
 వానికి రఘువు వానికి పృథ్వీపుడు వానికి అజంఘ వానికి దశర
 థుండును జన్మించెను.

మంజ—ఆనరపాలుడు వరియించెను । మహిళామణుల న్నుభగూణుల

మానిత పాతివ్రతల సుందర । మంజులదేహిల మువ్వురను

2 కౌసల్యయు సుమిత్రీకైకన । గాబడుమేలులవారి

భాసమాన సద్గుణులనుదివిజ । భామలనగ దగువారి॥

గీ॥ పెద్దకాలంబు వారితో తద్దయుసుఖ

ములనుగాంచియు సంతానముం గనకతి

దుఃఖమునుబొంది గురుహితోక్తులను నొక్క

యాగమును పుత్రకామేష్టి యనగసల్పె॥

వచ॥ ఆయాగవహ్నినుండి పాయసంబువడసి దానినిసతులకొసంగె. వార
 లద్దానినిభుజించి నెలలుదప్పి-

సీ॥ నవమాసములు నిండినన్ చైత్రశుక్లనవమి పునర్వసుతారపగలుకోస
 లాత్మజగర్భంబు నందుండిశ్రీవిష్ణు మూర్తూవిలాసంపు మహిమరామ
 చంద్రుడైజనియించె సరవిశేషయ రాజ నందశమరునాడునుండరాంగు
 భరతునిగనియె నావల సుమిత్రకుమారు లంగ నెలక్మణురాజితయకు

డైన శత్రుఘ్ను దశరథుం డతులముదము

నంచెలంగగ వారు నానాటబెరిగి

పెద్దవారయి సకలమా విద్యలెరిగి

యవలనుపసితులై యుండిరంతమీద॥

మంజ—ఒక్క దినంబు నృపాలుడు । కొల్విన నున్న వేళ నయ్యెడకు
 అక్కటికంబు దలిర్ప । కౌశికుండరుగు దెంచె మేలునకు॥

శ్రోతిస్వరూపిణి—హుషం.

ప॥ కుశికాత్మజ ధన్యమునా । కులము జన్మమును నిక్కము ॥కుశి॥

అ॥ కుశలమెసీ ఛాత్రతతికి । కూర్చునే మోదంబుమదికి॥ కుశి॥

మి॥ పశుపతి నిన్మెప్పించిన । పరమతపోధనులుమీరు

విశదమయ్యె తనమహిమం బేరికి । సాధ్యంజాను॥ కుశి॥

2 నాకుజనించిరి యీలోసీ । నందనులున్ దిట్టించుడు

మీకు మొక్కచుండిరిదే । యమేయ గుణాదీవించుడు

మి॥ నాకోర్కెలు తమదర్శనంబు । కతనదీరిపోయె

నోకౌశిక నాపనియె మున్నదో । తెల్పుడొనరింతు॥ కుశి॥

గీ॥ అనుచు పూజించి పార్థింపు నధిపునక నె

గాధినందను డేనుయజ్ఞంబొకండు

బూనిగావించు నపుడెల్ల మూర్ఖుడనుజు

తెరిగి చెరచుట సాగదు ధరణి నాథ॥

రావప్రియ—ఖండగతి.

ప॥ ధరణీశ శ్రీరాము । దనుజ వధార్థము బంపుము ॥ధర॥

అ॥ చిరుతవాడని తలపకు । చిరకీర్తినార్జించు ॥ధర॥

1 రక్కసులనురుమాడి । వ్రేతముసాంగముగదీర్చి

పెక్కులోకములగాచి । యిక్కడకుచనుదెంచు॥ ధర॥

చం॥ అనితనుగోరుకొళికుని యాస్యముచీసిత దోపజూది 'యి
 ట్లను ధరిణీశుష్కముని వరాకడుబాలును రాముడేడ దు
 ర్జనులగు రక్కసాధముల జంపుటదేడ నిటుల్ వచింప మీ
 మనమెటులొప్పినాకు ననుమానముభీతి జనించునక్కటా॥

గీ॥ వలయునెడనేనవచ్చి దుర్వారగర్వ
 మున చెలంగెడు రక్కసులనునధింతు
 వనిన గాఢేయడశిమంద హాసమునను
 దశరథాచారు భయమేల తలగుమనస॥

హిం॥ ముఖారి—త్రిశ్రవతి

ప॥ పంపజాలను । మునినాధరాముని॥ పంప॥

అ॥ చెంపగారుపాలు । చిన్నిముద్దుబాలు॥ పంప॥

మి॥ గంపిలెనాదేహము । మీరంపుచున్న మాత్రీముననే
 తెంపరినై దానవులకు తినుమని బలియినొల్లను॥ పంప॥

2 యిట్టికోర్కెగోర । హితమానమీకు
 కట్టడినై యెట్లు గావీడియుండుదును

మి॥ ఎట్టులైననేనవచ్చి యీ । కార్యము దీర్చెదనే
 గిట్టినచోచింతలేదు కేవల । మె వృద్ధుడనిక॥ పంప॥

గీ॥ అనుచుశ్రీరామునంప లేనంచుబలుకు
 దశరథునకను నగ్గాధి తనయుడొర
 యినకులంబున జన్మించి యిట్టులాడి
 తప్పుదేమంచి దేగెద ధరిణీనాథ॥

మంజ—అనికోపించి చనంగనున్నయెడ నత్తాపసివారించి
 మునినాథుండు వశిష్ఠుండిట్ల నె భూనాయకుడిలకించి॥

చం॥ జనవరరాముబుపుము నిశాటులద్రుంచి మునీంద్రుయజ్ఞమున్
 మనిచి శుభంబునంజెలగి మానితినిర్బరులై పురంబు జే
 రును భయమేల శ్రీహరియెగోకముల స్మనుపంగిట్టులన్
 జననమునందె కొళికుడ సాధ్యుడుసంతస పెట్టిభంపుమా॥

వచ|| అని వశిష్ఠుండు కలతెరగరింగింప గాధినందనుడు కోరినట్లు శ్రీరామ
లక్ష్మణుల సలంకృతుల నొనర్చి సభాగారంబునకు రప్పించి ముద్దాడి
దశరథుడిట్లనియె.

సావేరి—చతురశ్రగతి.

ప|| పోయిరండు తనయులార! మునినాథునితోడవనికి! పోయి!

అ|| శ్రేయమలర దనుజులవధ! జేసి సవనమునుగావగ! పోయి ||

1 లేకలేకజన్మించిన! లోకనుతులు మిమువీడక
లేకయుంటిపనులుదీర్చి! లేకకడ నాకడజేరుడి|| పోయి!

గీ|| అనుచుముద్దాడి రామలక్ష్మణులబంప
వారు కుశికాత్యజునివెంట వనులజొచ్చి
చిత్రములగాంచి కొంతహర్షించి నూని
సేవతో దండకారణ్య సీమజేర||

ఉ|| అంతట గాధినందనుడు హర్షముతోడుత రామచంద్రు న్నా
నాంతమునందుజేరి దనుజుని నడంపగ శస్త్రరాజి న
త్యంతఫలప్రదంబగు మహామనుసంఘ మొసంగివారితో
కొంతజనంగతాటకను కూరసురద్వివ కాంతయొక్కచో||

మంజ—భీకరాట్టహాసమున కౌశికుడు వెరగుపడగ పరువిడుచుక
శ్రీకరులగు నారామలక్ష్మణుల చెంతజేరగా గనుచుక||

వచ|| గాధేయుండు శ్రీరామచంద్రా యిదే సవనవిఘ్నకారిణి ముందు
దీనిం గడతేర్చుమన దేవా! స్త్రీభూత్యాపాతకంబున కెట్లు సహింతు
నని యిండుకవిచారించి మునీంద్రుని త్వరంగని సునిశితాస్త్రంబునం
తానింగూల్చె—

గీ|| అంతశ్రీరామలక్ష్మణు లడవిగడచి
కౌశికాశ్రమముండాని గాధితనయు
సవనదీక్షతుగావించి జాగరూకు
లై గనుచునుండ జన్మంబుసాగుచుండె||

ఉ॥ తాటకచావెరింగికడు డర్పముతోడ సుబాహుడు నిరా
 ఘాటశయండు మోరిచుడు కౌశికుజన్నము ధ్వంసమంద ము
 మ్మాటికొనర్తు మంచువడి మాంసముర క్తము దెచ్చివోయి ముం
 దేలున నిల్చిన గనిరి యెంతయురాముడు లక్ష్మణుడొగి॥
 మంజ—శ్రీరాముండు సుబాహుయమపురము చేర్చె గూరశర మొకట
 పారావారము లోమారీచుని బడ వైచెను వేరొకట॥
 వచ॥ అంత నయ్యాగంబున సమ్యగ్విధానంబునం బూర్తియయ్యె నాదట
 కౌశికుడు రామలక్ష్మణులంగని-

మ॥ తిలకింపంజనబోలు నేడు మిథిలాధీశుడు గావించు ను
 జ్వల జన్నంబని వారిదోడ్కొని మహానన్యాంతముంగాంచి మా
 నులవాసంబులజూపి చిత్రిముల నెన్నో చెప్పుచు బోవగా
 శిలయొక్కండది రాముపాద రజసంక్లేషంబునక సాధ్వీయై॥
 అందఁడై—అట.

ప॥ రామరాక్షసభీమ రవికులాంబుధిసోమ॥ నీమహిమ దెలియతరమా॥ శ్రీ
 అ॥ కామితార్థఫలద గజరాజవరద॥ శ్యామలాంగా మునిసన్నత చరణా
 వి॥ వేమరుసేపదముల మది॥ లోమరువక భజియించెద
 కామజనక నానేరము॥ గణియింపక పాహిపాహి॥ రామ॥
 గీ॥ అనుచుపొర్థించు మునికాంత నరసిరాము
 డమ్మరోయెవ్వోపు యిట్లగుటకేమి
 కతమునామంబదేమి నా సతియినకుల
 రత్నమావిను గౌతము పత్ని నేను॥

మ॥ పతినానేరమి కోర్వలే కరుడచే పాపాణమానట్లు నా
 సతుల న్నెచ్చక శాపమిచ్చి పయినీనాడిట్లు శాపాంతమా
 యతిలోకావనదెల్పె దానవహారంబై నీదయక ధర్మ సం
 గతిముల్లోకము న్వలుంగు ఖగరాట్రంభాణ శ్రీరాఘవా॥
 వచ॥ అను నాయహల్యం గరుణించి గౌతముంజేర్చి యనేకజనపదారణ్య
 ములు నిర్గమించి మిథిలావగరంబు సమీపించిన॥

మంజ—జనకభూవిభుం డెనునై వారలసత్కరించి యిట్లనియె
మునివరతవదిశనమున జన్మము పుణ్యతమంబై మనియె॥

గీ॥ అనుచుకొశికుపూజించి యతులతేజ
లీర లెవరన యోమిధిలేశ దశర
ధాతృజులు రామలక్ష్మణు లనుపమాన
విక్రములుసర్వపూజ్యులు శక్రనుతులు॥

వచ॥ అని యెరిగించిశ సంతసించి తగిన వసతులుగావించి జన్మంబు
సమాప్తిగావించి పేరోలగంబునం దుండి జనకమహారాజు సకల
ధరాపాలురం గాంచి యిట్లనియె॥

చ॥ నరవరులారమున్న సవనంబొనరింప దలంచినేను యీ
ధరణిని నాగటింజొనుప దానితుదిన్నక భవ్యపేటి కాం
తరమున నున్న బాలికగ నుబడ సంతతిలేమి జేసి నిం
దిరవరుడిచ్చె నంచుగొని తెచ్చితి పెంచితి కూర్చిపెంపునక॥

గీ॥ ఆమెకప్పు స్వయంవరం బాచరింప
దలచి యాగార్థమెల్లర బిలచినాడ
నాగృహంబునగలదు పినాకివిల్లు
దాని నెక్కిడువానికీ తన్వినితు॥

మంజ—యేటికిటిపణ మేరుపరచెనం చెంచవలదువినుడు
బోటులతోపాచికలాడుచు మత్పుత్రిక మున్నొకనాడు

2 విలుగలమందిరముం జేరగ వారలపాచిక యొక్కందు
విలుకిందికి బోవగదీసెను సుతయా విలునె త్రివినుండు॥

వచ॥ గాన నావిలు నెత్తువానికీ సీతనొసంగి పాణిగ్రహణంబు నిర్వర్తింతు
నందుల కఖిలరాజన్యలోకంబున సమర్థులు లెండు. నంత నారాజు
కుమారులు—

సీ॥ ఇదియెంతనాకని యెడపొంగివిలుడాసి భీతిచేపిరిదికి వెడలునొకడు
బిరుసుమీసొంకేల పెనవైచివిలుబూని కడలింపగాలేక కడలునొకడు
నాకంబుబులు యీలోకమందెవడని జనిచూచిచల్లగాజారునొకడు
శివునిల్లదీనిని చేబూపరాదని అంజలిగావించి యరుగునొకడు

ఇట్లు లొక్కొక్కరే విల్లునెత్తునాశ
పూని యత్నించి సిగ్గును పొందుచుండ
గాంచి దశకంఠు డద్దిరాకాంతనాది
యె యటంచని విలుడాసి చేయిచాపి!

గీ॥ విల్లు చేబూని దంష్ట్రలు పెటపెటమన
బొమలు ముడివైచి హుమ్మని భూమియడర
పదములందట్టి బలమున పైకి నెత్తి
నిలువజాలక పుడమిపైని బడెనెడు॥

మంజ—త్రైలోక్య వీరుండుగు రావణు తరముగానిచో నకట
యేలీలను మననశవకాసని నృపులెల్లరూరకుండి రికట॥
వచ॥ విశ్వమిత్తుడు శ్రీరామచంద్రుని కిట్లనియె॥

శవాన—హిషకం.

శ॥ నాయనా శ్రీరామచంద్ర ! నయగుణసాంద్రావినుము॥ నాయ॥

అ॥ నీయనూన బలముజూప ! నేటికితగు సమయమబ్బె॥ నా॥

మి॥ శ్రేయముపొనగించునట్టి ! శివవిలునెత్తుము జానకి
చేయిపట్టు మీనృపులు ! చెల్లరు నీవేతగురువు॥ నా॥

2 వీరవరులమంచుగర్వత ! మేరమీరిన రాజలోక
హారసిగ్గున తలలువంప ! అధికముదము మాకునింప

మి॥ కూరిమినుతనొనగిజనక ! కుంభిసీశు డుబ్బిపొదల
గారవమున మునులాశీస్సులు ! గావింపగదరియబ్బెను॥ నాయ॥

వచ॥ అను కౌశికునకు శ్రీరామచంద్రమూర్తి నమస్కరించి కులగురుం
డగు వశిష్టు నెడలోదలంచి మొక్కి శివధనువుదరికరిగి నమస్కరించి

మంజ—కేలనుదాలించి విల్లునెత్తిడా ! కేలబట్టి యంతలను
శూలినిమదిలో దలంచివారిని చూచి సవరించగాను

2 విల్లునంచగను పాతదౌటచే ! పెళపెళయనుధ్వనితోడ
యుల్లుమ్రనువగ వింగెచుకౌశికు ! డుబ్బిజనకునింజూడ॥

వచ॥ రాజలోకంబెల్ల సిగ్గిలి తలలువంచిరి. కొందరు నిలువనోడి యుం

గిరి నగరునందుండి యీవిధంబుతయు నీక్షించు నీత, మాండవి,
యూర్విభాశృతికీర్తులలో నీతంజూచి కడమవారల్లిట్లనిరి॥

గీ॥ అక్కసీనాధుడగు మేల్ చక్కదనము

నీలజీమూతి దేహుండు నీరజాక్షు

డసమవిక్రము డెతనిభార్య వగుటయది

నీదుపూర్వ సుకృతమన రాదెనిజము॥

ఉ॥ ఎంతయుదృష్టమో సుదతి యింతసురూప విభాసిశౌర్యదు
ర్దాంత దినేశవంశజుని దైతునిగా గ్రహించినావు మే
మెంతయు నీసపర్యల ఘటించినవారము గానమమ్ము నీ
స్వాంతములో తలంచుము కృపామతితోడ నొకప్పుడేనియు॥

వచ॥ ఇట్లు నర్మోక్తులూడుచుండ నీత చిరునగవున తలవంచి స్థితిలునంతలో
చేటియరుదెంచి అమ్మా! జనకమహీపతి మిమ్ముం గొనిరమ్మని
పంపిరన సఖంజేరి తిండికివందనంబాచరించిన జానకింజూచి మిథిలా
ధీశ్వరుండు-

గీ॥ అమ్మ నీయెత్తువిల్లును యశ్రమమున

విరచెనీతండు సాకేత విభునిసుతుడు

రామచంద్రుండు పూలహారంబుతోడ

కరమయలరించు మీతని గళమునిపుడు-

కల్యాణి—త్రిశ్ర

ప॥ పూలదండశ్రీరామ । భూవిభుమెడనిడియె జానకి॥ పూ॥

అ॥ మేలగుసంపగిజాజాల । మిగులనందమొప్పారెను॥ పూల॥

1 సకలవాద్యనాదంబులు । సందడింపగా భూసుర
ప్రకరముదీవింపగముని । వరులు మోదమునుబొందగ॥ పూల॥

2 అంగన లందరుహారతు । లందిముందు నిలువగాయక
సంగీతము దెసలబర్వ । సర్వలోకముల్లసిల్ల॥ పూల॥

వచ॥ జనకుండు దశరథునకు శుభలేఖనువ్రాసి భూమిసుకుల బుత్తెంచిన
వారలు కతిపయ దిన వ్రయాణంబుల పయోధ్యజేరి పంక్తిరథు

నాశీర్వదించి యప్పత్రంబొసంగిన. పది వశిష్టుని చనువ—

సీ॥ రాజశ్రీదశరథరాజేంద్రునకు మిథి లేశుండు మొక్కి పూజించి వ్రాయు
శుభలేఖకొళికుతో భద్రయశులునీతనయుండుశ్రీరామ ఘనుడుగదలి
తాటకబరిమార్చి దనుజులద్రుంచి జన్నము దీర్చిరాతిని నాతిజేసి
వచ్చికా పుత్రికన్వణముగానున్న శంకరువిల్లువిరిచి చాకరముబట్టె
గానపిరికి కల్యాణకార్యమేను
జలుఘనుండినిగాన మీసపరివార
బంధుమూజక యుతముగా వచ్చినన్న
దనుపుదురుగాతయని నమ్మితిని జననర॥

వచ॥ అని చదివి శరచాలా వింటివా! శ్రీరామబాహుబలాతి శయము
లెమ్ము ప్రయాణంబొచరింపుమన బంధుమిత్ర పరివారయుతంబుగా
నయోధ్యంగదలి మిథిలానగరంబు సమీపించ జనకుడు-

గీ॥ యెవరుగానేగి తోడైచ్చి ముదము గదుర
ఘనసపర్యలోసర్చి రామునకు సీత
నిచ్చిశుభలగ్నమునను పాణిగ్రహణము
దీర్చిన కుశధ్వజుండన్న దిక్కుజూచి॥

నవకోజా—తిక్క

ప॥ అన్నావినమూ! విన్నవించెదను ॥ అన్నా॥

అ॥ ఎన్నదరమె మనభాగ్యము! యీదశరథు బంధుత్వము
పన్నుగ మనవంశమంత! పావిత్ర్యము నందెను యిక

మి॥ నున్నదొక్కకోరికేమన! కన్నియలందర నాతని

పిన్న కొమరులకు నిత్రము! వన్నెవాళిని గాంతము ॥ అన్నా॥

గీ॥ అట్టులేయని యామిథిలావనీశు

డధికముదమున సోదరు నాత్మజులను

మాండవీ శ్రుతికీర్తుల మహితగుణుల

భరత శత్రుఘ్నుల కొసంగె బాగుమీర॥

మ॥ జానకినాదరంబుమెయి సాకినపై జనకుండుగాంచె వి

ద్యానిలయన్ గుణాలయ సుమాస్త్రుసతీ సమరూపనూర్మిళా
మానిని నాపెలక్మణుని మానినిగా నొనరించె భూమిపుల్
హానులుమెచ్చ నమ్మిథిల మండనుడత్యధి కోత్సవంబుగాన్॥

వచ॥ అంతవలయు శుభకృత్యంబులు దీర్చి శ్రీ సీతారామ, ఊర్మిళా
లక్ష్మణ, మాండవీభరత, శ్రుతకీర్తి శత్రుఃస్నులం దీవించి యరణం
బులనొసంగి యయోధ్యకుం బుత్తెంచిన మార్గమధ్యంబున-

గీ॥ పరశురాముండు సర్వభూపాల హాసన
కృతప్రతిష్ఠాదు విలుబూని కేరిభవుని
విలువరచినతోనె పెన్నీరుడైతె
రమ్ము నాపసగనుపింతు రణమునందు॥

మంజ—రాజవంశమును సర్వంబును । మారణముజేయ తలపూని
నేజనియించితి ననిపై గవిసిన । యింశుకచిరునగవూని॥

వచ॥ సామంబున చక్కంబడకున్న వానివిలుతో దుర్బలుగా గ్రహించి
విడచిన నతండు దేవాదిదేవా! నీమహిమ దెలియనైతిని తుమింపు
మని ప్రార్థించి మహేంద్రపర్వతంబున తపోనియతించూని నివసించె
నంత శ్రీరాముండు సాకేతంబుచేరి నగరప్రవేశంబుచేసి సుఖంబుం-
డిరని యెరింగించిన—

మంజ—శుకయోగింగని పరీక్షితుండనె । సుదినంబీతరి చూడన్
అకలంకంబగు సీతాసతి । కల్యాణంబును వినినాడన్॥

వచ॥ ఆవలి కథావిధానం బెరిగించుడు నావుడు-

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.

—:0:—

11. శ్రీ రామ విజయము (హరికథ)



గీ॥ అట్లు దశరథసందను లతులవైభవ
వాన్వితులునై యున్నకొంతకాలమ్ముజనియె
నృపతిమంతులతో నిట్లని ధరణినిక
రామునకుగూర్చి గంతు విశ్రాంతినేను॥

వచ॥ వసిష్ఠుండెల్ల సుముహూర్తంబని నిర్ణయించిన పుకం బలంకరించిరి
యెల్లరహృదయంబులును వికసించె. నివ్వార్త కేకయాతృజ దాసి
యగు మందరయను వక్త్రగామిని విని—

మంజ—వేకువజాముననే కేకయసుత । ప్రేమతోడగనబోయి
నీకనిద్దరను నున్న యాచుచును ! భీతిపడియెడచేయి.

మ॥ నిమరింపందగు కాలమాయుది యయో నీనిది భద్రంబుగా
నెదురైకప్రపరంపరల్ గడిసె నీవేలాగున ద్రింతువో
ముదితా నీవాకదాసివైచి నిను సంపూజించువారేరి పో
పుదమా రాజపురంధ్రసేనలకు లెమ్మో కేకరాట్టందనీ॥

హిం॥ తోడి—త్రై

ప॥ లెమ్మలెమ్మ మూఢురాలా । లెమ్మసర్వమాయెనే॥ లెమ్మ॥

అ॥ సమ్మదమ్మనంజానకి । చరణసేవల్ల పోదము॥ లెమ్మ॥

1 సేతనయుం డాధరణీ । నేతయడుగులంబట్టగ
నోతల్లి కోసలాత్మజ । నొగిగొల్తువుగానియింక॥ లెమ్మ॥

వచ॥ అనినం డై కేయి గతంబాలించి యాశ్చర్య చకితయై మందరా యే
మిదియని గుచ్చిగుచ్చియడిగి శ్రీ రామపట్టాభిషేక విధంబెరిగి
యిట్లు వితర్కించె.

గీ॥ రాముడే ధరణీసుడై ప్రబలునేని
సంతసమెకాని దాన రాక్షసవివాశ
మెట్టులగుమున్ను దెల్పె వశిష్ఠుడిది వి
నాశనము చేయకున్న యన్యాయ మొనవు॥

వచ॥ ననితలంచి మంధర బోధనంబున వృద్ధస్థుసాలుని మోసగించి శం
బరాసురు వధాసమయదత్త వరంబులను వింపతో—

మంజ— రాముని సతితో పదునాల్గేడు లరణ్యవాస ముసరింపక
భూమిాధవుడై భరతుడు । పృజులను పోషణంబు గావింపక॥

గీ॥ వరములను గోరుటన్ సత్యవాక్య బద్ధ
చిత్తుడై పంక్తిరధుడిట్లు నెలవసంగ
సీతతో లక్ష్మణునితోడ చింతదక్కి
పయనమై తల్లులకు మొక్కి వనికివరిగె॥

వచ॥ సరయునాదించిరిసి యందలి బల్లకట్టడంబు నడపునిపాద పతియగు
గుహునింగని తమపయనం బెరిగించి నదించాటింపుమన సతం
డిటనియె—

చం॥ యొడయడసిన్న బాబును యెటో దొరసానిని జేర్చునాడ నా
పడవలానిపు కాలిడగ వద్దయదేమన చట్టుబండయే
పడతిగనయ్యె నీచరణపద్మముసోకిన బీడవాడ నా
పడతికెనాకెబువ్వ కరవాయెను యెక్కడదెత్తు చెప్పమా॥

వచ॥ యొక నీపాదభూలిచే శిల సతిగామారె నందురుగాన నీపదంబులు
కడగి తడియొత్తి పడవయందు కూర్చుండబెట్టుదునని శ్రీరాముని
పదంబులు శుభ్రంబుగా గడిగి తడియొత్తి నావపై నెక్కించి
ఆవలంజేర్చిన దాశరథి సంతసించి గుహుడా నీకేమీగలమన పతని
మనోవాక్కాయంబులు పవిత్రంబులై యున్నందున శ్రీరామా.

మంజ—కులమువారికడ నేమిగొందుమో । కుంభసిధవుడ వినుము
జలధి దాటగాచేసితివు । భవ జలధిదాటింపగనుము॥

గీ॥ అనుచు మొక్కిడ నతనిమోక్షాస్తనరిగి
సంతసెలిరామ చంద్రుండు స్వర్గతలము
చూరగొనుమని దీవించిచేరె దండ
కావనంబును సీతలక్ష్మణులతోడ॥

గీ॥ ఆకుటిల్లొకండు నమరించికొని నుము
త్రాత్మజుండు ఫలములంది తెచ్చి
దంపతుల కొనంగ తగునీతి భుజియించి
వాసప్రస్త నియతి బూనిరంతె॥

వచ॥ ఆవనంబు దళగ్రీవుండు సోదరియగు శూర్పనఖకు పనుపుకుంకు
మలకు కాన్కగానిచ్చినదగుట భర్తృహీనయగు శూర్పనఖపుత్రులగు
ఖరదూర్వా తిశరులతో వారియనుచరులతో నంధువనించియుండి.
మంజ—ఒకదినంబు శ్రీరామచంద్రుని మదిన్ పావరం దిలకించి
మకరాంకుని బొరింబడి దానొక మానిని రూపువహించి॥

వచ॥ శ్రీరామునిండాసి యిట్లనియె—

జంజోటి—శ్రీకృష్ణుని.

ప॥ వన్నెకాడ నిన్ను ప్రేమ గన్నదాన వేగరారా ॥వన్నె॥

అ॥ కన్నియను చిన్నదాన కొగిలొసగి పోవరా ॥వన్నె॥

2 నవమోహనాంగ నీకీ యువిదయెట్లు తగునురా

తవిలె నాదుమదికిసేను తనురుచి పరియింపరా ॥వన్నె॥

మ॥ అనిపైరాదిలకించి రాముడను కాంతా వ్యర్థమికోర్కె చ
క్కనిదో కాదా లభించె నీగరిత మత్కాలంబునం కొంత దా
జనె నాపైభ్రమవీడి వేరొకని పృజ్ఞాశాలినిం భర్తగా
గొనిసొఖ్యంబుల నందుమంచనిన నక్రూరాత్మ దానిట్లనుక॥

గీ॥ వలచివచ్చిన నచుజోటివారి పీడ

కలయునప్పుడు గల్లు సుఖంబు జూడ

కెలమి నోరెటులాడె నీకిట్టులాడ

చెక్కిలిన్చెక్కితదిదన్ను చెలమికాడ॥

వచ॥ అనిన శ్రీరామచంద్రుడు దీనిమదమడంపమి ఫలంబు సున్నయని
తలంచి—

మంజ—అతివా నేనొకసతితో సుఖముల నందుచుంటి నిటుగనుము
సతీలేకొంటిగ చరించు తమ్ముని జాయపై యింకనునుము॥

తోడి—కూటకం.

ప॥ రామునోదర నిశురోచితః । దారనన్ను దరిజేర్చిర ॥ రాము॥

అ॥ కామునిబాటికి నోర్విను । కౌగిటనను దనియింపర ॥ రాము॥

మి॥ నేముల్లోకంబుల నొక్కట । నేలురావణుని చెల్లెల
నీమెయి జేవాదులకున్నిను । యేలికచేసెన దశరథ ॥ రాము॥

2 అన్నయేమి యనునోయని । యడిలవలను మవకూటమి
కెన్నోవిధముల మెచ్చెను । యిటుపొమ్మని ననుబుచ్చెను

మి॥ సన్నతాంగ కొక్కోకము । సర్వమెరిగి యున్ననన్ను
వెన్నునినుతు కూటమిలో ! వినుతింతువు కామింతువు ॥ రాము॥

వచ॥ అనిన లక్ష్మణుండు శ్రీరాముని మనోగతంబెరిగి కరవాలంబున
సక్కపటచేడియ ముక్కుచెవుల చెక్కిన సది విలపించుచు చని తన
కుమారులగు ఖరదూషణాదుల కెరిసింప—

మంజ—యిరువది వేల్చులగంబుతో వారలు । యే తెంచిన బొడగాంచి
యిరువురు నిమిషంబుల వధియించిరి । వీరతతో కడుమించి॥

గీ॥ ముక్కుచెవులులేక రక్కసవీరులు
సుతూలులేక దుఃఖమతి యగుటను
లంకకేగి భీతి రావణుగనియెడ్చి
శూర్పనఖ యిటులనె నేర్పుమీర॥

శా॥ అన్నారావణ చూచితేనరుడు రామాభిఖ్యతో పక్షితో
మొప్పుండేరచు దండకావనము సన్మన్యజ్ఞల నైత్యులక
యెన్నోవేలచుచుపె నాకొమరులుక హీనంబుగాచచ్చి రా
పైన్నన్నుండగ దుంపనెంచిరిక నాపాల్లెల గన్గొంటివే॥

వచ॥ అని యెరిగించిన సతండాపె నోదార్చిపుచ్చి కర్తవ్యాంశంబు నిర్ణ
యించుకొని సమస్త మాయాకవచుండగు మారీచుండాసి—

సీ॥ వింటివేసివు ముక్కంటి విల్దునిమి నాకవమాన మొడగూర్చినట్టి
బాలిశుండు

దారఘ్నగూడి దండకారణ్యవాసము జేసిమనవారి చండబలుల

వధియించుటే కాక పరమసుందరి నామచెలియలిముక్తును చెవులుగోసి
ఆయమబిడ్డల హతమా ర్చెనటవాని కావరంబడగింప గావతనిపు
డతనిజాయ సుహృషయా నటందాని
చెరను గొన నెంచ తీవు శాంబరనిజూపి
అన్నదమ్ముల నిలువెల్గు నట్లొనర్పు
మనగ మారీచుడనియె నాతనికి గడగి॥

శ్రీరాము—మాపకం.

ప॥ శ్రీరామున కపకారము । చేయన్యాయమానే బలి ॥ శ్రీరా॥

అ॥ యోరావణ దుష్టబుద్ధి । నొగితలపోసితి దశరథ ॥ శ్రీరా॥

2 ముగ్ధోకంబుల కాది । మూలము రాముడే నిజము
చెల్లెలి నేరములేక । చేయడట్లు ధర్మరాజు ॥ శ్రీరా॥

3 సీతాజననము నిజముగ । చెబులంకకిని వినవే
ఆతనిన్ని గోరుటకాలం । బాసన్నంబని తోచెనుశ్రీ ॥ రాము॥

మ॥ మును గాధేయు డొనర్చు జన్మముచు నేమూర్ఖుండనై నాశమున్
బాసర్కజల్ప గడంగ రాఘవుడు తెంపున్జూపి యొక్కమ్ముచే
వవధింగూలగవైచె నాటిభయమున్ బాయంగనై తింతకున్
జనజాలనిఘరాము కెగ్గొనరుపన్ శంకేసియో రావణా॥

వచ॥ అనిశ రావణుం డౌరా! దానవుండవుగావే. నరునకు భీతిలుదువే
నాయుపమ గుర్తింపుము. సువర్ణకు రంగమవై రాముపర్ణశాల
పాఠంతంబున చరించుము. నిన్నా నెలతగోరెట్టునా త్రొక్కు నంపగలదు.
అతని నీవు దవ్వులకుంగొంపోయి లక్ష్మణుని రాజీరుము. ఆవల
నొంటియగు భూపుత్రిని గొనితెచ్చెద—

గీ॥ నావచించిన రీతిని నడుపవేని

కఠిన తరకరవాలత ఖండనమొన

రిగితునని జులిపింప మారీచు డెదను

దలచె నిట్టులుభయమెద తాండవింప॥

మంజ—దురితాత్ముడగు వీనిచే । తనుపు దొరగినంత నే ఫలమ్ము

కరుణావనుడగు రాముచే మడిసి । గాంతు నక్షయ సుఖమ్ము

2 అనితలంచి మామాకురంగమై | యామారీమండంత
జని శ్రీరాముని పర్ణశాలకడ | చయ్యన చరించెనంత||

గీ|| దానిగాంచిసీత తనవిభునిఁగోరె
పట్టితెండు ప్రేమ బుట్టెననుచు
రాముడట్లుబోవ లక్ష్మణుడనె సోద
రా వినుమిక పట్టరాదుదీని||

ఉ|| కాంచనపర్ణ మీహరిణి గాంచము యీవరతెంచునేని యీ
చంచల నేత్రముగ్ధగుట చయ్యన తెండనిగోరె మాయదో
తెంచె నెవండొదానవుడు దుంపుడొకండు శరంబుబూని నా
మించినదేమి నీవచట మేనివిపుత్రిని గాచుచుండుమా—

వచ|| అని శ్రీరామచంద్రు డమ్మాయా కురంగంబు పేంటనంటిబోవ
కొంతవడికి హతమ్మడా! లక్ష్మణాయనుయార్త సాదంబువినవచ్చుడు
జానకి లక్ష్మణునిగని-

దేశ—చతురశ్రీతి

ప|| అన్నాలక్ష్మణ! యార్తనాదమదె|| అన్నా||

అ|| నీయన్నగళరవము | నాలించితివే|| అన్నా||

మి|| సన్నుతబలశాలియైన నీ | యన్నకేమి కీడొడవెనొ
నిన్నుబిలచె తోడుగజను | మన్నయన్నగాపాడగ|| అ||

2 నీవుసుంత భయమండక | నిలచితేమి కతమొదెల్పు
పోవుమా అయ్యోనిలచితె | పోవానాధునిగావగ

మి|| అవిధినామాయజింకి | నడిగితి స్త్రీజన చపలత
తో విభునకొనగూడెను | దుష్టదనుజ మాయగాదె|| అ||

గీ|| అనినలక్ష్మణుండు అమ్మనీనాధుని
కెడరుపొడముటేమి యెరుగవొక్కొ,
రాముబలముమాయ రక్కసుండెవ్వరో
వలికెనిట్లుబెగడు వడకుమమ్మ||

వచ|| అని నిబ్బరంబుగా వలుకు సోమిత్రీకి దుఃఖవేశంబున జానకి దు
ర్భాషలాడి తుదకిట్లులనియె-

మంజ—దాయాదద్యేషముచూపించితే । తమ్ముడైపుట్టియొకడు
శ్రీయ్యులంబు రాజ్యంబులొగి కొని । చేర్చెనడవి నీవిపుడు

2 శ్రీరాముండుగతించుమీద నా । చేయిబట్టనుంకించి
యా రాధైర్యతనుంటివి రాముని యార్తనాదమాలించి ।

వచ॥ అను రాముడేవి పల్కులాలించి సుమిత్రాత్మజుండు చెవులుమూసు
కొని జననీ యింతకాలంబునుండియు నామనం బెరుంగవైతివి. కాని
మ్మిదే పోయెదను. నీ వేళు వచ్చునంతవరకు పర్ణశాలందాటి యీ
వలికి రావలదని రాముడేగిన మార్గంముబట్టి పోయిన॥

గీ॥ రామలక్ష్మణులీరీతి భూమిజ నెడ

బాసిజన రావణుడుకడు మోసమునను

యోగిరూపంబుదాల్చి లోకోత్తంగుణ

జానకినిగొని లంకకై చనియెనంత॥

వచ॥ పట రఘురాముండు మారీచవధం బాచరించి వచ్చుచు మధ్యేమా
ర్గంబున నెదురువచ్చు తమ్మునింజూచి—

ఉ॥ తమ్ముడ జానకినివడచి దవ్వరుదెంచితి వేల నేను యా
కొమ్మనురక్ష సేయుమన కూళలురక్కను లేమొయన్న న
న్నమ్ముము రామచంద్ర యొకనాదములక్ష్మణ యంచువించు పో
పొమ్మని త్వత్సహాయముకు భూమిజబంపెను దూరియగ్గిజా॥

వచ॥ అనిన సోదరా దానవాధముండుకండు మాయాకురంగంబై మళ్ళీ
రంభున మరణంబందుచు నట్లరచె నని యెరిగించుచు పర్ణశాలందాటి
చూచి—

ఉ॥ కీరవిహాన పంజరము కీరితిలేని నరుండు సుందరా
కారముగనియవ్వనము కంజజాగానని రేయి భవ్యకా
సారములేనిపూవసము శ్మశానతీలేని ధరితివాగ నే
డి రహినుండ నేమిది కుటీరముజానకి లేమితమ్ముడా॥

భాగవత—దూషకం.

వచ॥ ఈ పరిమళిజానకి న । న్నకటయెడం బాసితివే॥ వ॥

2 అనితలంచి మామూకురంగమై | యామాచీమండంత
జని శ్రీరాముని పరశాలకడ | చయ్యన చరించెంత||

గీ|| దానిగాంచిసీత తనవిభునింగోరె
పట్టితెండు పేమ బుట్టెననుచు
రాముడట్లుబోవ లక్ష్మణుడ నె సోద
రా వినుమిక పట్టరాదుదీని||

ఉ|| కాంచనవర్ణ మీహరిణి గాంచము యీవరకెంతునేని యీ
చంచల నేత్రముగ్ధగుట చయ్యనలెండనిగోరె మాయదో
తెంచె నెవండాదానవుడు దుంపుడొకండు శరంబుబూని నా
మించినదేమి నీవచట మేదినిపుత్రిని గాచుచుండుమా—

వచ|| అని శ్రీరామచంద్రుని డమ్మాయా కురంగంబు వెంటనంటిబోవ
కొంతవడికి హతయ్యుడా! లక్ష్మణాయనుయార్తనాదాబువినవచ్చుడు
జానకి లక్ష్మణునిగని-

దేశ—చతురశ్రాతి

ప|| అన్నా లక్ష్మణ! యార్తనాదమదె|| అన్నా||

అ|| నీయన్నగళరవము | నాలించితివే|| అన్నా||

మి|| సన్నుతబలశాలియైన నీ | యన్నకేమి కీచొడవెనా
నిన్నుబలచె తోడుగజను | మన్నయన్నగాపాడగ|| అ||

2 నీవునుంత భయమండక | నిలచితేమి కతమొదెల్పు
పోవుమా అయ్యోనిలచితె | పోవానాధునిగావగ

మి|| ఆవిధినామాయజింకి | నడిగితి ప్రీజన చపలత
తో విభనశ్చగ్గనగూడెను | దుష్టదనుజ మాయగాదె|| అ||

గీ|| అనిసలక్ష్మణుండు అమ్మసీనాధుని
కెడరుపొడముచేమి యెరుగవొక్కొ
రాముబలముమాయ రక్కసుండెవ్వరో
నలికెనిట్లుబెగడు వడకుమమ్మ||

వచ|| అని నిబ్బరంబుగా వలుకు సామిత్రికి దుఃఖానేశంబున జానకి దు
ర్భావలాడి తుదకిట్లునియె-

మంజ—దాయాదద్వేషముచూపించితె । తమ్ముడైపుట్టియొకడు
 త్రియుతంబు రాజ్యంబులాగికొని । చేర్చెనడవి నీవిపుడు

2 శ్రీరాముండుగతించుమీద నా । చేయిబట్టనుంకించి
 యారాధైర్యతనుంటివి రాముని । యార్తనాదమాలించి॥

వచ॥ అను రాముడేవి పట్కులాలించి సుమిత్రాత్మజుండు చెవులుమూసు
 కొని జననీ యింతకాలంబునుండియు నామనం బెరుంగవైతివి. కాని
 మ్మిడే పోయెదను. నీ వేము వచ్చునంతవరకు వర్జశాలందాటి యీ
 వలికి రావలదని రాముడేగిన మార్గంముబట్టి పోయిన॥

గీ॥ రామలక్ష్మణలీలీతి భూమిజ నెడ

బాసెజన రావణుడుకడు మోసమునను

యోగిరూపంబుదాల్చి లోకోత్తరగుణ

జానకినిగొని లంకకై చనియెనంత॥

వచ॥ నట రఘురాముండు మారీచవధం బాచరించి వచ్చుచు మధ్యేమా
 ర్గంబున నెదురువచ్చు తమ్మునింజూచి-

ఉ॥ తమ్ముడ జానకిన్విడచి దవ్వరుచెంచితి వేల నేను యా
 కొమ్మనురక్ష సేయమన కూళలురక్కసు లేమొయన్న న
 న్నమ్మొము రామచంద్ర యొకనాదములక్ష్మణ యంచువించు పో
 పొమ్మని త్వత్సహాయముకు భూమిజబంపెను దూరియగ్గిజా॥

వచ॥ అనిన సోదరా దానవాధముండొకండు మాయాకురంగంబై మత్త
 రంబున మరణంబందుచు నట్లరచె నని యెరిగించుచు పర్జశాలండాని
 చూచి—

ఉ॥ కీరవిహాన పంజరము కీరితిలేని నరుండు సుందరా
 శారముగానియవ్వనము కంజజగానని రేయి భవ్యకా
 సారములేనిపూవంబు క్షౌపతిలేని ధరితిగ్రాహక నే
 డీరహినుండ నేమిది కుటీరముజానకి లేమితమ్ముడా॥

భాగవత—దూడకం.

వచ॥ సతీమణిజానకి న । న్నకటయెడం బాసెతివే॥ వా॥

నైన్యంబుల గూడుకొని సముద్రంబునకు వారధింకట్టి సువేలాది
పయివిడసిన—

మంజ—దశకంఠునితమ్ముక విభీషణుడు | ధర్మంబుల నెరిగింపక
ససిగాదనితన్నిన శ్రీరాముని | శరణందెను యనుకంపక

2 అంగదునంపెను రాయబారిగా | నారావణు కడకుక
అంగీకరింపక దురమునకే | నయ్యసురేందుడు గడగక॥

వచ॥ తలపడిన భీకరసంగ్రామంబున రావణుని బంధుమిత్ర పుత్రాదుల
నందర వధియించి తుదకు శ్రీరామచంద్రుడు రావణుని లాతలం
బునకు బలిగావించి లంకాపురంబు విభీషణునకు వట్టంబుగట్టె—

గీ॥ జానకీసతి సాధ్వీత్వ శంకదీర
అగ్నిచే పూతయైనంత నమరపుష్ప
కాధిపాధత సాకేత మధిగమించి
తల్లులకు మొక్కి తమ్ముల దయనుచూచి॥

వచ॥ అంత మహావైభవంబున శ్రీరామచంద్రమూర్తి పట్టాభిషిక్తుడై
న్యాయపరిపాలనం బాచరించుచుండ—

గీ॥ అంతకొంత కాలమరిగిన యొకనాడు
రామచంద్రుడొక్క. రాత్రిపురము
గలయ దిరుగుచుండగా నాగరులలోన
నొకడు సతినివీడి యొప్పుకున్న॥

మంజ—రాముడతనితో సతివిడవగునట | రా యేలుకొమ్మనంగ
రాముడనచుకొంటివె పెండ్లామును | రావణుడెత్తుకపోవంగ

2 సిగ్గులేక కొనివచ్చి యేలుకొని | భీమాడువారి శేక్వాట
లగ్గగు దీనిని నేనొల్లను నీ | లాతిమాట చెవిబెట్టక॥

వచ॥ అనిదూరిన విచారంబున శ్రీరామచంద్రుడు యిలుచేరి సౌమిత్రి
జీరి యాసీతంగొని చని వాల్మీకిపర్ణశాల పాఠింతుబున విడచిరమ్మని
పంపిన పూర్ణగర్భవతియగుట వాల్మీకి రక్షణంబున నప్పర్ణశాలకుశ
లవులను కుమారులంగనియె. లక్ష్మణునకు అంగద చంద్రకేతులును

భరతునకు దక్షుడు పుష్కలమును శత్రుఘ్నునకు సుబాహు శత్రుసేనులును జనించిరి. కొంతకాలంబునకు రామునందనులగు కుశలవులు వాల్మీకివలన నుపవీతులై తద్విరచిత రామాయణ గానం బాచరించుచు నయోధ్యకుంజేరిన శ్రీరాముడు గ్రహించి దారం బిలపించి సతీత్వ పరిక్షుంగొనిన జానకిభూవివరంబు చొచ్చిన శ్రీరా మాదులు కుశలవులకు పట్టముగట్టి సరయునదిం బ్రవేశించిరి—
కం॥ యీరామాయణ సత్కథ నోహరగ చదువ విన్ననుక సకలంబౌ
కోరికలుదీరి యావల శ్రీరామునిసేవదారుకు స్థిరముగరాజు॥

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.

12. శకుంతలోపాఖ్యానము (హరికథ)

—

మంజ—అంతపరీక్షితు డావలిచరితం। బానతీవె దయతోడ
సంతసంబుబెనగొనభాగవత। సారంబును గొనువాడ॥

వచ॥ అనిన శకుండ్లినియె. నాకుగౌనకు నతిధి, వానికి నిషధుండు, వానికి నభుండు, వానికి పుండరీకుండు, వానికి నహీనుడు, వానికి సారియాత్ముడు, వానికి బలుఁడు, వానికి జలుఁడు, వానికి వజ్రినా భుండు, వానికి శంఖునుండు, వానికి విధృతి, వానికి హిరణ్యనాభుండు, వానికి పుష్కనుండు, వానికి ధృవసంధి, వానికి సుదర్శనుండు, వానికి నగ్నివర్ణుండు, వానికి శీఘ్రుండు, వానికి మరువు, వానికి సంధియు, వానికి సమర్థుండు, వానికి మహాస్వంతుండు, వానికి విశ్వసాహస్యుండు, వానికి బృహద్బలుండు, జనించిరిది సూర్యవంశ విధానము. యింక చంద్రవంశంబెరిగించెద నాలింపుము—

గీ॥ వేయితలలతోడ వెలుగు జగన్నాథు

బొడ్డుదమ్మిబమ్మ బుట్టె మొదలు

వానికతియనెడు వాడుదృవంబయ్యె

వానిపుత్రుడు క్షపాకరుండు॥

మంజ—ఆతడు సురగురుకడగల విద్యల | నాజ్ఞించుచు మిఱిమిరి

ఆతనిదారను తారనుకామత | నాక్రిమించి వనిజేరి

2 కాపురముండిన సతినిమ్మని గురు | డోపికతనుగోరినను
కోపంబున నీనంచ నిధిఃకృతి | గురుని నాగదోలినను॥

గీ॥ గురుడుసురల కెరుకపరచిన వారేగు

దెంచిచంఘ్రితోడ మించిపోరు

ఔఱిదానవాళి సురలపై గవిసిన

మిరివారిపోరు ఘోరమయ్యె॥

వచ॥ బ్రహ్మదేవుడగుదెంచి వారిని వారించి గురుసతి నతనికిప్పించిన నా
సతిగర్భంబున నొకబాలుడుద్భవించిన మరలగురుశిష్యులకు వివా
దంబుపొడమె విధాత తారనుంగాంచి—

నివృత్తి—తిక్కన.

ప॥ శంకింపకుమా తార | చిన్నివాడెవని సుతుడు ॥శంకి॥

అ॥ బొంకవలదు యెరిగింపుము | పొలతీ నిజమెంతగలదో ॥శంకి॥

2 ఏమనివిన్నవించగలను | యెటులదెల్పుదీనిజమ్ము
నామీసీ వెరుంగనిది | జగములోన గలదేయిపు ॥డేమి॥

3 నేనెటులన్నను చెల్లదు | మానిని యనుభవము గల్గు
దానవగుట నమ్మకమ్ము | తగులు చెప్పుమోతనయ ॥శంకిం॥

4 నిక్కమెరిగించెదనే | నీరే రేనిగూడి
యిక్కుమారుగంటిని యిక | పెక్కులేల లోకపాల ॥యేమి॥

గీ॥ అనుచు తారయెరిగింప నావిధాత

బాలుచందురునకొసంగి పంపనతడు

బుధుడటంచని పేరిడె బుధుడిలయను

కన్యయందు పురూరపు గాంచెనధిప॥

వచ॥ ఆపురూరపుడు మిత్రావరుణ శాపంబున మానవ కాంతయగు
నూర్వసింగూడి నాయుపు మొగలగు నార్వర కొడుకులం గనె.
వారిలో విజయానకు భీముడుజనించె. నాతనికి కాంచనుడు, వానికి

పహోత్రకుండు, వానికి గంగాజలంబు పుక్కిటంబట్టివ జహ్నుండు,
వానికి పూరుండు, వానికి బాలకుండు, వానికి నజకుండు, వానికి
గుశుండు, వానికి గుశాంబువు, వానికి గాధికి పుట్టిరి. వానికి సత్యవతి
జనించె. నామెకు జమదగ్నిజనించె. వానికి క్షత్రియకులహసనుండు
పరశురాముండు బుట్టె. ఆగాధి విశ్వానితుండు జనించె. నది య
ట్లుండనిమ్ము. నిక పురూరవు రెండవకొమరుండగు సహుఘనకు
యశియు, యయాతి, సంహతి, నాయాతి, వియాతి, వికృతియను
ఆర్దురు కుమారు లుదయించిరి. అందు మొదటివాడగు యశిరాజ్యం
బుబాసి, యడవికిబోయిన యయాతి రాజేందుడయ్యె—

మంజ—శుక్రునికూతురు దేవయానయను | సుందరాంగి యొకనాడు

విక్రమవంతుడు దనుజేశుని సుత | విమల శర్మిష్ఠగూడి |

ఉ॥ పూవనమందునాడి జలముంగని స్నానమొకర్ప చీరలక
నావనతీరమందు నిడి | యందుమునుంగగ నారదుండు నా
తోవజనంగ సిగ్గున తలోదగులందరు చీరలందగా
త్రూవర దేవయాన దనుజాధిపుకూతురు చీరగట్టగక |

వచ॥ శర్మిష్ఠ దేవయానతో వాడాడి—

మ॥ తులునత్వంబున దారతమ్యమెడలో దోపింపగా నీకనా
వలువంగట్టితివే ఫలం బనుభవించుకొనేతు సంచామె చే
తులుకాళ్ళు వడిగట్టికూపమున నెంతోమోసతందోచి నె
చ్చెలులుందావృష పర్వపుత్రిజనియొక చింతింపక నైవిధిగ |

వచ॥ ఆకూపంబున దేవయాని విలపించుచుండ యయాతి సరపాలుండు
వేటాస క్రింజని యావనంబుజేరి కూపమందున్న దేవయానను బయ
లుతుందీసిన దేవయాన నతనికిట్లనియె—

మంజ—ననుపాణిగ్రహణం బొనరించుట | నాకీవెనాధుడవు
జననాయక పరియించి సతంబతి | సౌఖ్యంబులనిడి బోవు ||

గీ॥ మనుచువచ్చియించి పైకొను నబలచరిత
మానృపాలుండెరింగి మీరగ్గకులులు

క్షత్రియులమైన మమఃగోరజనునె నాగ
ననురగురువరుపుత్రి యిట్లుయెమరల॥

నాటకురంజ—రూపకం.

ప॥ వినుమెట్టులైనను నీవె । విభుషపు నాకో నరవర ॥విను॥

అ॥ జనవందిత నాకట్టులు । శాపంబొకడుండె నయ్య ॥విను॥

2 తొల్లిదేవగురుని సుతుడు । యెల్లవిద్యల నెరుగగ మా
యిల్లుజేరి మాజనకుని సే । విచినేర్చె నాపైనను ॥విను॥

3 వానిగోరియుంటినని । వాడెరింగి యొప్పుకున్న
వానివిద్య లక్కరకుక । రానట్టులు శపియించితి ॥విను॥

4 అతడునన్ను గూడకోప । మందియు ప్రితిశాపంచిడె
క్షితిపతి పతియగుగాకని । జీవితేశ గ్రహియింపుము ॥విను॥

వచ॥ అనివచియించితి శుక్రుండరుడొచ్చి గతంబాలించి యయాతికి దేవ
యానినొసంగి వివాహంబాచరించి దనుజరాజనందనియగు శర్మిష్ఠం
గూడా నొసంగిపంపిన సతండు దేవయానివలన యదు దుర్వసులను
నందనులను శర్మిష్ఠయందు శ్రుహ్యండుననుపు బూరువునను కుమా
రులంగాంచె కొండొకకారణంబున శుక్రుండు యయాతికి ముసలి
తనంబుగల్గి శాపంబిచ్చిన కుమారులలో పూరుండుతండ్రి జరగ్ర
హించి తనయవ్వనంబొసంగె. కొంతకాలంబునకు యయాతి సుతు
నకు యవ్వనంబుతోబాటు రాజ్యపాలనంబు నొసంగి తపోవనికిం
జనియె. నాపూరునకు జనమేజయుండు ఆతనికి ప్రాచిన్వాంసుడు,
వానికి ప్రవిరోధమన్యువు, వానికి జారువు, వానికి సుద్యువు, వానికి
బహుగతుండు, వానికి శర్మాతి, వానికి సంయాతి, వానికి రాదా
శర్వుండు, వానికి ఋతేవువు, వాని కంతిసారుండు, వాని కపత్రి
రథుండు, వానికి కణ్వండు, వానికి మేధాధితి, వానికి రైభ్యుండు,
వానికి దుష్కంతుండు బుట్టె—

మంజ—ఆరువ్యంత సృపాలుడువేటకు । నడవిజొచ్చి యొకనాడు
బాధించెను మృగముల వీరత । బాహుబలంబున జూడు॥

గీ॥ యిట్లువేటాడి యలసియొక్కంత విశ్రాంతి
మింపననువగు దరిగోరి యేగునంత
కఃఖ్యనాశ్రమమర్థిని గాంచిచేర
షర్ణశాలను చక్కని పణతినిలచె॥

వచ॥ అదిగురాకుబోడినిగాంచి దుష్ట్యంతుడు కామోద్రిక్తమనస్కుండై
చెలికానిం జూచి—

భవానీ—మిత్రగతి.

ప॥ వింటిమా యెందైన | యిట్టిజగన్మోహిని గలదని ॥వింటి॥

అ॥ కంటిమాకలనైనను సరి | కంటిచేతిలో కటారి ॥వింటి॥

మి॥ తుంటవిల్లుజనకుండైవ | కంటజూచి నిలువగలడె

కంటగించి యప్పరసల | కరుణించునె సురపతియును ॥వింటి॥

ఉ॥ దానివిలాస పుంగురులు దానిమనోజ శరాక్షియుగ్మ మ
ద్దాని కుచద్వయాగరిమ దానివశ్రత్యయి సుందరంబు య
ద్దాని పిరుందులందమును దానియొరము దానిహవము
గానము మున్ను నెందయిన గానముదానికి సాటియయ్యడే॥

వచ॥ అని సమీపించిన నమ్మానిని వతంసం బాతిధ్యం బొసంగిన—

మ॥ పనితా యెవ్వరిదానవీపు యిటుకణ్ణవాస మందుంటి నీ

జనకుండెవ్వరు నామమేమి ననుమెచ్చుజేసి తాతిధ్యతక

నినుపెండ్లాడిన భాగ్యశాలియెవచో నీరేజ పత్మాక్షి యె

ల్లనెరింగింపగదే యనంగవిటులా లావణ్యతాబలైదుక॥

నీ॥ జననాథమేనకయను కామినీమణికి పరియించెగాధినందనుడుమున్ను

సంసారగోష్ఠినిం జరుపకాలముకొంత గర్భమైయామెకు గల్గినాను

పుత్రికామోహంబు బోనాడిమేనక భువిపయినన్వీడి దివికినేగె

తపమొనర్చుచుగాధితనయుండునన్వీడనాడె సంతటనుకణ్ణమునికరుణ

తోడగొనితెచ్చి పెంచెనో రేడనేట

రేపటం బెండ్లిగావింప భూపవరుల

వెదుకుడున్నాడు తగిన పృస్థీశుకొరకు

యిప్పడేగెను నాతండ్రి యింద్రసభకు॥

వచ॥ అని యెరింగించిన ద వ్యంతనృపాలుండా శకుంతలంగని—

మంజ—బాలానినుగనిచంతట నేనతి । బాళిగాంచితిని నేను

నేలాశంకిపంగరమ్ము భువి । పాలుండను దయజూడు॥

గీ॥ సనువరించిన సీతండ్రికిని హితంబు

గలుగు రాపుత్రీవగుటనో లలనచెల్లు

నీకుగాంధర్వ వైవాహ మికుటీర

ముననె విహరిత మననామె మోమువాంచి॥

వచ॥ ఆర్యా! తామెవ్వరో నేను దువ్యంతనృపాలు వరియించితి నన
నతండు సంతసిలి కలరూపెరింగింప గాంధర్వవిధిని—

కం॥ సరపాలుడు మేనకసుత మరుకేళిని మెలగుచొక్క మాసంబుండన్

తరుణికి చూలెర్పడగను ధరణీసుండనియె కూర్మి తలగియెటొచనన్॥

మ॥ సరసీక్షేక్షణనేను వేటకయి కాంక్షంజేరి తిన్నిండునన్

సరిగ్గ బెక్కుదినంబు లేగతిని రాజ్యంబుండెనో గాంచగా

న్నరుగ న్నెంచితిసీపు నీజనకువాఙ్మబద్ధతన్ రమ్మటం

చు రయంబొప్పు నృపాలు డామెవిడి దానుంజేరె పట్టంబుకున్॥

వచ॥ అంత కొన్నిదినంబులకు కణ్వుడరుదెంచి గతంబాలించి సంతసింఁచె
నవ్వల శకుంతలాగర్భంబున శుభముహూర్తంబున కుమారుండుద
యించిన-కణ్వుండు—

కమాచి—చతురశ్రకతి.

ప॥ పోయిరమ్మా ప్రియకుమారి । భూవిభుడొ విభుకడకు ॥పో॥

అ॥ శ్రేయస్ములు గల్గుత నీ । చిన్నవానిగొని రయమున ॥పోయి॥

2 అత్తమామలనుభక్తి । నాదరించి పూజింపుము

చిత్తము హరియందుంచుము । సేవించుముప్రాణేశ్వరు ॥పోయి॥

గీ॥ అనుచు మునిబాలకులను తోడంపిన జని

కొలుపునందున్న దువ్యంతుకును సమస్క-

రించిబాలునిజూపి నరేంద్రుడరుగ

నట్లుమారాడకున్న సయ్యత్రివయనియె॥

చం॥ నరవర చూడనట్లునికి న్యామమె పుత్రునిరుంగకున్న న
 న్నెరుగవె కణ్వనాశ్రమము కీవరుదేరివె వేటకాంక్ష సుం
 దరి నినువీడ ప్రేమమున దన్నుచుటంచు ననున్వరింపవే
 మరచితివే యిటుల్ సలుప మానవనాథుల కెంచుజెల్లనే॥

మంజ—అనినతోనె యశరీరవాణి! యోయవనినాథ యిటువినుము

గనుముజేమి నీసతియె కొమరుని! గాంచుము సురసమ్మతము॥

వచ॥ అనిన భార్యపుత్రుల నేలుకొని దుశ్యంతుడు అబరవాణిచే భ
 రింప ప్రోత్సహింపబడుకతన భరితుండని కొమరునకు నామంబుంచె.
 నాభరతుడు పాలించుకతన నిదిభరతఖండమునాబడె. నతనికి వితథుం
 డు, వానికి మన్యువు, వానికి నరుడు, వానికి రంతిదేవుండు జనించిరిట్లు
 యయాశివంశంబవిచ్ఛిన్నంబుగా సాగుచుండె. నికనజామీధునకు
 ఋక్షుండు, వానికి సంవరుణుండు, వానికి తపతి, వానికి కురువు, ఆతని
 పాలితంబగుతలంబు కురుక్షేత్రంబయ్యె. నాకురువునకు సుభద్రువు.
 వానికిసుహూతుడు, వానికి చ్యవనుండు, వానికి గృతి, వానికి వసువు
 వానికి బృహద్రథుడు, వానికి కుశాగ్రుండు, వానికి ఋషభుండు,
 వానికి సత్యహితుడు, వానికి బుష్పవంతుడు, వానికి జహ్నువు, వానికి
 సురధుండు, వానికి విధూరధుండు, వానికి సార్వభౌముడు, వానికి
 జయత్సేనుండు, వానికి రథికుండు, వానికి నయుతాయువు, వానికి
 గోధనుడు. వానికి దేవాతిథి, వానికి ఋక్షుండు, వానికి భీమసేనుండు,
 వానికి పతీపుండు, వానికి దేవాపి, శంతనబాహ్లికులు జనించిరి—

మంజ—అదేనాపి తపోనియతాత్మను! నడవిజేరె బాల్యమున

అడట మాతామహరాజ్యమ్మున! కరిగె నాబాహ్లికుండు

2 శంతనుండు రాజ్యాధినాయకత! చాలకాలమిలనేలేక

సంతుగాంచె గంగాసతీయందున! సద్గుణగణు నతిబాళిక॥

వచ॥ అకుమారుండు భీష్ముండనబరగె. నాశంతనునకు దాశకన్యకయగు
 సత్యవతియందు చిత్రాంగద విచిత్రవీర్యులు బుట్టి రందు చిత్రాంగ
 దుండు గంధర్వులవలనహతుడైన భీష్ముండు కాశీరాజుకుమారికలగు
 అంబికాంబాలికలనుదెచ్చి విచిత్రవీర్యున కంటగట్టె. నతండుసంతాన

రహితుడై మృతినందిన తల్లియగు సత్యవతి పనుపునవ్యాసుండు గ్రామముగా వారికి ధృతరాష్ట్ర పాండురాజుల నొసంగె. నందుధృతరాష్ట్రనకు గాంధారియందు దుర్యోధనాది పుత్రశత్రుబును దుస్సలయనుకన్యకయు జన్మించిరి. పాండురాజుసతులగు కుంతీమామృకు ధర్మభీమా ద్వున నకులసహదేవులు జనించిరి. వారలకు ద్రౌపదియందు క్రమంబుగా ప్రతివిందుడు శుత్రసేయుడు శుత్రీశతాసీకుండు శుత్రకర్ముండు ననుకుమారులుదయించిరి. కాక ధర్మరాజునకు పౌరవతియందు దేవకుండును, భీమునకు హిడింబియందు ఘటోత్కచుండును, కాళియందు సర్వగతుండును, సహదేవునకు విజయయందు సుహోతుండును, నకులునకు రేణుమణియందు నిరమిత్తుండును, అర్జునునకు నులూపియందు యిలావంతుడును, చిత్రాంగదయందు బభ్రూవానుడును, సుభద్రయందభిమత్యుడును జనించిరి. పరీక్షిద్భూపాలా యిదిమీవంశము. యికముందు యిరువదియైదవవాడు బ్రహ్మక్షత్రుడు వానితో మీవంశమంతరించును—

గీ॥ ఆయయాతి తనయులందు జ్యేష్ఠుండగు

యదువువంశ వివరమాలకింపు

భక్తితోడవిన్న వాగినచదివిన

పుట్టబోడు హరియెబుట్టుకతన॥

వచ॥ అయ్యదువునకు ముప్పదిరెండవ వాడగు తురువునకు వృష్టియ, వానికి లోమనుండును, వానికి కపోతరోముడు, వానికి యనువు, వానికి దుందుభి, వానికి విద్యోతనుండు, వానికి బువర్హసువు, వానికి నాహుకుండు, వానికి దేవకుండు, నుగ్రసేనుండునను వారిద్దరు జనించిరి. అందుదేవకునకు శల్లూరుకుమారులును, దేవకీదేవి మొదలగు కుమారిక లేద్వరును జనించిరి. రెండవవాడగునుగ్రసేనునకు గంసాదులు తొమ్మిడుగురు గల్గిరి—

మంజ—అకంసుడవనీ భారము | కష్టలపెదతండిని జంపె

లోకంబున బల్దురితాత్ముం | డై కూరకర్మలం జలిపె॥

వచ॥ అది అట్లుండ అంధకునికుమారుండగు భజమీనునకు విధూరధుమ
బుట్టె. వానికి శినియు, వానికి భోజుండును, హృదికుండును గల్గిరి.
అందు హృదికునకు దేవమీఘును అతనికి శూరుండు గల్గెను.

గీ॥ శూరుడాత్మనతియు సుందరిమారిష

యనెడుదానివలన నధికబలుల

సుతులబడుగురవయి సుతల నేవురగాంచె

దోసతోటనంగ భాసురముగ॥

వచ॥ వసుదేవుండు, దేవభాగుండు, దేవశ్రీవుండు, సారకుండు, స్పృజ
యుడు, శ్యామకుండు, కంకుండు, నసీకుండు, వత్సకుండు, వృకుండు,
ననుకుమారులను పృథయను నామాంతరముగల కుంఠియు, శ్రుత
దేవయు, శ్రుతకీర్తియు, శ్రుతశ్రీవసయు, రాజాధిదేవియు నను
కుమారికలగాంచె. నందు పెద్దదియగు పృథనుమిత్రుడగు కుంఠి
భోజునకు దత్తపుత్రికగానిడుట నది కుంఠియనబరగె, నాయమకుంఠి
భోజునియింట బెరుగుచుండ దుర్వాసుడడుదెంచి వేల్పులంజీరు విద్య
నరింగించె—

ఉ॥ చిన్నతనంబు నన్నృథ యశేషఫలప్రద మంత్రశక్తిచే
గ్రన్ననమింటిభాస్కరుని రమ్మనిచీరిన వచ్చి వెండిపా
మ్మన్నను రిత్తప్రక నొకయర్భకు నాయమకిచ్చె నామెయ
న్నన్న యిటలగల్గె ననునారడిపుచ్చరె లోకులెల్లరు॥

శుభపంథవారి—చతురశ్రగతి.

ప॥ ఏమసేతుదైవమా న॥ న్నిట్లు జేశితే ॥ఏమి॥

అ॥ యీమహిదలయెత్తితిరుగ॥ నెట్లగును వివస్వత ॥యేమి॥

2 కన్నియ నేచిన్నవాని॥ గాంచితినని విన నగరే

నన్నెవ్వరు వరియింతురు॥ నాగతి యెటుగావలెనో ॥యేమి॥

చం॥ అనివిలపించి బాలకుని యందొకచోటను నిల్పిదాడిచ్చే!
ఘన మయమందసం బారుల గాంచగ నీకయ దేనొనర్చి లో

ననిచి సముద్రోవేగమున నన్దిజన న్నొనరించి యిల్లుడే
రినగని సూతుడాసుతుని ప్రేమచుబెంచుకొనె న్నమారుగఁ॥

వచ॥ ఆబాలకుండే భారతరణ మూలకందంబగు కర్ణుండు నాకుంటిదేవిని
సీపిపితాహుండగు పాండురాజు వివాహంబాడె. నామెతో బుట్టు
వగు శ్రుతశ్రీవసనుచేదిభూమిశుండు దమఘోషుండు వరింప వారికి
శిశుపాలుండుగల్గె, నామెసోదరియగు శ్రుతదేవను వృద్ధశర్మ వరింప
వారికి దంఠవక్తుండుబుట్టె. నిట్లుకడమవారలుగూడా సంతానవంతు
లైరి. కంసచెలియండ్రో వసుదేవానుజులు వరించి సంతానవంతులైరి.
యిక వసుదేవుండు—

సీ॥ రోహిణీసతిని వివాహంబాడి బలగదసారణవిపుల ధృవాదులగ నె
పారవియందు సుబాహుసుభద్ర దుర్మదభద్రుల నెడి కుమారులగ నె
మదిరనువరియించి మరియు నందోపనందనకృతకాదుల తనయులగ నె
కొసల్యయందున ఘనకేళిరోచనయందు ప్రహస్తు హేమాంగదుగ నె
యవల నిశయందు యదుముఖ్యులైనవారి
వెలయు శ్రుతదేవయందు ద్విపృష్ఠనొకిని
శాంతియందున బదుగుర సాహదేవ
వలన నెనమండ్రో తనయులంబడసె వధిప॥

వచ॥ ఆవలదేవకియందు కృమణుబుగా గీర్తిమంతుడు, సుషేణుండు, భద్ర
సేనుండును, ఋజువును, సదమనుండును, భద్రుండును, సంకర్షణుం
డును, నను యేశ్వరగాంచి కంసకరవాలంబున కర్పించె. నావల—

మంజ—ద్రుప్తహవన మొనరింపగ । పాపులతోడ్రోగడతేర్పగను
శిష్టజనావనుడగు శ్రీహరి । కృష్ణుండై జనియించగను॥

వచ॥ ఆబాలకుని పెందయశోదలకడ నుంప నతండుబెద్దయై కంసాదివిషు
తుల వధియించెనన పరీక్షన్మహారాజు శుకయోగీంద్రా ఆశ్రీకృష్ణ
పరమాత్మ చరితంబునేకభంగుల వచియింతు రదిసాకల్యంబుగా నెరి
గింపవేయనునది శ్రీమహాభాగవతాంతర్గత సవమస్కంధము—



శ్రీరస్తు—అవిష్టునస్తు.
శ్రీగురువరబ్రహ్మణేనమః.

శ్రీ కృష్ణ భాగవతము.

(హరికథ)

దశమ స్కంధము

—:0.—

13 శ్రీకృష్ణ జననము

గీ॥ శుకమునీండు తరసుతున కనియెనను | లుగ్రసేనాత్మజుడు
కంసుడుజ్వలముగ | సోదరిని దేవకీదేవి శూరసేను | తనయుడగు
వసుదేవుని దారజేసి॥

మంజ—చెల్లెలినిన్వశురాలయంబుకడ | తేర్చిరాగ నుంకించీ
యల్లము సంతసవార్ధిదేల రథ | మున్నెక్కగ గావించీ॥

వచ॥ కంసన్వపాలుండే రథచోదకుండై చనుచుండ మార్గమధ్యంబున
నెల్లరాలింప నంబరవాణి యిట్లనియె—

మంజ—అవురాకంసా సంతసింప కీ | యతివశందనులలో
తవునని యెగ్గిదవవాడు మారక | మవురా నీకీయులలో॥

గీ॥ కంసుడరెత్తియూలించి కనకరథము | వేగడిగి కరవాలంబులూగి
కోప | ముక్కు మిగులంగ చెల్లెలురెక్కబట్టి | దిగిచినంగాంచి
యావసుదేవుడడలి॥

మలయమాయతమ—చతురశ్రీ.

ప॥ బావాతగునా | యిశిశేయమగునా || బావా॥

అ॥ కోవిమండపు సర్వమెరిగిన | కువలయేశుడ విట్లుపేమిడి
బోవిడచి చెల్లెలినింజంపగ | బూన నగరయెల్లరునునా || బావా॥

మ॥ అనిప్రాప్తింపగ కంసు డిట్లనియె । బావా మింటిపల్కుల్ విసక
తనకుంగానిది ధర్మమున్నెదయి । చిత్తబంధు నకదాల్ప కీ
వనితంజంపి మరొక్క చంద్రముఖుని పైవాహముంజేతు నీ
కు ననున్నడ్డకు పొమ్మటన్నగని యాహారాత్మతో నిట్లనుక॥

వచ॥ బావా! కంసరాజా! స్త్రీహత్య కేలఁబూ నెదవు. యీసతికిజనించు
కుమారునివలనఁగదా! నీకుభయము—

గీ॥ తరుణికిజనించు బిడ్డలందరను నీకు । నిచ్చెదను వారిజంపు మీ
యింటివిడుపు । మనిన సరియని కంసుఁడా యితివవిడచి । యింటి
కేగెను పైకొన్ని యేండ్లుగడువ॥

వచ॥ దేవకీదేవి చూలుధరించి కీర్తిమంతుఁడను కుమారుఁగాంచె. వసు
దేవుఁడాడితప్పుజాలక నాబాలకుని కంసుదరికిదెచ్చి—

మంజ—బావానీచెలియలు యీబాలుని । ప్రసవించెను గను నేడు
వేవేగమ వీనింఁదెగజూచియ॥ భీతినిచుదినివీడు

2 మనియెరిగించిన కంసుండనునో । యనఘా యిటువినుము
వసుభయపెట్టున దప్తమగర్భము । గనుకీపీని గొనిచనుము॥

గీ॥ అనుచు మరలబాలు నావసుదేవున । కొనగిహంపుపిదప కొడు
లేపు । రుద్రవిల్లిరొకట లోకసంచారి నా । రదుఁడు వచ్చికంస
రాజకనియె॥

తైత్తిరి—హాపకం.

ప॥ కంసరాజ చిత్రోత్తరము । గానున్నది కొలదిలోనె ॥కంస॥

అ॥ హంసవాహను కడవింటిని । యదిసీతెరిగింప గంటిని ॥కంస॥

2 సురలందరు యాదవులై । ధరణిజనించిరి యిక శ్రీ
హరిదేవకి గర్భంబున । యవతరించునట వింటివె ॥కంస॥

3 ధామిదేవికి నీబోటులు । మోయరాని భారమంట
నామురారి మిమ్మందర । హతమార్ప జనించునంట ॥కంస॥

చ॥ అనివచియించియేగు కలహశను పల్కులకంసు డెంతయుక
కనలువహించి చిత్తమున గంపిలి యావసుదేవు దేవకి

జనమనిగూడబట్టి చెరసాలనుబెట్టి గలంచుచుండ నా

వనితకు గర్భమేడవది భంగమునందుట మోడమందుచుకా॥

వచ॥ జాగరూకత వర్తింపునుండ మరల దేవకీదేవిగర్భంబు ధరియించిన
విధాతసహితనిలించ బృందంబకుదెంచి యామెగర్భస్థబాలునింగురించి.

ఓలహరి—చతురశ్రింగతి.

ప॥ సకలలోకపాలనా । శరధిశయానా దీన ॥సక॥

అ॥ అకలుష వర్తనావనా । యథువినాశనా ॥సక॥

2 నీమహిమార్ణవమీద । నేరికొను మురహరా

భూమిసతీ భారముడుప । బుట్టొందితి ద్వాపరమున ॥సక॥

గీ॥ అనుచుప్రార్థించి నిర్జరులరిగినంత । నెలలు తొమ్మిదిగడచన నెల
మిశ్రావ । కాఖ్యనూసంబు మరుపక్షమందు నవ్వు । మిని మహా
విష్ణుమూర్తి భూమినిజనించె॥

మంజ—నలుభుజములుమన శంఖచక్రముల । నవతరించి యంతకా

కిలకిలనగి దేవకివసుదేవుల । కీగతివచించె వింతకా॥

వచ॥ మీకు ముమ్మారు జన్మింతునని యిచ్చినవరం బింతతో దీరినది.
నన్ను వెంటనే గొనిచని వేపులైలో యశోదవ్రక్కం బకుండబెట్టి,
యాపెవ్రక్కనున్న బాలికంగొనిరండు. నాతో నటయోగ మాయ
జనించినది. దానినే, దుర్గ, భద్రకాలి, విజయ, వైష్ణవి, కుముద,
చండిక, కృష్ణ, మాధవి, కన్యక, మాయ, నారాయణి, యాశాస,
శారద, యంబిక, నాబదునాల్గు నామంబుల మనుజులు గొనియా
డుదురని—

మంజ—శ్రీలలనాధపుండంతట గనకడు । చిత్రింబుగ చెరసాలకా

బాలుండై పడియుండ తండిగని । పట్టినెత్తియటుగదలకా॥

గీ॥ ద్వాపరములు తెరచుచున్నాయు చారయహరి । పానుపగు శేషు
డండగా బరగుచుండ । మధురవిడనాడి వేపులైమాపటికడ । జేరి
వసుదేవుడతనిం జేర్చెత్తి॥

వచ॥ ఆయన్వకడచున్న బాలికందెచ్చి చెరయందున్న దేవకికడ నిడువంత
నాబాలరోదసంబునం గావలివారలు మేల్కొంచి కంసుకడకరిగియెరిగింప.

మంజ—కరవాలంబును బెరికి ఎంప్రలుచు | కటములదర కంసుండు
బిరబిర దేవకీడాసి బిడ్డనతి | వేగలాగి కొనె జండు||

మలయహరణము—చతురశ్రగతి.

ప|| అన్నావినుమా | విన్నపమొక్కటి || అన్నా||

అ|| మన్నించుము దయ | నించుము చెల్లెల || నన్నా ||

1 అల్లుడు నీమారుకుడని వింటివి | యేలలే నాబిడ్డల బారిగొంటివి
యిల్లిపుడికోడలివిడనాడుము | వేడుకొందు సుతభిక్షమిమ్మచుచు|| అన్నా||

గీ|| అనుచు దుఃఖించుసోదరి నట్టెగెంటి | బాలికను నేల వైవగాదూల
కంబ | రంబునన్నిల్చి కంసమారకుడువృద్ధి | నందుచున్నాడు
యొక్కెడ ననుచుబలికె||

వచ|| కంసుండ్రోత్తిచూడ నామాయాబాల యోరీదుర్మతి దేవకీబిడ్డల
నందర బారిగొంటివి. ఇకనీపాపము పండినది. కొలది దినమ్ములో
పికంబట్టుము. యని యంబరమార్గంబున నెందోడనిన—

గీ|| కంసుడాదంపతులగాంచి కడుకృతఘ్ను | డనుజడుండు బాలక
ఘాతి నను ఓడింపు | డనిసభకు నేగి నష్టంపునర్భకుండు | యెం
డునోవృద్ధి గనునట యేమిసేతు||

మంజ—అనియోచించియు పూతనాడులను | యరసిదేశమంతటను
గనిబాలుర మ్రొందింపుడచుచు వెన | బనిచె యుల్లమలరగను||

గీ|| అంతవేపలైవాన వ్రజాంగనలెడ | సంతసిలి నందతనయుని జన
నమునకు | వలయురీతుల యుపచారములు బొనర్చి | పెంచుచుం
డిరి కృష్ణుడక పేరుబెట్టి||

ఉ|| ఒక్కదినంబు కృష్ణ రజతోజ్వలతోట్ల భరుండబెట్టి పెం
పెక్కినకూర్మినూచి నిదురింపగజేయ నృపాలునాజ్ఞచే
రక్కసకాంతి పూతనకరంబు విషోక్త కుచంబు లోపుగా
నక్కడ కేగుచెను వ్రజాంగన వోలెనుసుందరాంగియై||

వచ|| వచ్చి బాలునిగాంచి ఆడరంబునబోలె యెత్తిముద్దాడి—

కాంభోజి—తృతీయకతి.

ప॥ చిన్ని బాలనా । చన్ను గుడువరా ॥ చిన్ని॥

అ॥ నిన్ను గనినయంత । నన్నా చేపువచ్చె ॥ చిన్ని॥

1 యింతచక్కవయ్య । వెట్లుబుట్టితివిరా

పంతమేలలేరా । పాలుద్రావిపోరా ॥ చిన్ని॥

గీ॥ అనుచుగోపాంగనలు వద్దటన్నవినక । బాలకృష్ణునియై త్రి చన్నా
లొసంగ । నతఁడు విషయుత క్షీరంబు లామెచ్చాణ । వాయువు
ల్లాగ నొకగుక్కబట్టియంత॥

మంజ—విలవిలదన్నక పూతనపుడమీ । స్త్రీబడివెన మృతినందె
జలములదీశిండు భూతిరక్షునిడి । చంటినాని తలిచేసందె॥

వచ॥ అంత కొంతకాలంబు కడ చన కంసునిపంపున శకటాసురుండు
యరుదెంచి—

ఉ॥ నందకుమారుడున్న సదనంబు సమీపము నన్వసించ నా
చందమెరుంగక నిశ్చయశయ్యను దత్తకటంబు నీడ ని
ల్పూ దనుజాంతకుండు చిరుపాద విఘట్టనసల్పినా జనుల్
గొందలమంద రక్కసుడు గూలెనుచ్చాణమువీడి భూమిపై॥

మంజ—అంతనొక్కవత్సరము గడచనగ । నాకంసుని పంపునను
వంతరక్కసుఁడు తృణావర్తుడొక । వృషదత్తుని గతిగాను॥

వచ॥ వచ్చి బాలకృష్ణుని సుడిగాలియై యెత్తుకొని యంబరవీధి కెగసిన
శ్రీకృష్ణుండు వానిమెడంబట్టి భువింబడగొట్టిన నతండు మృతినందె-
గీ॥ ఇట్లు కంసుండుగావించు నెగ్గులెల్ల । గడచి కైశవయును గాంచి
బుడుతలజత । నాటలాడుచు గవవ్రజబోటులిండ్ల , దుడుకు పనులను
గావింప దొడగెనంత॥

వచ॥ గోపకాంత లరుదెంచి యశోదాదేవింగాంచి—

దివ్యమణి—రూపకం.

ప॥ అమ్మవినుము విన్నమితుము । చిన్నికృష్ణుని కొంటెపనుల ॥నమ్మ॥

అ॥ యిమ్మగువను జీరిమోవి । నిట్టెగరచి వడిపరువిడె ॥నమ్మ॥

2 బాలులకును పాలులేవని | బాలెంతలు మొరలిడవిని
నాలకు గోవులను విడచె | నాలముచేయుచు నగుచు ||నమ్మ||

3 వారింటను గలకడవల | తోరంబగు నెయ్యిద్రావి
వీరింట నాకడవలనిడ | ఘోరంబగు పోరొడవెను ||అమ్మ||

4 బంతితప్పివచ్చి పడెనని | భవనము వెనుకకుజేరి
యితిజలకములాడుచుండ | యెంతనున్న వలువదెచ్చె ||నమ్మ||

మంజ—వారింటను వెన్నందిని కోడలి | వదనంబునకును బూసెన్
మీరి దొంగవీవనుచు నత్తకడు | దూరిదండనము జేసెన్ ||

2 కొడుకులులేరని యీసతికడునగ | గుడువ నీకొడుకు వినియెన్
కొడుకులు గల్గుదురిక ననుమగనిగ | గొనుమంచని పైబడియెన్

3 నిదురగాంచు మావట్టిచుంచు నొక | మాదయుత లేగకుగట్టెన్
యడలించుచు వీధులవెంటనుదా | నతిమోదంబున ద్రిప్పెన్ ||

గీ|| అనుచువచ్చియుచు వారలకనియెనా కు | మారుడెప్పుడు నను
విడిపారుటెరుగ | డైన నేమందలింతు మీరరుగుడంచు | వార
లంబంపి కొమరుని చీరియెత్తి||

వచ|| ముద్దాడుచున్నంత బలరామామలరుడెంచి, అమ్మా! కృష్ణుండు
మన్నుదినెనని యెరింగింప, యశోదాదేవి బాలకృష్ణున కిట్లనియె—

మంజ—మన్నుదినగ నీకర్మమేమి నా | యన్నయుడుగరలులేవే
వెన్నలేదె కావలశినంత లే | కున్న దెచ్చినీకిడనే||

శీలా—చతురశ్చోగతి.

ప|| అమ్మ మన్నుదించునా | అంత తెలివిహీనుడనా ||అమ్మ||

అ|| నమ్మకుమా వీరిమాట | నన్నుగొట్టింపవెంచి
యిమ్మార్గముబన్నిరి కా | దేనింజూడుము నోరు ||అమ్మ||

కం|| అని నోరుదెంచి చూపిన | గనినండునివత్ని దానగల సర్వజగా
ళిని విస్మయత్వముంగని | యనుమానముదలగి విష్ణుడనినమ్మి వెసెన్ ||

మ|| కలయో వైష్ణవమాయయో యితరసంకల్పార్థమో సత్యమో
తలపన్నేరక యున్నదాననో యశోదాదేవిగానో యర

స్తలమో బాలకుడెంత యీతని ముఖ స్తంబై యజాండంబు పృ
జ్వలమైయుండుట కేమిహేతునొ మహాశ్చర్యంబు చింతింపగాఁ
వచ॥ అనిభక్తిభావంబునం దలంచుచున్న యశోదాదేవికి భగవంతుడు
మాయంబూదవించిన నామెబిడ్డనెత్తి ముద్దాడె. నవ్వలనొకనాడుదధి
భాండ వికలసంభాచరింప, యశోదకోపించి తనలోవిచారించి యెట్ట
కేలకు శ్రీకృష్ణునింబట్టి—

మంజ—తామ్రులచేనొకరోల యశోదా । తరుణిబాలుని బిగింజె
బాలుడు రోలీశ్చుకయద్జనతరు । వరముల రెట్టిని గూల్చె॥

2 ఆమద్దులు భవిబడి గంధుర్వులు । నై యంజలిసంధించి
శ్రీమాధవ దామోదర యనినుతి । జేసిరిట్లు తలవంచి॥

కళ్యాణి—రూపకం.

ప॥ పరమపురుష దామోదర హరి । పద్మనాభ శ్రీనరకేసరి । పర॥

అ॥ దురితాలవి భీకరకుకార । తోయజాక్ష శ్రీభక్తరక్షణ । పర॥

2 నీకరుణాను మాఘోరశాపములు । దీరెముక్తులము నైతిమి
యోకంజాక్షా నీపద । యుగ్మమెద వసింపజేయుము । పర॥

వచ॥ అనిప్రార్థించి గంధర్వలోకంబదిగిరి యవపరీక్షితుండు యోగీంద్రా
ఆగంధర్వలెవ్వ రేకారణంబున నెవ్వరివలన నీ శాపంబుగల్గిన దెరి
గింప వేయన-శుకుండిట్లనియె—

గీ॥ ధనదుని కుమారులిర్వురు తరుణులగొని । వెండికొండ పయింజేరి
యుండివస్త్ర । హీనతంజరియింపగా గానరతుడు । నారదుడుగాం
చితపియించె వారినిట్లు॥

మంజ—వర్షములేకయె పిడుగులు వడకయె । బాకీవృక్షములు బడుటకా
హర్షంబునకును మారుగభీతిని । యాదవులకు నొగినిడుటకా॥

గీ॥ ఎదియొ నుతాత్పతహేతువు యేయని భయ । మండి వ్రేపల్లెవీడి
బృందావశమున । వానమొనరింప నూహించి పశులసతుల ।
హితులతో నటకేగిరి యెల్లవారు॥

వచ॥ అటబలరామకృష్ణులు యాదవకుమారులం గలసి కేపులమేప

యమునానదీతటంబునకరుగ కంసుపంపున నొక్కరక్కసుండు క్రేపు
రూపమూని మందచున్నంగని కృష్ణుండు—

మ॥ గనుడి నేడొక మంచిలేగ పశుసంఘంబునునంజేరె నా
మనముత్సుకృముజెందె ముద్దుగొన బల్బాటల్ వృథాగాదె యు
చనియావత్సముడాసి పాదములు పుచ్చుబుక బిగంబట్టి యొ
క్కనగంబందున వేసించె నదివీక యార్వగోయంచును॥

గీ॥ యిట్లు వత్సాసురుండు నశించు మీద । గొంగడులునెత్తి యెగు
రుచు గోపబాలు । రమిత సంతసమున కృష్ణునభిచుతించి । రంత
నొక్కదినంబు వనాంతమందు॥

వచ॥ బకాసురుండరుదెంచి కాసారంబుదరి నిలచిన కృష్ణుండెరింగి వాని
దరియగా—

మంజ—బలవంతంబున శ్రీకృష్ణునియా । బకాసురుడు మింగె
వెలవెలబోవుచు తోడిబాలకులు । భీతివనధిలో గుంగె॥

2 కృష్ణుడంత నద్దానిగర్భమును । జీల్చివెలికిదావచ్చె
జిఘ్రు పూవులవానగురియ । నాచెడు రక్కసుడటుచచ్చె॥

వచ॥ అవలనొకనాడు కంసుపంపున యథాసురుండు అజగరా కారంబున
వచ్చిన శ్రీకృష్ణుండెరింగి మిన్నకున్న నదిమార్గంబునడ్డి గోపాల
బాలురంగోవులన్నిగిన కృష్ణుండు దానిదవడలంజీల్చి చెండాడి
దానిగర్భంబునుండి గోగోపబాలురందీసి కృష్ణుండు వారలకిట్లనియె—

సురటు—త్రిశృంగతి.

ప॥ చలిదివింద మందరమీ । చల్లనివృక్షములనీడ ॥చలి॥

అ॥ జలజాపుడు మింబనతి । చండతనము చూపించెడు ॥చలి॥

2 కడుబడలి యుండితిమీ । కాననంబునం దిరిగి

నుడివడితిమి యీచెంగట । చూడపశులుమేయుచుండు ॥చలి॥ (నొక్క
సీ॥ మాటిమాటికి వ్రేలునుడచి యూరించుచు నూరగాయల దినుచుండు
దొకనికంచములోని దొడిసిచయ్యనమింగి చూడులేదని నోరుచూ
పునొక్క । డేసురార్దుర చల్లుతెలమి కున్నిదమాడ్లి కూర్కొని కూర్కొని

వచ॥ అంత పరీక్షునృహారాజు హస్తినాపురంబునకరిగె. కొంతతడవున కా
శమీకమహర్షి కుమారుండగు శృంగి యరుదెంచి తండ్రిమెడం దవి
లిన సర్పముంగాంచి-

శా॥ ఔరామేమిది సర్పమెల్లుడవితెక యయ్యోయిటుల్ జేసిరే
కూరాత్ముల్ జనకుండెరుంగఁజొమదిక గొంకేకీ త్రియంగ లే
నేపుణ్యులు దీనిబాధ దొలగజేయంగ లారల్హితుల్
లేరేదగ్గర తండ్రిపల్కవె యికి లేవే ననుంజూడవే॥

తే॥ గీ॥ అనుచుచింతించి రోహిణి నోడుగరచి
పాపభయమించుకొనేని బహుశత్రుడి
గళమునం దహివైచిన కలువచిత్తు
డడగు తక్షక విషత సంతాపములను.

వచ॥ అని శపించిన శమీకమహర్షి వెలివంది చూచి సర్పముం దొలంగ
ద్రోచి జరిగిన వృత్తాంతంబంతయు నాలించి దివ్యవృష్టివలన నారిసి
కొడుకుంజూచి,

ఖండగతి—నాటకురంజి.

ప॥ ఎంతపనిచేశితివి । యిలరేని శపియింతె॥ యెంత॥

అ॥ కాంతారముననైన । కడుసుఖాపగ జేయు॥ నెంత॥

1 సకలభూపాలుండు సజ్జనగణ వినుతుండు
అకలంకయశోభనుండు । ఆర్యజనసమ్మతుండు॥ యెంత॥

2 ధర్మమునున్దాల్చి పా । దంబుల నహపెనువాడు
నిర్మలుడు శరీరీతు । నే శపియింతువెతనయ॥ యెంత॥

తే॥ గీ॥ అనిగుతుని మొదలించి యమ్మనివరుండు
తనమశిష్యుల నికుప్తర దఁతినగరి
కనివెళాపంబు తెరిగు నాతనికెరుంగ
జేయుడని చింతితుండై యశేషఘణితి.

వచ॥ భూసురకుమారులుహస్తినాపురంబునకరిగి-పరిక్షిద్బాపాలునింగని,

చ॥ నరవర వేట వేడు కవనంబుచుజొచ్చి శమీకమాని కం
ధరమున సర్పము న్బెనిచి నావని తత్సత్తుడైన శృంగి భీ

కర తరశాపమిచ్చె నెరుగందగు తక్షక దుర్విసాన్నిచే
మరణమునంద మీకిట క్షమాగతిలేక నె యేడునాశ్చక్కున్.

కం॥ అనియెరుగచేళివారలు । చనిరి నృపాలుండుశోక సమ్మూర్చితుడై
పవవివని కెందుకేగితి । మునికవ మానంబొసర్చి మూర్ఖుడనైతిన్.

వాదనామక్రియ—రూపకం.

ప॥ ఏమిసేతుచైవమా నే । నెందుబోదు తెరవెయ్యది॥ యే॥

అ॥ పామరుండనైమానిని । భంగపరచినాడనిక॥ యే॥

మి॥ యీమహినికనాకుదిక్కు । యేమహనీయులుగలరు
యేమిగతియొనాకుయింక । యెట్లుదివిని జేరగలనొ॥ యే॥

2. భోగంబులులేకయున్న । యోగంబులులేకున్న
యేగతిదరియించెద నా । కింకజన్మము లెన్నిగలవొ

మి॥ అగజరక్షణకడకే । నరుగజాల నైతినిగద నా
కీగతి మరణంబొదపుట । యెరుగనైతి సాపినైతి॥ యే॥

తే॥ గీ॥ అనుచు ప్రాయోపవేశంబు నందిదర్భ
శయ్యవసియించి యున్ననా జనవరుకవ
కరుగుదెంచె వశిష్ఠుండు సురమునియుత
శుకమహర్షినిగూడి యస్తోకభక్తి.

వచ॥ యిట్లరుదెంచి యందరు నృపునమనయించిరి. అందు శుకుండు
పరిక్షిద్భూపాలా, యేడుదినంబులు గడువుండ తరింపజాలనని భీతిపడ
నేల గోవిందనామభజనంబున రెండు గడియలలో ఖట్వాంగుడు
తరింపడే, భాగవతసమాకర్షణం బాచరించిన తిరిగి జన్మింపజాలని
గతింగాంతువు. అన దేవా తామా భాగవతకథావిధానం బెరిగింపు
డని పొండ్లించి అందుల కొడంబరచె—నిది శ్రీ మహాభాగవత
పురాణమునం పద్ధమస్కంధంబు.

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.



శ్రీ గ్రంథ—అవిఘ్న సుస్థు.
శ్రీ గురు పరబ్రహ్మణే నమః.

శ్రీ కృష్ణ భాగవతము.

(హరికథ) ద్వితీయ స్కంధము

—:౦.—

2. కపిలోత్పత్తి.

తే॥ గీ॥ అనధింపుడు శుకయోగి యనియెవర్ల
ములు అకారాది త్రియముచే వాసగెప్రణవ
మదిజపించుచు భగవంతు నాశ్రయించి
ధన్యమనుబొందవచ్చు సత్యంబుగాను.

మంజ—అనన్తపుండు భగవంతుడైదు దా । నలరురూపమెది
వినిపింపుడు నాన్యాసాత్మకా డి ట్లవియె తెలియుడది.

వచ॥ శరీరంబున నవ్వీగాటుండు తేజరిల్లు నెట్లన. పాదమూలంబు పాతా
ళము, పాదాంగభాగంబు రసాతలంబు, గుల్ఫంబులు మహాతలంబు
జంఘలు లలాతలంబు జానువులు సుతలంబు, ఊరువులు వితలంబు,
జఘనంబు అతలంబు, నాభినభంబు, వక్షసు తపోలోకంబు, శిరము
సత్యలోకంబుగా వర్తిల్లు మరియు.

సీ॥ బాహులి, వ్రాసులు వదనంబువహిని కర్ణంబులుదిశలు స్రూణంబుగాలి
శ్రవణేంద్రియంబది శబ్దంబునేత్రంబు లంతరిక్షంబు దివాకరుండు
రెప్పలుపరికింప రేయుంబవశ్య భూమధ్యంబుగనగ బ్రహ్మపదమగును
ధాతువులుజలంబు దగనాలుకరసంబు భాషణవేదాళి పంజ్జపుత్ర)
మిత్రస్నేహంబులెఘ్మలు మేటిగిరులు
రోమసంఘంబుతరువులు రూఢి స్తనము

లరయధర్మంబు నాడీ జలాశయములు

నా విరాడ్రూపునకు తనువీ విధంబు.

తే॥ గీ॥ మరియునాతనిముఖము బ్రాహ్మణులుభుజము
లవనినాఘలు నూరువు లనగవైశ్య
లంఘ్రిజులు శూద్రులట్టి దేవాదిదేవు
భక్తిచేగొల్పి తరియింప నచ్చుజమ్ము.

వచ॥ సద్యోముక్తియు, గృహముక్తియు నని ముక్తిమార్గంబులు రెండు
తెరంగులు. నవి భక్తిమార్గంబుచే సులభసాధ్యంబు—

కల్యాణి—చతురశ్రగతి.

ప॥ భక్తినిమించిన సాధనలేదిక । ముక్తినిగోచనయెడలక॥

అ॥ శక్తికొలదిహరి స్మరణచేయగను । జాలుజన్మరూచేరుక॥ భ॥

1. పశుకత్త్యాదులవలె సంసార । పంకములోబడి సమయ నేలను
వశమేహరిభక్తి వినుతింపగ । వారిజభవ రుద్రాదులకైన॥ భక్తి॥

తే॥ గీ॥ మున్ను తీర్చివాసుడై వెన్నుడు పడు
నాల్గులోకంబులసృజింప నాగుగాక
యొరుల నియమింపవలెనంచు నూహజేయ
నాభికమలంబున విధాత శోభబుట్టె.

వచ॥ ఇల్లుజనించిన బ్రహ్మ విష్ణునింజూచి అంజలిమోడ్చి—

భైరవి—రూపకం.

ప॥ యీవే సర్వాధారుడ । వెలమిభక్త పోషణుండ॥ ఏ॥

అ॥ దేవానిను పొగడదరమె । దితిజారినుతనూరి॥ యీ॥

మి॥ పావన శయనభుజంగా । పాపతిమిర ఘనపతంగా
నీవిమల కరుణతోడ న । నిత్తరిబ్రోవవెశ్రీహరి॥ యీ॥

మ॥ అనిప్రార్థించువిధాత కాహరియనుక యబ్జాసనా సర్వలో
క నియంతిన్నిను చేయగోరి గలుగంగాక్షేశితీక సత్యలో
కనిచానః బున సృష్టిసల్పుము ననుక గాధాచరక్తిక స్తవం
బాసరక జీయుచు నా సతండుచనెనో యర్చితయాలించితే॥

వచ|| అంత నావిధాత యీచతుర్దశ భువన నిర్మాణంబునకుంబూచె. ని
భాగవత పురాణంబాద్యంతంబు నారదునిచేగోరంబడి విధాతయెరిగించి
మంజ—నిగమార్థప్రతి పాదకంబు మా. నిత భాగవతంబీవు
దగవివరంబు గవరచియింపుము నా. తనయజస్మలికరావు.

అ|| వె|| అనగవల్లెయనుచు నానారదుండు నా
జనకుడైన వ్యాస సంయమివచు
కెరుగజేయ నతడు విరచించెముప్పురి
వేలగింఘమిది సవిస్తరముగ.

అ|| వె|| అవశిష్టుడనియె నధిపయిం కొంపొక
టాలకింపుమిన్ని యతులమోక్ష
మిచ్చునెట్లునని యెన్నియోగింఘ సం
తానములను వ్యాస మూసించి.

వచ|| తనివి సనక పున్నామ సచికోత్తారకంబగు సంతానంబులేదని తపిం
చుచు వీర్యంబువర్జింప యెదుట నడయాడునుకంబు చానిందావి
సద్యోగర్థంబున సేమహత్ముం డుద్భవించె. నితండిబ్బాగవతం బాసాం
తముంజదివి విరాగుడై వస్త్రమృవదలి గమ్యుస్తాన నిర్ణయంబులేక
వనింబడి చనుచుండ. వ్యాసుండు పుత్రాభిలాషియై కుమారా యని
పిల్చుచు మెటనంటి పోవుచుండ రంభోర్వశ్యాదులు కొలనియందు
చేలంబులువదలి జలకంబులాడుచు నట్లెయరుదెంచి నమస్కరించిరి.
మెటనరుదేరు వ్యాసభగవానుంఁగాంచి చేలంబులుధరించి నమస్కరిం
చిన నతం డాగ్నేర్వచకితుండై వారల గతంబేమియనియడుగ మీ
కుమారుడు నిర్వికారుండై బంధవర్జితుండైన కతన వీరు సచేలచాలా
విహీనలాయను విచారంబులేడు. తామో పుత్రీషణ వదలజాలక విల
పించుచు నేగుచుంటిరి అని యెరిగించిన మరలి యమ్ముని నిజనివాసం
బుచేరె నట్టిమహాత్యంబుగల యీపురాణం బాలించిన మోక్షము
కరతలామలకం బగుం గాదేయన పరీక్షితుండు శుకయోగికి నమస్క
రించి తత్కథావిధానం బెరిగింపుడన శుకుండిట్లనియె-నిది శ్రీమహా
భాగవతంబునం ద్వితీయస్కంధము.

ప॥ సనకసనందనాది ముని సంఘములోక్కడరి స్వీకుతం వా
సునిగను కాంక్షతో వెడలి సుస్థిరమానస తన్వివస్తులై
వనజభవాది వంద్యులయి పావనులై హరిమందిరింబు చే
రిన నటనిత్యకావసులు లీలజయా విజయుల్ మందోద్ధతిక్ ॥

శంకరాభిషేకం-యాపకం.

ప॥ నిలుడునిలుడు బాపలారా యలవిగాదు నగరు పొరగ ॥ ని॥

అ॥ పలువతనము చూపగమీ ! బాబుగాజినామ్మాయిది ॥ ని॥

1 మునులమనుచు ఘనులమనుచు | ప్రొద్దెల్లనురానుపోను
కొనివైచిరె హరినియ్యెడి | కూడపచట మీయాటలు ॥ నిలు॥

వచ॥ అని యడ్లగించిన సనకసనందనాదులు కోపించి రండు సనందను
డిట్లనె—

తే॥ గీ॥ మాకు చొరరానితావు లీ మహినిలేవు

యట్టి మమునడ్లగించితి రగుట శాప

మనుభవింపుడు పుడమి దేనాచులగుచు

బుట్టుడిక కామక్రోధముల్ కట్టికుడువ-

మంజ—అనిశేపియించిన విష్ణుడెరిగి యా హామోసంబయ్యె

ననునమ్మిన పరిచారులు శాపా నలమునగాలగ నయ్యె.

వచ॥ అని తలంచి విచారించుచు ముచులకు పసిసన్నుండై జయవిజయ

లారా! ఒడలెరుంగక యెంతటి ఘోరశాపంబు గాంచితిరి. నేను సర్వ

శక్తియుతుండనయ్యె విప్రశాపంబు వారింపనోషను-

తే॥ గీ॥ విప్రశాపంబునకునేనె వెరతునన్ను

నారదుడు శిక్షెను దశావ తారిగాగ

నవలభ్యగుమాని తన్నె న్నలైవనేమి

చేయజాలను యొకనమ స్కృతియెగాక॥

మ॥ తెలియజేయుడు మీమనంబెటులొ వృద్ధిక్ రాక్షసాకారులై

చెలిమిన్నేను భవంబులన్నను గనక చిత్తంబొనైరంబునం

దెలమిన్మాడు భవంబులం గనగ మీయిష్టంబొ యోచించి నా

విలసద్భక్తి జయుండును నిజయు డవ్వెన్ల మదింగొల్పుచుక॥

మంజ—అనఘయోగు జన్మంబులను కే। మవనిలోనిలువలేము ॥

వినుశువైర మైనను త్రిజన్మలే। విధిమాకిలులన్నిడుము.

వచ॥ అని సనంధనుంజూచి మాకు రాక్షసాకారంబు లిచ్చి జన్మింపం జేశితివి. మేము జనించినపుడెల్ల నీవును మాతో జనించి హరినామ స్మరణంబును మాకర్ణంబుల జొనుపుమన వలెయుని రంత జయవిజ యులు హిరణ్యాక్ష హిరణ్యకశ్యపులై పుట్టినపుడు సనంధనుండు పక్షిమండయ్యె. రెండవవరి రావణ కుంభకర్ణులైనపుడు విభీషణుండైజనించె. మూడవవరి శిశుపాల చంతవత్తులైనపుడు విదురుండై జనించె. నన—

తే॥ గీ॥ వినిపక్షితు డామూది విధమంగ

దెల్పుచునెడ సుకయోగి యిటు తన

విభుని కశ్యపునింగని పక్షమాతోనం

గు రతిగోర నాతడా తరుణికనియె.

కేవలగౌత—చతుశ్రగతి.

ప॥ చాలుతగను నీకోరిక । చానాసమయముగాదు॥ చాలు॥

అ॥ గోలయించుకంతతాళుము । కోర్కెదీర్తు నమ్ముముయిలు॥ చా॥

1. తలపగ భానుడుపశ్చిమ । జలధిమునుగ నగుగురుండై

వలదాస్త్రోస్త్రంకినిమ్మా । బాధింపకుతొలగుముసతి॥ చాలు॥

మ॥ వనితా కాలముగాదు తాళుమనుచుక వాంఛగానామె నే

మనజాలక కుసుమాస్త్రమార్గణతతిక మారాడికుండుచు నా

తని దా కౌగిల బిడ్డనొక్కగను కాంతా సహితంబేను నే

యను కానివ్వుని కశ్యపుండు సతికామ్యంబవ్వుడే దీర్చినక.

వచ॥ దితిసద్యోగభూబున నిరువురు కుమారు లుడయించిరి వారింగాంచి కశ్యపుండ బాలా సవతియగు వదితి సంతానవతియగుట సహింప జాలక యీ కానికాలంబున ననుం గూడితివి గాన యీయిరువురును క్రూరాత్ములై జూడ్వీరోధు లగుదురు వీరల నాహరి వధింపంగలడన దితితోకించి నాథా నాకిట్టి పుత్రుల గటాక్షింప న్యాయమాయన

నీత్యర యట్లు గావించినదే నేమిసేతు నైసమ ఏరియం దగ్గజుని
కుమారుండు దేవవంశ్యుండగు శనిన విని యామెసంతసించె.

కం॥ వారలకు కశ్యపుడు పే॥ క్లేరుపరచె దితినిగూడి ప్రేమంబున చా
నారయ పిరణ్యకళిపుడు॥ ధీరహిరణ్యాక్షుడంచు దివిరితగుగతికా.

కం॥ వారలు వృద్ధినిగాంచుచు॥ ప్రహరతముని వాసములను గూల్చుచు
మునులకా

గేరియెగూడిపరచుచు॥ ధీరతతో పెరిగిరంచు ధీరుడనుజుడుకా॥

వచ॥ దక్షప్రజాపతి చాహిత్రుడగు పిరణ్యాక్షుండు నవ యవ్వనంబున
యమిత పరాక్రమా లంకారుండై దిక్పాల గారించుచు తనప్రతా
పంబు వెలయింపందలంచి పశ్చిమ దిగీశుండగు వరఃపనిండాపి-

తాడి-రూపం.

ప॥ వరుణదేవ నీతోనే॥ దుర మొనరింపగవచ్చితి॥ వరు॥

అ॥ శరసంధానమొనర్చుము॥ సమరరంగమున నిలుపుము॥ వరు॥

మి॥ శరణనిమ్రొక్కినవీడను॥ శౌర్యగంబును చవిజూపక నా
కరములు కంఠూరింగొనె॥ గానరమ్ము రథ మెక్కుము॥ వరు॥

2. సురలందర నిర్జించితి॥ సరినాకెట లేడరయగ
విరివిగ దిక్పాలురు సే॥ వింపగ మెలగంగలాడ

మి॥ దొరవటనాకీచొక్కట॥ యెరిగెదనీ బాహుబలము
పిరికితనంబిక విడుపుము॥ బీరముచూపుమురమ్ము॥ వరు॥

ఆ॥ వె॥ అనిన వరుణుడనియె వసురరాజునిన్ను
పోరులోనగెల్పు వాడులేరు
రాక్షసాంతకుడగు దక్షునితోబోరు
మేనురణము మున్నె మానుకొంటి.

మంజ—నిమగ్నంబంగల వీరుండొక్కడె॥ నెగడుక్రీహరియనంగ
రణమొనరింపగ నీ వయ్యెడకతి॥ రయమున నొప్పుచనంగ.

వచ॥ ఆతిండిప్పుడు యజ్ఞవరాహ రూపంబున రసాతలంబందు నిలచి

యుండెనని యెరిగించిన కనకాక్షు డుత్సాహంబున నరిగె నని యెరి
గించిన పరీక్షిన్నెసాల్కుండు శుభయోగి క్షిప్రనియె-

ఆ॥ వె॥ శుకమునీంద్రవిష్ణు డుకతొంబులెకున్న

ఘృష్ణిరూపమేల యెత్తుదాని

కతనెరుగజేయు మతకుశకంబగు

నాగవానికాత డనియెనిల్లు.

వచ॥ స్వామింభువుడను మరువు చిరకాలంబు రాజ్యంబుచేసి తపో
యజ్ఞాది నిర్వహణంబున సత్యలోకంబునకుం జన చతురాననుండు
ప్రజాస్పృహచేయుమని నియమించిన దేవా అంతయు జలమయంబు.
యెనేడ సృష్టిగావించునన విధాతి యిట్లనియె॥

చ॥ ధరణితలంబు కన్నమును తద్యము నీరము గల్గునందు నా
సారికరుచారసంబున స్వయంబుగభూమి జనించె నిట్లు నా
శరధియాచుడే మరల నాగరము భువిజేయు వాని స
చ్చరణములం దలంచిన విచారములేదు నిజంబువుత్రకా॥

ఆ॥ వె॥ అనుచు సారికుతెంచు యజ్ఞసంభవునాని

కాంతరంబునుండి యజ్ఞఘృష్ణి

యగుచు పద్మనాభు డావిర్భవంబుడై

మ్రొక్కిరనురులెల్ల ముక్తిగోరి॥

వచ॥ నాయజ్ఞనరాహంబు సంక్రంబునింకించి భూమిని గల్పించి యది
మరల జలంబుల మునుంగకుండ కొమ్మునన్నిల్పి రసాతలావాసంబు
చేసె నతనింగనుటకై హిరణ్యాక్షుండు-

మంజ—భూమినిచాపగ జాటిసంద్రమున । ముంచివేళినుతటను

యామురారి గన్పించునతనితో । యాహవమొనరించెదను॥

వచ॥ అవి యత్నించుచుండ నావరాహమూర్తియే యరుదెంచి యతని
మార్కొని సంగరంబాచరించి కొమ్ముతో నేత్రంబువ్రచ్చి వధించె-

తే॥ గీ॥ అతని మెధస్సుపడుటచే నయ్యెమేది

సీయనంగ నిభూమి విజ్ఞేయవినుము

అట్టిన్వామంభువాఖ్య మన్వంతరమున

నతనితనయచు కర్తముండ నెడుమాని॥

వచ॥ వరియించె నెట్లన. కృతయుగంబున కర్తముండను ముని విష్ణుగం
గూర్చి ఘోరతపంబొచరింప నన్వేషుండు ప్రసన్నుడై -

మూట—తృతీయః.

ప॥ మునివరకోరుము । కోరికదీర్చెద॥ ముని॥

అ॥ ఘనతపముననను । దినియించితివిక॥ ముని॥

మి॥ ధనములొకరులో । దాసీజనములో

ఘనసాధములో । వనులో తపయులో॥ ముని॥

2. నీవలెతపము ము । న్నెరొనరింపరు

దేవానధి నిను ను । తియించెడుదగ

మి॥ భావంబుననీవే తల । పం దియిటులొనర్చినావొ

వేవివరింపుముదీర్చెద । వేరుతిలంపబోకుమింక॥ ముని॥

అ॥ వె॥ అనినకర్తముండు యనియె నీపాదార

విందసేవనంబు విబుధసేవ్య

మైవజ్ఞానయోగ మరియంగిగోరెద

నివియొసంగి బోవ వే రమేశ॥

మంజ—అనదామోదరుడనియె । మునివగా అటులెగానివినుము

ఘనస్వామ్యంభువు మనువునీకు । తనతనయదేవహూతి .

2 నొసగి పెండ్లిగావించునాయమకు । నొగికుమారికలను

విశేదంబుగ తొమ్మండ్రగాంచి పై । వినుమదంశమునను

3 నొకనందను కపిలాచార్యుండన సకలకలాత్మకుగ నెను

ప్రకటాత్మాధ్యము వానిచె నెరిగి బ్రహ్మపదముగ నెదు॥

వచ॥ అని యెరింగించి హరి యంతర్ధానుండయ్యె నంత కొంతకాలంబు

చన బ్రహ్మనందనుండగు స్వామ్యంభువ మనువు కులసతియగు శత

రూపంగూడి తనయయగు దేవహూతింగొని కర్ధమనివాసంబు సమీ

పించి యతిధిసత్కారంబులంది యిట్లనియె.

మ॥ అనఘామత్సుత దేవహూతియను । కన్యారత్నముక బ్రేమ్మగై

కొనగా గోవిన్దదీయ వాసమిటు । మాకుజ్జేరుటయ్యెకా మదీ

యనతుల్ గొంచు వరింపుడంచనిన । నయ్యా నాకు వైకుంఠు డ

ల్లన దెల్పెన్నిది యిట్లులొననుచు । పెండ్లాడెన్ముభారంభుడై॥

వచ॥ కర్ణమండు తపోమహిమంబువలన విమానంబును సహస్రసంఖ్య
దాసీసంఘంబునుగల్పించి సత్యుడు దేవకూతింగలసి యిచ్చకొలది
పుణ్యస్థలంబులు నిడుగాడుచుండ.

ఆ॥ నె॥ కార్దమంబు యతని॥ కాంతగర్భాబున
జొచ్చి ప్రేమమయల॥ సుశిలగల్గ
జేసె నంతవైది॥ శ్రీనివాసునియొక
మనసు కపిలమాని॥ జననమయ్యె॥

వచ॥ అతండు దినదినప్రవర్ధమానుండగుచు బాల్యంబున నెవిరాగియయ్యె.
నతడుతన్నుపుత్రీషణంబుచే గనుశ్లోదండుగ్రీల నాలోకించియట్లునయె.

హరిః—హరిః॥

హ॥ వినుడు తల్లిదండ్రులార॥ వివరించెద సర్వమునిదె॥ విను॥

అ॥ జననము మరణము దూఱ॥ సహితము సుఖముతముగాదు॥ విను॥

మి॥ వనజనాభుడైని భ॥ జనముసేయుట మేలయ్యెను
మునులు సురలు తరియించెను॥ మూలమార్గ మికనరయును॥ విను॥

2. ఘోరదూఱసాగరము॥ సంసారము తరియింపలేము
నారాయణ భజనమనెను॥ సౌక, నెక్కకున్న మనము

మి॥ తారక సాంఖ్యమ్ములదెస॥ నారసి గ్రహించియవల
నారయవలె జన్మంహిత॥ మమనస్కంబును యోగము॥ విను॥

చ॥ మలమూత్రంబులు ప్రేగులున్నెముకలు మాగనంబు చర్మంబు కం
డలు చీముక॥ క్రిందసంఘముంగలిగి హీనంబైస దేహంబుపై
తొలగనోప్పని భృంశవహింప జనునే దుర్వారప్రేమంబువీ
డిలవంబేని హంభజాపదగు తల్లీ నీమదిన్ను మృమా॥

వచ॥ జీవుండు దేహధారియై యనేకకార్యంబులొనరించు నవి సాపక్షపుణ్య
భేదంబులచే నొప్పారు మహాసాపకర్మండు ముహూర్తత్రయ కాలం
బును సామాన్య సాపుండు ద్విముహూర్త కాలంబును యమమూల
నలనుభవించి తిరిగి శరీరధారులై మాత్సర్యగర్భాబుల మెలంగుచును.
అదియెట్లున! పురుషరేతో సంబంధియై వధూగర్భగోళంబు జొచ్చి
తొలిరాత్రి గలంబగు నైదుదినంబుల బుచ్చుదాబగు పదిదినంబులకు

పిండంబగు, సోక్కునెలకు ము స్రవం బేర్పడును. రెండునెలలకు చేతులు కాశ్యేన్చును. మూడునెలలకు నఖరోమాస్తి చర్మంబులు గల్గును. నాలవనెల సప్తధాతువులును, యైదవనెల అకిలి దప్పులును, ఆరవనెల మాచిచే గర్భంబడి తల్లికుష్మీని దక్షిణభాగంబున మసలుచు మాతృభుక్తాన్నరసం బాసావడించి తృప్తిగనుచు నేడవనెల గర్భనివాసిత క్రిమిభక్షిత శరీరుండై యందుండంబాలక వెలికిరుదేర నేంక భగవంతుని పార్థినిచు చుండును. పిమ్మట నెలలు తొమ్మిది గడచిన మూత్రిద్వారంబున జనించి గర్భంబునందున్నప్పుడీక పాపంబు లాచరింపను. సర్వదాతపస్కరణచేయుచు దినములుబుత్తును రక్షింపుము యీచెరనుండి వెడలింపునుని భగవంతుని పార్థినిచిన దంతయును మరచి యిహనుఖంబులనురిగి, కన్నుమిన్నెరుంగక చరించి కొంతకాలంబునకు మరణించి మరలజన్మించును.

మంజు—గాన ఇట్టిదేహంబులందాశే | మాని హరిని దలపోసి

మానితమోక్షార్థంబగుజ్ఞానము | పూనియెరుగవలెజూసి॥

తే॥ గీ॥ పంచభూతమయంపు | పృపంచమందు

దేహమందునభ్రమ | వీడి దివ్యమోక్ష

రాజ్యవాసము గావింప | రహినిచెల్లు

నీశరీరంబు పాప | కంకిలము నిజము॥

ఆ॥ వె॥ కామకోపధ లోభ | ఘనమోహ మదమత్స

రంబుల నెడు వైరిరాజవర్గ

ములను యుజ్జగించి మోక్షసిద్ధికిని సం

కల్పమును జయించగాన గునిక॥

వచ॥ అనియెరింగించి కపిలుండు తల్లియనుజ్ఞంబొంది యోగమార్గంబు నెల్లర కెరింగింపుచు నెందేనింజనియె. నాదేవహూతియు కపిలోక్తిజ్ఞాన మార్గంబాలించి హరియందు లీనంబయ్యె నీకపిలదేవ హూతి సంనాదంబును యితిహాసం బాలించిన గోవిందు చరణారవిందంబులం గాంతురని శ్రుకుండు పరీక్షన్మహారాజున కెరింగించెన్నది. శ్రీమహాభాగవతంబునం చృతీయ స్కంధము.

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.



శ్రీకృష్ణ—అవిష్ణు చక్రము.
శ్రీగురువరబ్రహ్మచేనమః.

శ్రీ కృష్ణ భాగవతము.

(హరికథ) చతుర్థ స్కంధము

—:౦.—

లి. వాల్మీకిచరితము.

మంజ—స్వామిభువమరు వాల్మీకిజలంబాక వనితకు దిక్కునకిచ్చెన్
శ్రేయః బెదలో గోరిదంపతుల చిత్తమలర దీవించెన్.

తే॥ గీ॥ అవలదడుకు మరుసుతనా పృసూతి
వలసపదియార్యురు సుతిల బడసెవారి
యందు పదమువ్వు నొసంగె నాస్తభక్తు
నకును నొకకాంత నగ్నికి నాతితే॥

వచ॥ యొకర్తుని పితృదేవతలకును మరియొకర్తు నీశ్వరునకునిచ్చె.

ఉ॥ ఎంతయొ బ్రేచుడిచ్చలచె నీశ్వరుడార్య నుతుండు భాతీ
కాంతుని పొగ్రనిస్సతిగ గాఢతపోరతి పెండికొండపై
కొంతసుఖంబుగాగడిపె కొన్నిదినంబులు దత్తుడొక్కడన్
గాంతమటంచు రాహుకు గాఢతపంబు నొనర్చుచుండుటన్.

వచ॥ ప్రచేతన కుమారుండగు దత్తుని గౌరవింపమి నతండు రోషాకలిత
హృదయుండై—

మఖారి—రూపకం.

ప॥ తెలిసెబో వీనిగర్వము । తెరగుసాంగముగనాకు! చెలి ॥

అ॥ యిల్లపెదానొక ఘనుడని । యెంచుటపొగరెక్కనేమొ! తెలి॥

మి॥ ఖలమతి నే నరుదెంచుట | కన్నులగానకు లేవకు
నలుపకు వందనముజేచు | సంగతులారయడిచుక॥ తెలి॥

2 ననుగని లోకమ్ములెల్ల మునుగుభయముగోనమ్రొక్కి
గొనకొనిసేవలుచేయుడు | రనయమునా దయగోరి

మి॥ తనయనోసంగినజామా | తని క్షమియించుట కన్నులు
గనరా విక వీనిమదము | గందుగాకముందిక పో॥ జెలి॥

సీ॥ నివసించులకుకొంప నేనిసూపాదింప జాలక గిడినివాసంబుసల్పు
కట్టుకొనగనూలు బట్టలభింపమి పులితోలుమొలయందుబూనిదాల్పు
యెక్కుటకొకహాయంబేనిలేమిని యెక్కుపై నెక్కిమశనంబుగోనదిరుగు
తినుటకుసాత్రము తేలేక నుకపాలంబుగో కబళ మారయభంజించు

చిలునసామ్మలు భూతాల చెలిమియిట్టి

హీనునకు పిల్లనిచ్చుట కేనుగాక

మగదులెవ్వారలీభూమి యందుగలరు

యనుచుతలపోసియింటికి జనియెనతఁడు॥

వచ॥ అంత నద్దఱుండు యాగంబొండు గావిపదలంచి సమస్తలోక
వాసుల నాహ్వానించి కడినుపుత్రికల స్లలండ్రం దోడ్తచ్చి సతీశ్వరు
లందలంపక క్రతువొనర్చుచుండిన-

తే॥ గీ॥ ఒకదినము పూనసంబులో వికసిత సుమ

చయము గ్రహియించుభవ్యరాణి చ నెడుదివ్య

దంపతులగని మీరలెందాక పయన

మనినవారలు రిచ్చ పాటించియసిరి॥

మ॥ జననీ నీవిట నుంటివేమి యఖిలాళా నాధులున్ మానులున్
మనుజుల్ నీచెలియండ్రు నీమరుదులున్ క్షాన్తాధులున్బ్రక్తి నీ
జనకుండిహృదోనర్చు జన్మమును వీక్షాసక్తి పోవంగ నే
మని ప్రశ్నించెన వీవెరుంగవె తెరంగా హాయిటుల్గల్గునే॥

వచ॥ అని వారి లరిగిన విచారింపుచు దాక్షాయణి శంభునిడాసి
యట్లనియె॥

శబాద—యమశ్శాంతి.

నాథావినుమా । ననుదయగతుమా ॥ నాథా॥

అ॥ వేధవినుత నా । విన్నపమరయుమా । నాథా॥

1 నాజనకుడు సవ 1 నము తేసెడునట

వేజనుదివృత్తులు యెరిగించిరిప్రియ ॥ నాథా॥

2 మనమరిగియు నా । మఘముచుగని ఎడి

చనుదెంతయు నీ । చనుపునగోరితి ॥ నాథా॥

మంజ—అనిపేడిన భవృషవియె నామెతో యంగనరోయితితగు

జనకుండైనను పిలువనియెడనను జనగామోసముగలదు

2 నావినిదాక్షామణియనె నోప్రియ నాథాయుటలేలా

నావేగుంబుగ వస్తమనిన నా । యభవృషవియెగుణకీలా॥

కం॥ పిలువని వేరంటమునకు । నిలదేగగ నంచునేచు వచ్చుటహీనం

బు లలచ నీవే గంగను । దలచిన నీయిష్టమనిన తిరుణి యిటులనుక ॥

తే॥ గీ॥ దండ్రులొసరించుజన్మంబు తనయచూడ

దగచి గాన నేనేగక తప్పదింక

శలవు దయచేశిపంపుడి చనిగని యిట

కేగుచెచ్చెద చెలియగ్రడ్ హితలనుతుల॥

వచ॥ అనిన శంకరుం డబలా నీకట నమర్యాదగలుగును మానవతినగు

నీనా యపమానంబు భరింపజాల వండువలన నెడమపొడమక మా

నదా. నీవంకరిగిన యాశరీరంబుతో మరల నన్నుం జూడజాలవని

తెల్పినను వినక దాక్షామణి దక్షుజన్మంబు విలోకింప సయ్యజ్ఞ

శాలకుంజనిన-

సీ॥ వచ్చువారలకర్ప్య పాద్యంబులిచ్చెడు పరిచారికలుచు యావలికిరిగిరి

యాజ్యంబువక్ష్మాకి నర్పించుదిక్పాలు రవనికిశిరములు నంటవంచి

చెల్లెండ్రుకంట వీక్షించి దౌదవ్యల తొలగిరికోప చూడ్కులులగించి

కిన్నకూతుగుగదా యన్న కనికరి మేని గాంచకత్తియు గడకుతోలిగె

ఎంతసేపున్న నెవ్వరు నేమియనుచు

నేనిబలుకరు విప్రులు గానిదక్షు

నాననెల్లరు పాడించి మానమూని

భవునిసతియందు చేరిన పట్టునందు॥

మఃజ—సతితనదగు ననమానంబును సైపజాల కటనుండ్రి

పతికడ కరుగగ నోపక చిణిబోబడి మృతినొందు జుండి॥

వచ॥ అంత నద్దేవమునులు మనంబుల భీతిశోకంబులు గారియపెట్టినను

దక్షభయంబున మిన్నకుండిరి. యువ్వార్త త్రిలోక సంచారియును

నారదుండెరింగి॥

తే॥ గీ॥ రజతగిరికేగి శాంభవి రాకగోరు

యీశునకు దెల్పెదేవ నీయింతిపక్షు

యజ్ఞమునవహ్ని కాహుతి యయ్యెననుచు

నభిక్షేపకు రుడనంది యశాసుగచి॥

మోహన-రూపకం

ప॥ ఎంతఘోరవార్తదెల్పి. తిప్పుడు బ్రహ్మవరనందన ॥ యెంత ॥

అ॥ కాంతామణి వహ్నినిబడి. కాయము చొరగె నకటకట ॥ యెంత ॥

1 కన్నతనయ యనిజేమం. గనక దక్షుడియజేయునె

నన్నెరుంగడె ఋత్విక్కులై. నందెలుపరె కానీ ॥ యెంత ॥

2 నురలు మానులతని వలని. వెరపుననను గణియింపరె

సరివారల పనిబూర్తిని. సల్పెద క్రతునర్పిపెట్టెద ॥ యెంత ॥

గీ॥ అనుచు స్వేదకణంబును హస్తమునను

దీసి పాషాణమున యందువేళినంత

పటపటార్థటులన్నది పగిలి వీర

భద్రుడను భీకరుడు దాపభవమండె॥

ఉ॥ శంకరుజూచి సాగిలి భుజంబులుసోక నమస్కరించి యీ

కింకరుడేమి సేయవలె గీష్పతివై ననలంతునాగ పా

మ్మింకటదక్షయజ్ఞము నశింపగ దిక్పతులు స్థలంగ నీ

లెంకలుగాగ నీప్రమధు లెల్ల జరింపగ వీరభద్రుడా॥

వచ॥ అనిదీనిని పంపిన వీరభద్రుడు భయంకరాకారుండై దక్షప్రజా

పతిక్రతుశాలండాని కావలివారల నుదుమాడి ఋత్విక్కుల చెండాడి

పురోహితుల యమపురవాసులు గావించి దిక్పాలురదిక్కులకు బో
దోలి రాజబంధుగుల రణంబున వధించి, సతిధుల నడచి గంభీర్య
లగాంచి, యక్షులశిక్షించి, సురల బహిష్కరించి-

మంజు—కరచాలంబు ధరించి దక్షులదరిగి హేమామయునవైచి
ధరణినిపీనుగు పెంటజేసి క్రోధంబుదీరకను నార్చి.

వచ॥ వీరవిహారంబు గావిపుయుడ బ్రహ్మానిష్ఠులు నాందువలన గతం
బాలించి శంకరునిజాసి-

భూదాత—గృహప్రతి.

ప॥ హరహరపురహర శంకర । యుక్తిచాపకరసేవ॥ హర॥

అ॥ సురితదమన వృషభగమన । తోయహరిధర శిరవర॥ హర॥

1 లోకపాల కరుణాలోల । నీకన్నను చిక్కేనీ

తేకువనీ వీరభద్రు । తేజము సహాయుపలేము॥ హర॥

తే॥ గీ॥ అనుచుప్రార్థించు సులకు నాచిదేవు

డనియె లోకంబురక్షించు పనియెనా క

వస్యమగుగాన వెరువగా వలదటంచు

వీరభద్రునివారింది చీరదరికి॥

వచ॥ పిచ్చుట నిలింపాది దిక్పాలురం గరుణించి పిష్కాల్పిన పసిసూతి

శంకరుంజేరి-

మ॥ అనఘా సర్వచరాచరంబులు త్వదీయాశ్లాను బద్ధంబులై

దనరుకాబోవగ నుండజేయ తవచేతఃప్రీతి మన్నాధు గ

ర్వనితాంతు స్ఫురిమార్చియొగమును విధ్వస్తంబుగావించి తై

నను నాకుంకుచుబొట్టు నిల్పగదె దీనస్థిక్త సంరక్షణ॥

తే॥ గీ॥ అనుచువేడు ప్రసూతికిల్లనియెగర్వ

మెంతవానికేనియు చెల్లదంక నీవు

కోరినట్టులు జేయ నీ సూర్యశిరము

హేమామయున భస్మమయ్యెగా కేమికేతు॥

వచః॥ కానిమ్మని వీరభద్రునింజూచి కుమారా తూర్పుశాలనిడి నిమరిం
చుట పాపాకరంబు గాన యేజీవియె నట్లున్న తత్తలం ఖండించి
తెమ్మన నతంజాక గొఱియతలం దెచ్చిన-

మంజు—పారుడదిడక్షుని మొుడమునకు దగ నతుకంజేసి యాపైని
చరియింపుము తలనె త్తకసిగ్గున । ధరణీ స్తలిపైని॥

తే॥ గీ॥ అని వరంబిడి నామతం బందునిన్ను
యెల్లవారలుపూజింతు రింకపుడమి
వీరభద్రయటంచని వెలదిలేని
నాకు తపమొక్కటే శరణ్యంబటంచు॥

వచః॥ తపంబొనరింప దారుకాననంబను కాంతారంబున కరిగె నద్దాతా
యణి యట్లు చిలింగూలి మరణించి పున్జన్మంబున హిమవంతుం
డను పర్వతరాజునకును మేనకయను యపురసాంగనకును జనించె
పర్వత నందనియగుట సార్వతియనియు హిమవంతుని తనయయగుట
సామవతి యనియు బేరులం శుక్లపక్ష తూపాకరంబొలి పెరుగు
చుండె—

మరట—రూపకం.

ప॥ శ్రీపార్వతి యొనరించెడు । చిన్నతనపు పనులువినుడు॥ శ్రీ॥

అ॥ కోపంబరయ దొకించుక । గూడుతోడి బాలికలను॥ శ్రీ॥

మి॥ ప్రాపుగబామ్మలపెండ్లిం । డశిశయ ప్రేముడిసల్పును
యేపగుదా గురుమూతలు । దాపద్మీనులనాడు॥ శ్రీ॥

2 చెలులతోవియ్యంబండు । చిరుతపాటలన్నాడు
అలిబిలి యచ్చెనగాయల । నాటలయందెవ్వరీడు

మి॥ పొలయలు కంబవ్వళించు తలిదండ్రాదుల గలంచు
కిలకిల నప్పుచులేచు కీల్లెడముద్దుగవైచు॥ శ్రీపా ॥

తే॥ గీ॥ పార్వతి సతిబాల్యంబు వదలిజవ్వ
నంబొకించుక పొడసూపినంత కేళి

కావనంబు విహరింప గాంచి నార

దుండు శంకరు నెరిగించె నిండుభక్తి॥

మంజ॥ అంతటతనకాభవుడే భవుడని యాపార్వతి దలంచి

మంతనమున నాతని భజింపుచు మాతాపితలంగాంచి॥

వచ॥ నాకాపురారింగూర్చి తపంబాచరింప కౌతుకంబయ్యె నానతిండుని

యెట్టకేలకు సమ్మతింపంజేళి కాంతారంబున నొక పవిత్ర స్థలంబునం
దపమాచరింపుచున్నంత

తే॥ గీ॥ శంకరుడు పాపజన వినాశకరుండు

తపమొనర్చుట దుష్టులుద్ధంశులగుచు

సురల మునులను బాధింప జొచ్చినరత

దివిజలా హరిజేరి పార్థివించి రిక్తు॥

సావేరి—చతురశ్రాంతి.

ప॥ సురముని వందిత | పరమ దయాకర॥ సుర ॥

అ॥ కరుణింపుము మము | శరణా గతులము॥ సుర ॥

1. భగవతి భారం | బును భరియింపమి

మీసన్నిధి కేతేరెచు | యిదిగోకను॥ సుర ॥

2. దుష్టుల బారికి | తొలగలేము మా

కష్టము లడుపగ | గతినివేగద॥ సుర॥

తే॥ గీ॥ అనుచు పార్థింప శంకరు డభములడి

యింపక తపంబొనర్చ జనించె నిల్లు

యని తలంచి వారల చింతలను దొలంగ

జేళి హరిమది యోచన జేసెనిట్లు॥

వచ॥ శంకరునకు కామంబు ఘటింపకున్న తపోవిఘ్నంబు గలుగదు.

తపోవిఘ్నమైనగాని పార్వతీ పరిణయంబు గాదు. సతిలభించినగాని

కర్తవ్యంబు నిర్వర్తింపడుగాన, ముందు హరునకు కామము గల్గింప

వలయునని తలంచి, కుమారుండగు మారుంజీరి॥

మ॥ తనయా శంకరుడొక్కచో తపముకాంతనాసి గావించు నా
తని భార్యాలికంబు వేరొకచో చిత్తంబీను యస్తింబు జే
సి నితాంతంబు తిపించుగాన విను నా శ్రీకంఠనికా కామ లో
లుని గావింపుమటన్న వాడనియె ముల్లోకేసరదా విష్ణుకుళ॥

తే॥ గీ॥ నాగభూషణ తపము విఘ్నంబు జేయు
దొడరు లదినాశ హేతువౌ జనుని భంగి
తలపవచ్చునె రుద్రానావలన గాద
సంగ హరియను నాచితీ నాయకునకు॥

మంజ॥ తనయా భూభారంబున కీపని । తప్పదాయె నిగ్రహినుము
నిను నేరక్షణ గావించెద నికనేని వానిచిహ్నము॥

వచ॥ అనిన మన్మథుండు శీరవాహనుడై భృంగకోకిలాది సేనా సమూహ
యంబు ముందు నడువ మిత్తుండగు వసంతుండు చెంగట మెలంగ,
చెరకువిల్ ధరించి అడవిందాశోకచూత ననమల్లక నీలోత్పలంబులను
పంచాయుధంబులు బూని శంకరుండు వసించు తపోవనంబు జేరి-

మంజ—శరముల నొక్కటి యొక్కటిగా నాశంకరువైవిధువ
విరితూపుల కావారు ధైర్యంబు విరియబారి మదిజనున
2. మదనావస్తలుగల్గి తపము దామరచి వయనములుచెరచి
మదనునిగని కోధంబుబూని మోమందలి నేత్రముచెరచి॥

తే॥ గీ॥ స్మరువిలోకింప సతకు భస్మంబు నందె
సంత హరుడల్ల నందపం బాచరింప
నదియెరింగి రతీదేవి యమిత దుఃఖ
పరవశయగుచు నంజలిపట్టి నిలచి॥

జేగడ—త్రీశ్రీః॥

ప॥ కామదహనదై త్యాగిపూజితా నామాంగల్యముదయనిల్పుమిక॥ కా
అ॥ నీమహిమ దెలియ నెంతదాననో । శ్రీమహిత కృపావలంబ ॥ కామ॥
1. యెల్లలోకములకేలికవట నీ । పిల్లను నాపతి బ్రదికింపుముశ్రీ ॥ కా॥

వచ॥ అని పార్థిండు నామెతో బ్రహ్మాదిదేవతలును, దేవా కాముండు లేనిచో లోకము నశింపదా! రక్షింపుమన శుకరుండు రతీదేవి నీకు నీచుగండు కోరినప్పుడే యగుపిండును గానియెల్లరకు ననంగుండై చరింపగలడు. ముందు యీవిష్ణుని కృష్ణావతారంబున రుక్మిణీదేవికి కుమారుండై జనింపంగల చీకపొమ్మని దీపించిపంపి దామోదరునను మతంబున తపంబు చాలించి హైమవతి తపంబు తెరింగెరింగి యామె మనోనిశ్చయం బెరుంగంగోరి-

మంజ—వృద్ధహూని సురురూపంబున నానెలది సమీపము జేర

శ్రద్ధనామె చెలిక తైలునతులక సన్నిధి కోరికలూర

2. వారలకా కైతవ విప్రుడిన పార్వతినింజూపి

యీరామానుజి యెన్వరు యిటులపమేలజేయు శ్రమకోపి॥

చ॥ జలజభవాన్వయా విచుము సర్వసగాధిపు పీఠిమేనకా

లలనకు పార్వతీయధిధ రంజిల బుట్టిన ప్రియశంకరుక

చెలువునిగా గ్రహింప వనిచేరి తపంబానరించు నీమె కో

ర్కెలు ఫలియించునో వితయె పేముడి మాకెరిగింపుడి త్తరిక॥

కం॥ అనునయ్యెడ పార్వతి తన కనుదెరచినమస్కరించి కరములపద మర్చన గావింపుచుననె పావన చరితా తమయభిజ్ఞ పల్కుడు వివరక॥

వచ॥ అనిన మాయాభాసురుండు చిరునగవున బాలా నేనొక తాపసిని నీవు పార్వతియనియు, నీశ్వరు వరించితివనియు, నీచెలు తెరిగించిరిది నిక్కువంబే యన-

మ॥ అనఘా తామెరుగంగరాని విధమెంచైనం జగంబండు లే

దనగా నియ్యది యెంతనావలన సత్యంబాలకింపంగ నో

రిన యల్లె వినుడుల్లమందు హరుసంప్రీతిక మనోనాధు గా

గని తద్దర్శన భాగ్యమంద తపముక గావించు నశాంతముక॥

వచ॥ అను పార్వతి వచనంబులకు నవ్వి శంకరు డిట్లనియె—

కావ్యపద్యం—మామం.

ప॥ ఎంత బేలవైతి బాలఁ | యీశు నెట్ల వరియించితి ॥ వెంత ॥
అ॥ సుంతేనికొయోచింపవు | చూడవు మీదటి సుఖమ్ము ॥ వెంత॥
మి॥ చింతింపవు నీయందము | చెలుననునీ ? గాచికాని
మంతన మెటుగాంక్షించితి | వెంతో మోసబందితి ॥ వెంత॥

2 నివసంపగ కొంపలేక | నిలచెయశన మందాతడు
పవళింపగ చాపయేని | బడయక కొండపము ఒండు
మి॥ తివిరిబిచ్చమెత్తువాడు | తెల్ల నెద్ద నెక్కువాడు
తవునని యెటుదోచె వెట్టి | తల్లితల్లియైన చెప్పద ॥ యెంత॥

తే॥ గీ॥ పెండ్లి వేళలధవులు పీవించి పట్టు
పుట్టములుచాల కిత్తురీ పుడమి హరుని
మెడ్డినూడిన నీకునో వెలదిగోస్తు
చర్మమో కటబెబ్బలి చర్మమొగితి॥

తే॥ గీ॥ సుదతిబంగారు మంగళ సూత్రము వరు
లెలమి గళమందు గట్టుదు రెండు నైన
నీకు నొకత్రాచుబాము నస్తోకప్రేమ
చుట్టుకంతమునాదు నాశూలవింశే॥

వచ॥ అను నావృద్ధభూసురున కాపార్యతి యిట్లనియె—

మంజ—మనమున కిష్టంబగు వాడే నవసున్నుండు ముమ్మాటికిని
మునివర మొక్కడ నావిభుదూరక పొందింకను తమనీటికిని॥

వచ॥ అన నాభూసురప్రవరుం డిట్లనియె—

మ॥ ఎరుగక జాలవు నీసుఖంబయిన యెందేనిస్తోకభోగ భా
గ్య రమాధీశు వరింతురంగనలు నీకై తెల్పుచున్నాడనే
చిరకాలంబు దపంబొనర్చి ధనమక్షీణంబు గన్నొంది పై
చిరజీవత్వముగంటి నన్ను పతిగా సేవింపు మబ్బాననా॥

వచ॥ నన్నుగోరితివని యెరింగిన నీ తలిదండ్రాదులును సమ్మతించెదరు
అన పార్యతి—

మంజ—చురచురజూచుచు తిడవయ్యెను నీక । నరుగుడు మీదారి
మరిమాటాడక నిలువక మడిమి । మాన ప్రాణములు సోరి

2. అనుచు నరుగ నుంకింపగ బాలా । యతనుడువేధించు
మనజాలను నీకొగిట నను పే । మంబున లాలించు॥

తే॥ గీ॥ మని కపటభూసురుడు పార్వతిని కరంబు
పట్టి కొగిట దాల్చి ము ద్రొక్కినంత
పర్వతాత్మజ విదలించి పరిచిమూడ
భూసుగుడు మాలెపన్నగ భూషణుడు॥

వచ॥ పార్వతీదేవి అంజలి మోక్షి—

వలయమాచరియ—శ్లోకృతి.

ప॥ జయజయ శంకర । నమనన శంకర

అ॥ జయజయ దురితా । చయనా శంకర ॥జయ॥

1. తవదర్శనముకై । తప మొనరించితి

భవనాజస్రము । పావనంబయ్యెను ॥జయ॥

వచ॥ అని ప్రార్థించు పార్వతిని దనయక్కున జేర్చుకొని భక్తజనశృంగారండు విదా! నీ తలిదండ్రాదుల వలన నిను బరిగ్రహించెద గాని చోరత్వమేల నీక తపంబుడిగి నిలయంబున కరుగుము. యని యనిపి పుచ్చి నారదాదిమునుల పెండ్లిరాయబార మంపిన వారింగని హిమవంతుడు—

శ్లో॥—చతుశ్శ్లోకృతి.

ప॥ ఎట్టులిత్తును । తనయా నాబూచికాని ॥కెట్టు॥

అ॥ పెట్టసామ్మలేదు । గట్టబట్టలేదు ॥యెట్టు॥

మి॥ పట్టినయా శంకరునకు గట్టటయా యెల్లరుననుదిట్టటయా
బభిబభిమునిజెట్టులార యెట్టులాడిదిట్టుల ॥యెట్టు॥

2. లేకలేక గల్గినయీ లేమపార్వతి

చీకాకు లేక పెం । చిన మదపతి

మి॥ లోకమునా సౌఖ్యముగనలేకగనా । మశనంబున యస్తోకత నా
శంకరుండు నిలుచు । గాచె వానికీ మే ॥ స్తోత్రం॥

తే॥ గీ అనినయేమనజాల కయ్యమరమునులు
పాకశాసను కెరిగించి ఓపిన యత
డొర సామంబు కొరగామి యూనుదండ
నం బటంచని హిమవంతువక నె నిలు॥

వచ॥ నీకుమారియగు పార్వతి పూర్వజన్మంబున శంకరుని దారయగు
దాక్షాయణిదేవి దక్షయోగంబున నశించి నీచిరపుణ్య పాభవంబున
నీకుమారియై జనియించెను. గాని, నా యమనయ్యనఘము కుగూర్చి
ధన్యుడవై మాయెల్లర సన్నుతులంచుము. కాదేని మదీయ వజ్ర
యుధంబే గలదన హిమవంతుండు వెచ్చి యాశ్వరుని రావించి సకల
దేవముని ప్రకాశంబు నెమటసాలంకృత కన్యాదానంబు గావించె॥

మంజ—స్వామ్యంభువును సంశంబండున జననంబంచెను ఘనుడు
శ్రీయుతుండు యుత్తాన పాదుడన చెలువారు నతంబు

2. ఆనరసాలుని సతులిర్వురు గల రధిక సౌందర్యవతులు
దీనావనులు జ్వలగుణ తేజోధిక నిధిమణులు॥

వచ॥ సునీతియు, సురుచియను నామంబుల చెలంగువారు నరపాలుండు
సురుచియందు బద్ధానురాగుండై ధరా పాలనంబాచరింపుచుండ సునీ
తికి ధృవండును, సురుచికి యుత్తముండునను కుమారులు 2నిందిరి.
నృపతి చిన్నభార్య కుమారుండగు నుత్తముని యుకతంబునం గూ
ర్పుండబెట్టుకొని సురుచీ నిలయంబునండుండ—

తే॥ గీ॥ ధృవుడు యుత్తానపాదుని దవులకరిగి
అనుజనింబలె తన తొడనధివసించ
నెంచిన ధరిత్రీ పాలుడగ్గించి కరము
వట్టితివియడు సురుచిదా భయము కతన॥

శ్లోరని—మాఫకం.

ప॥ ఏరబాలకా తగుదని । యిట్టులు జనుదొచితొర ॥ యేర॥

కుమచునొక్కఁ డిన్నియు డగబంచి యిడుట నెచ్చెలితనమందు బం
తెన గుండు లాడునొకడు గీ॥ కృష్ణజూమమంచు గికురించి యొరు
మోల॥ మేలిభక్త్యరాశి మెసపునొకడు॥ నవ్వునొకడు సఖుల
నవ్వించునొక్కడు॥ ముచ్చటాడునొకడు ముఱియునొకడు॥

మంజ— యాగతిచల్దుల నారగించుతరి॥ నెరిగి గోగోపకులను
వేగొనియొక్కడ దాచియుంచె నా॥ విధి మాయావిధమునను॥
వచ॥ కృష్ణుండారసి యిదిధాతపనిగా చలంచి—

మ॥ తన మాయావిధి జూపనెంచి పశువత్సాకారముల్ దాల్చి లే
చినలేచచ్చిక నారగించునొకచో సేనుంబుమైనుండి పి
ల్లనగోవింబలికించియామ హరినిక లక్షించి లజ్జించి కృ
ష్ణుని పాదంబుల కంజలొగ్గి సురజేష్ఠుండిట్లు పార్థించెడుకొ॥
మాయా— ఖండగతి.

ప॥ నినుబోలనేనెంత॥ నీరహితాకృష్ణ ॥నిను॥

అ॥ సనకాదిమునిగణ॥ సంసేవితాపాద ॥నిను॥

మి॥ అనయంబును తవపాదా॥ భైరవంబులు సేవింతుక
ననుపుతునికరుణా॥ పాలించుము మేలెంచుము ॥నిను॥

2 బృందారకాదిముని॥ వందిత మిమ్మెరుగగ జా
లం దమకెగ్గునుదలచితి॥ రక్షింపుమిపుడెరిగితి

మి॥ సుందర ముల్లోకావన॥ శుభదాత యథుతాత
కందర్పజనక నన్ను॥ గనుము తప్పలొప్పులుగా ॥నిన్ను॥

గీ॥ అనుచుపార్థించి శ్రీకృష్ణ నాదరంబు॥ వడసి గోగోపకులనిచ్చి
బ్రహ్మచరిన॥ తోడిబాలురతో కీడలాడుకొనుచు॥ పశువులం
గాచు కృష్ణుండు వనులయందు॥

—:0:—

14. శ్రీకృష్ణ లీలలు

గీ॥ అవధరింపుము శ్రీకృష్ణ డవ్వనంబు॥ నందొక జలాశయంబున
యందునున్న॥ కాళియాహిని మర్దించి గడవెననిన॥ శుకుశకయ్య
భిమన్యుని సూనుడనియె॥

మంజ—కాళీయాహిని యెట్లుజంపె నా | బాలకృష్ణుడాలింపక
 బాళిగల్గె నెరిగింపవె మొక్కిల్కద | పరమమాని యనుకంపక॥
 వచ॥ అనిన శుకుండిట్లనియె—

శా॥ కాంతారంబున గోగణంబును గృహంబాపాడుచుండంగ ని
 శ్చింతకలేగ యొక్కండు కాళియహృదీశీ జాసిసీరంబు దా
 నెంతే ద్రావుచు సర్పదృష్టయగుట నీవ్విడిచి కృష్ణుండు నా
 చెంతక వృక్షమొకండు నెక్కి దుమికెక చేతులచకక ముచ్చవన్॥

గీ॥ నీటబడి యెంతకేనియు న్నెవ్వికిరాక | యుంటయున్నర్పము బుసలు
 యొక్క మొగిని | జలము కల్లోలముంబుచ్చ జడిసిగోప | బాలుర
 రిగి యశోదతో బలికిడిట్లు॥

పూరిత్యాశీ—చతుశ్చిగతి.

ప॥ ఏమిచెప్పగలమమ్మా | యింతీయశోదమ్మా ॥యేమి॥
 అ॥ కోమలాంగుడైనచిన్ని | గోపాలుని కథమేము ॥యేమి॥
 2 కాళియహృదమందున | గూలెను మాచెలికాడు
 యేలనో లేడమరాడు | యిచుకేనింగనరాడు ॥యేమి॥

వచ॥ అనియెరింగించిన యశోదానందులును వేపులైనాన వ్రజాంగనలు
 ను యాదవులు నొక్కమొగి నమ్మడువుదరిసి విలపించుచుండు నంత
 కొంతవడి కందుండి—

మంజ—కాళీయాని ఫణములపై నాట్యము | గావింపుచు కృష్ణుండు
 దేలెను జలమధ్యంబున చూపర | దృష్టి సఫలముగజండు॥

గీ॥ కాళియాహిఫణంబులం దోలినిలచి | పుచ్చమొకకేల ధరియించి
 మురళినధర | మందుసాధించి గాననాట్యములు సల్పి | కృష్ణుడెం
 తయు తాండవ కృష్ణుడయ్యె—

వచ॥ ఇట్లు కృష్ణపదఘట్టనంబున తలలుపగిలి రక్తంబుగార మరణావస్థం
 గాంచుతరి యతనిభార్యలందుండి వెలికరుదెంచి అంజలిమోడ్చి—

గీ॥ శరణుదేవకినందనా సకలలోక | రక్షణాదీనపాల మాప్రాణనాథు
 విడచి మాకొగిపతివిత్తు బెట్టుమయ్య | యనగ కృష్ణుండు వారల
 కనియె నిటుల॥

వచ॥ మీప్రార్థనలకలరి యీదురాత్ముని వీడుచుంటి సకనిందువసియింప
కెందేనిం బొండన కాళీయుండు భార్యలతో నానదినివీడి యెందో
జనియె. నావలకొంతకాలంబుగడువ శ్రీకృష్ణునకు చావదశాబ్దంబు
లుగడచున్న—

మంజ—యమునానదిలో జలకములాడగ । నాత్మలందు దలపోసి
భృమరాలకలగు గోపికాంగనలు । వసనంబులు వేసబాసి॥

గీ॥ సైకతస్థనిడి యజ్జలజాకరమున । డిగి : జలకములానందతాడెడి
తరినల । కరిగి గోపాలకృష్ణుండు యతివలవలు । వలనుగొనిపోన్న
చెట్టెక్కె పోన్గి మెరయ॥

వచ॥ జలకీడానంతరమంగనలు తీరంబుజేరి వలువలం గానక—

తోడి—చతురశ్శిఖరి

ప॥ ఏవే వసనంబు లిందులేవే । యేచూయెనొ గనవేమే ॥యేవే॥

ల॥ స్నానమొనరుపగ నేడీ జల । జాకరము దరిని నుంచితమిగద
చానవానికేచోరుండిటు । బూనిచారసిల్లెనే చలి ॥యేవే॥

2 ఇంతవంత మున్నెన్నడైన విని । యేచియుంటిమే యీనాటికిమన
కింతకీడు గావించిన యా । వంతకారి యెవ్వరోగద ॥యేవే॥

సీ॥ యెంతయో పీఠి నాయేలికనుంగోర వచ్చిన నీలంపు పట్టుచీరె
సాదరంబున భారసాలకు మావారుతెచ్చిన కరకంఠు తెల్లచీరె
పుట్టి టిక్కె మొన్నబోవగా మాయన్న సారెయిచ్చిన యెట్టిచారచీరె
సంకాంతినాడు వేచగ నామమామతెచ్చిన యట్టిరేషను సిల్కుచీరె

గీ॥ మొన్న నాముహూర్తమునకు మురిపెమలర । తెచ్చియిచ్చిన పువ్వుల
పచ్చచీరె । నాది నాదని చెలువలు భేద విభ్ర । మాళిగారింప వగచు
చున్నంతలోన॥

కం॥ తరువుపయి నిలచి కృష్ణుడు । మురళీనాదంబు సకలమోహన గతిగా
విరచింప గోపికాంగన । లరసిరి తలలెత్తి దొంగ యబ్జాక్షుడుగా॥

వచ॥ మరల జలంబులందూకి కంఠాధఃకటి పరస్పతము మునిగి గోపాల
కృష్ణునిగాంచి—

వేదగాంధారి—రూపకం.

ప॥ తగునె యింతకొంటెపనికి । దారసిలగనీకు కృష్ణ ॥తగు॥

అ॥ మగువల చేలంబులు గొని । మహిజముపై కిక్కిచూడ ॥తగు॥

మి॥ మగవాడవుగావె యిట్టి । మాటవిన్న లోకులునిను

నగరె మాకుసిగ్గుగాడె । న్యాయమార్గ మూహింపవె ॥తగు॥

2 లేరేమునుబాలకులు । కారె కొంటెవారిట్టులు

చీరెలు దొంగిలి సతుల । శీలము గొనువారు గలరె

మి॥ నేరిచితివా నీవెట్లులా । వేరుగొంటి వలి తుంటరి మా

వారిదెవచ్చిరి నిన్నిక । బట్టికొట్టెదరు పాపముయిటు ॥తగు॥

గీ॥ అనుచు బెదిరించు గోపికలను గనుగొని । కృష్ణుడను జన్మనులు మీ

కిదేల సిగ్గు । లజ్జ విడకాముష్రికము లలవియగునని । తలతురే వెరు

లార నీర్వేలికిరండు॥

మ॥ ననుచింతింపుచు దానధర్మములు చానల్ మీరుగావించుటల్

గని మీహూరిమి దీర్ప నీపగిది మీలజ్జాదికంబూశ్చి నా

డను తీరంబరుదెంచి చేతులను వీలెనంత పై కెత్తి వం

దనముంజేసిన చీరలుస్తలపులు దైవారగా నిచ్చెదన్॥

వచ॥ నేనరుంగనిదిలేదు. మీకేల లజ్జ వెలికిరండని పదింబదిగా బిల్చిన

యక్కాంతలు తద్దత్తచిత్తలగుట మోక్షయత్తలగుట జలంబుల

నుండి వెలికరుదెంచి కరములెత్తి అంజలులుమోడ్చి—

కేవలగౌళ—అది.

ప॥ కృష్ణా పరాత్పరా । అఖిలలోక పాలనకరా ॥కృష్ణా॥

అ॥ అనఘభక్తలోకమం । దారా దురితహరా

వినుతదేవసంఘ నిన్ను । వేడెదమిక చేలములిడు ॥కృష్ణా॥

2 నిన్నునమ్మియున్నవ్రజ । కన్నెలనిటు పరాభవంప

వెన్నులదొంగా తగునా । వేధజనక నిన్నెరుగమె॥ కృష్ణా॥

గీ॥ అనుచుప్రార్థించు నాగోపికాంగనలకు । చేలములొసంగి కృష్ణజూచి

శ్రీరమేసు । జాలగాయుచునుండ గోపాలురెల్ల । రాక్కయెడ పెద్ద

సభజేసి యుండిరండు॥

కం॥ నందుండను ప్రతియబ్దుము । నందేమేమైనకు పూజనముసేయగ నెం
దుందరుగులేని కసపున । మందలపాలించుకొంచు మనుటలెరుగమే॥

వచ॥ గానరేపు యింద్రపూజనం బాచరింతమన నందరందులకు వలయు
యత్నంబు లాచరించుచుండ కృష్ణుడాలించి వారించెడిసి—

మంజ—యెందుల కిందుని పూజనంబు । గావింపుచుండెదరు తెలియక
ముందుగ నాకెరిగింపుండన । యానందుడు కొమరునకనియె॥

2 ఇందునిపూజన మొనరించిన దా । నెంతో సంతసము గాంచుకొ
నాంద్రీదయను మేఘంబుల ! బంచివర్షంబెంతయు గురిపించుకొ॥

3 వర్షముపడుటను పచ్చిక శాద్వల । భాగంబుల దగపెరుగక
హర్షమున పశుగణము దానిదిని । అతశయ సందడగలుగుకొ॥

వచ॥ అందులకై ప్రతియబ్దు బిట్లాచరింపు చున్నారమనవిని కృష్ణుండు
నవ్వీ మీరలెంతి వెర్రివారలు, యిందునిపూజంపమి వర్షంబులు
గురియవా! యిందులకేమీకు వెర్రిగొల్లలని పేరబ్బినది—

సీ॥ కర్మంబువలనన గాదె జన్మంబును వృద్ధిక్షయంబులు పృథ్వికర్మ
విడివడజాల రిందుడ విష్ణుశంకరు లట్టికర్మను బట్టియనుభవంబు
లబ్బు కర్మను బొందుచమ రేందుగొల్పుట పతివిడియెరు వెంటబడిన
యట్లు । గానకర్మాబుచుగడచు యత్నముసేయవలయు మీరలువిప్ర
వందనంబు గీ॥ యర్చనము దానమునుసల్పి యవలకొండ । నొక్క
దానిపూజించిన చున్నదిఫల । మట్లుగావింపుడని యొప్పు నట్లుజేసి ।
గిరినిపూజింప నొనరించె కృష్ణమూర్తి॥

వచ॥ పూప సూపాదికంబుల నాగిరిముందునిచి నమస్కరింప శ్రీకృష్ణుండు.

మంజ—యాదవులారా మీరందరు జన! గాదగు నవ్వల దెనకుకొ
మోదంబున యీకామహాపిగిరి । భుజియించును పై మనకుకొ॥

వచ॥ కామ్యంబు లొసంగునని నమ్మించి—

గీ॥ అనుచువారల నొక యెడకంపి భక్త్యు । భోజ్యములు మెక్కిరండికభూ
ధరమతి । సంతసితె మీరొసంగిన సకలవస్తు । జాలమును యాహరిం
చె నిశ్చయము ఫలము॥

వచ॥ అని యెరింగించినంత నిందుగ్గి డేటేటనాకొనర్పు పూజలుమరచి
యాదవులు యీకొంటెబాలు నాజ్ఞాయత్తులెరి. వీరిని కసిమసగింత
మని తలంచి పశ్యయప్రవర్తకంబులగు సంవర్తకనవ మేఘుంబులంబు
త్రొంచిన నవి ఘోరపాపాణంబులతో వానగురియింప గోగోప బృం
దంబులు హాహారవంబుల విలపించుచుండ కృష్ణుడు—

మంజ—వెరువవలదు వర్షంబున కీయెడ । వినుడు నామాటలెండు
చిరచిర నీవర్షితము కేల వయి । కెత్తి గాచెదను రండు॥

మలయమాచితం—రూపకం.

ప॥ శంకింపకు డోగోప । సంఘముక్కిందకు రండు ॥శం॥

అ॥ బింకపు మాటలుగావు । వెరవవలదు మీరందరు ॥శం॥

2 బాలుండీతడు శైలము । భారము వహియింపగ నెటు
జాలండనకుడు రండు । శైలమునెత్తి కేలను ॥శం॥

3 చాలగ నీవగపుర భూ । చక్రమంత పైబడినను
కేలలాడదు గోపకు । లేలావెరచెదరు రండు ॥శం॥

వచ॥ అని ధైర్యంబుగొల్పి దక్షిణకరంబు నడాకేలంగిరినెత్తివ గోగోపసం
ఘంబు దానిక్కిందందూరి నిలచిననిందుడు సప్తరాత్రుంబులెడ తెరపి
లేకుండవర్షించి విసవి శ్రీకృష్ణపరమాత్మలీల కబ్బురమంది యేతెంచి
వదంబులంబడి పార్థించి యభయంబంది చనియె. సంత గోగోపకులు
సుఖంబుండిరి. అటనుధురానగరంబున—

గీ॥ కంసస్వపు డోలగంబుండ ఘనుడు నార । దుండు యరుదెంచిసంపూ
జితుండయియులు లనియె దేవకికొడుకు కృష్ణునకు సుఖము । నీకశుభ
మురానున్నది నేలరేడ॥

వచ॥ అనికంసుని కోడిక యశోదకు బిడ్డబుట్టుటయు, వసుదేవుడు దేవకీ
పుత్రునట బెట్టి యాబాలిక న్నార్పుటయు. శ్రీకృష్ణుడను నామంబున
నతండు రోహితీతనయుండగు బలరామునిగూడి మందనుండుటయు,
నెరిగించి చనిన కంసరాజు అవురా! వసుదేవుం డెంతమోసమాచ
రించె. కానిమ్మతని పనిచూచెదగాకని అక్రూరునింగని యిట్లనియె—

మంజ—బృందావనమున కేగి నీవుయడు । వీరుకృష్ణునిగాంచి
యిందున కేతేరగ జేయుమునీ । వెట్టులైనను వంచించి॥

గీ॥ అతనితో నిట్టలను ధనుర్యాగ మొకడు । చేయదలపూనె మీ
మామ చిత్రిగతుల । మిమ్మునాహ్వనపరచెను రమ్మటంచు । రామ
కృష్ణుల తోడి తేరంగ జనుము॥

వచ॥ అనిన అక్రూరుండిది మేలుగాదని పెక్కు తెరంగుల బోధించి అయి
నను నీపంపు చేయకుండరాదని యరదంబెక్కి యట బృందావనం
బున శ్రీకృష్ణునికడకుచని నమస్కరించి కంసునాన నెరిగింప రామ
కృష్ణు లానందంబున మధురానగర ప్రయాణంబున కుత్సహింప
యశోద—

అసాక్షి—తిశ్రిగృత.

వ॥ పోవకుమా కష్టంబొదవును । ప్రియనిందన ॥పో॥

అ॥ యేవేళను వానినమ్మి । యేగరాదు దరికి దుష్టుడు ॥పో॥

2 ఆదినుండి నీవన్నను । అదేమో యోర్వడయ్యె
యేదోమోసము యాగము । కుత్సహించె మధురకునీ ॥పో॥

వచ॥ కొంతవడి యక్రూరుండుతెచ్చిన యరదంబున పయనించి మధ్యా
హ్నక కృత్యంబుల కక్రూరునకు నెలవిడ నతండు యమునానది
మునింగి కృతస్నాతుండై—

మంజ—జలమధ్యంబున శ్రీకృష్ణునిగని । సాశ్చర్యంబున వెనుక
గలరథమున జూడగ నందుండెను । గంభీరంబున గడకక॥

కం॥ జలమధ్యంబున రథమున । గలకృష్ణునిజూచి మింట గవనటకృష్ణం
డెలనప్సవనుండిన వారిను । జ్వలమతివక్రూరు డధికభక్తి నిటులనక॥

భైరవి—హావకం.

యూవే సర్వాధారుడ । విందిరేశుడవునిక్కము॥ యీ॥

దేవా నీమహిమదెలియ । దేవాదులశక్తులనగ

మి॥ నావల్లను నేమగునో । నారాయణదుష్టులవధ
భావన దేవకిగర్భము । లోవసియించి జనించితి॥ ఏవే॥

2 నిగమమ్ములుసీపాద | సీరజములు దెల్పుగాదె

భుజగశయన కంసాదుల | బాలియింపగతరివచ్చెను

మి॥ జగములననుజోలుభాగ్య | శాలిలేడు యేమనమిము

బాగడ పూజనము చేయగ | పొడగానగ వజ్రైగాన ॥ యీవే॥

వచ॥ అని పార్థించు నకూరియని దీవించి రథాహుధులై మధురానగ
రంబు చేరంజని గ్రామంబు వెలుపలండిగి, యకూరా! నీవరిగి మూ
మామగారికి మా రాక నెరిగించుమనిపంప నతండు దేవా! నాయిల్లు
పావనంబాచరింపవేయన వారలు వల్లెయన నతండు చనిన—

గీ॥ రామకృష్ణులు యమ్మధురాపురంబు | కలయగనుగొనుచుండ వీధు
లను హర్ష్య | తలములన్నిల్చి కాంతలు తమమనముల | కృష్ణుని
గాంచి తలపోసి రిట్లుగాను॥

*సీ॥ వీడతేరక్కసి విగతజీవగ చన్నుపాలుద్రావివమేటి బాలకుండు
వీడతేనందుని వెలదికిజగమెల్ల మొగమునంజూపిన ముద్దులాడు
వీడతేమందలో వెన్నలుదొంగిలి దర్పించి మెసవిన దాపరీడు
వీడతేయలయించి వేతలమానంబు చూరలాడిన లోకసుందరుండు
వీడులేకున్న పురమట వీధులంబు | వీనిబొందనిజన్మంబు విగతఫలము
వీనిబలుకని వచనంబు విహగరుతము | వీనిచూడనిచూడ్కులు వృథ
లువృథలు॥

వచ॥ ఇట్లు బల్కుచుండ నగరద్వారంబు కడకుంజని కంస నృపాలునకు
గా శుభ్రవస్త్రంబులం గొంపోవు రజకునింగాంచి కృష్ణుం డిట్లనియె—

చేగడ—చతురశ్రగతి.

వలువలివ్వరా రజక | వలువలివ్వరా॥ వలు॥

కలుగవు మా మందలోన | ఘనచేలంబులు యిప్పుడే

వలయు గట్టుకొనగనీకు | వచ్చుపుణ్యము నిజముమాకు॥వలువ॥

రజ—యెట్టులెటులురా గొల్ల | యెట్టులెటులురా॥ యెట్టు॥

గట్టుకొనగ దగుమరె భూ | కాంతునిచేలములుమీరు

యిట్టలాడ గొల్లవల్లెయే | పొండు బ్రదుకగచా॥ లెట్టు॥

గీ॥ అనిన రోషించి కృష్ణుండు యతని మూర్ఛన్ము | మూడిపోవంగ గొట్టి
యా బాడవచ్చు | నాయకుఁజొసంగు భూషలు వస్త్రవితతి | దాల్చి సిం
గారముననుండి దరిజెలంగు॥

వచ॥ సుదాముని యింటికరుగ నతండు బలరామకృష్ణుల వభినందించి
సుమదామంబుల నొసంగి పూజించిన యతని గరుణించి దీవించి
యచ్చోటుగదలి వీధి వెంటజరుచుండ గంధమాల్యాదులం గొని చను
కంసభూపు దాసియు వక్రయగు కుబ్జుగాంచి కృష్ణుండు॥

కం॥ యెవ్వరిదానపు గంధము | లెవ్వరికడ కిప్పుడుగొంచు నేగెను నీపే
రెవ్వరు మాకిత్తువెయివి | జవ్వనిచక్కదనముగల్గి జరియింతువోగి॥

వచ॥ అనిన నాకుబ్జ యిట్లనియె—

మంజ—చక్కనివాడవు గొనుమిచ్చెద నీ | చందనముక ననుగరుణా
మక్కువదీర్పుము నాగొని దానికి | మాన్మివంకరలు గనగక॥

వచ॥ మత్కామితంబుదీరినవయి నీయింటికరుదొచ్చెదననియొప్పించి కంస
నృపాలు ధనుశ్శాలకరిగి ధనురాదులన్నియుం గరంబులందెమల్చి
విరచెనని శుకుంఢరిగింప పరీక్షింన్మరేండు—

మంజ—ఆవలకంసుండేమొనర్చె హరి | యతని నెట్లు దునుమాడెక
దేవా జన్మముధన్యతనొందెను | దెల్పుచుద్దాని గూడక॥

15 రుక్మిణీ సందేశము

—:0:—

మంజ— కంసుడిత మాతించి యదరిపడి | ఘనమల్లర బిలిపించెక॥

హింసించును బాలకునంచని సభలో | యిష్టమలర శాసించెక॥

గీ॥ కువలయాపీడ మనునొక కుంజరమును | నగరిమొగసాలనిల్చిన నంద
తనయు | డెరిగి యద్దాని కరమట్టె నరికినంత | కొండవలె నేలగూలె
నాదండిగజము॥

వచ॥ ఆవలనద్దాని దంతంబులబెరికి వానిచే కావలివారల మర్దించి బిర
బిర సభాగారంబుజేరి కంసునిగాంచి యిట్లనిరి—

కేదారగౌళ — వతురశ్శ్రీగతి.

ప॥ మామావినుమా । మాదెసగనుమా ॥మామా॥

అ॥ నీమేనల్లర । నేల రప్పించినివి ॥మామా॥

2 దుష్టులచేపట్టి । దోర్బలముంగని

శిష్టులహింసను । చేయగన్యాయమె ॥మామా॥

3 ధనుర్యాగంబడి । దగదీహావయవ

ధను నిర్మూలన । మును జేశితిమో ॥మామా॥

మ॥ అనుచున్నరృయ చిత్తులైపలుక రాదా॥వేసుడై కంస రా

జనియె॥ బాలకులార దుర్బలుర పా॥ణాంతంబు గావింప భీ

షణ శౌర్యాన్వితులైతిరే నిలుగు వీక్షా మాత్రా నిర్భిన్న హృ

ద్భవితారి ప్రబలుర్మదీయపుర శక్వస్మల్లారం గెల్వడి॥

వచ॥ అని నియమించిన మల్లరతో రామకృష్ణులు డీకొని వివిధాభీల ర

ణంబున ముష్టాఘుష్టిని బాహాబాహిని బెనంగి వధించిరి. ఆవల కృ

ష్ణుండు రామున కిట్లనియె —

శా॥ అన్నాయింకిట కంసమర్దనము సేయనొండె కార్యంబు ని

ల్చె న్నేనందులకుంగడంగుదును నీచేవచ్చుహాసైన్య మిం

దెన్నేరీతుల నడ్డుమంచని తెరంగీరితి విన్నించి దా

కె న్నీరేజదళాత్ముడొక్క మొగియుక్తి కంస భూకాంతుపై॥

హాహాన—త్రిశ్రీగతి.

ప॥ వడిదాకెను హరి కరిపైగవిసెడు । భంగిచూపరులు వెగడుజెందగా

అ॥ కడువడి స్వర్ణచేలము నడుమున । నడగనొత్తి మొగమెత్తి నగవునకా

2 కర్తవ్యంబెరుగంగ జాలకా । కంసవృషతి పెరినిబడి చూడగ

ఆర్తనాదముల సేసగదలిరా । నందర రాముండడ్డి నిల్చుగా ॥వడి॥

గీ॥ ఇటుల కంసుడాకి యింతలోమమటంబు । డుల్చి కేశపాళి చాల్చి కేల

నేలయందుబడగ నీడ్చి వత్సఫలం । బెక్కిముప్పితోడ హింసజేసె॥

మంజ—విలవిలదిన్నుక కంసుండప్పుడు ! విడచెపాణి పంచకముకా

ఇలజలదివిజానీకము పూవులు । చాలగురిసె మోదమునకా॥

2 నారమడాడెను దేవమంకుభుల | నాదంబులు సెలరేగ

దీరెదుష్టుడని చూచిమధురగల | వారలంద రటమూగ

వచ|| ఇట్లు కంసునిభంజించి తదనుచరుల వధించి చెరయందున్న యుగ్గి
సేనునివిడిపించి రాజ్యాధికారంబొసంగి దేవదేవుల చెరపాపి
మధురానగరంబున కెల్లయాదవులరావించి కాపురంబుండె. నంత
కొన్నిదినంబులకు ఉపవీతులై—

గీ|| తల్లిదండ్రుల యానతి దరలిరాదు | కృష్ణులిద్దరునుగాళికేగి యండు
సాందిపునియొద్ద సకలశాస్త్రార్థగరిమ | నేర్చికొనుచుండ గురుమయన
నిటులంత||

అకాశ — మాపకం.

వ|| గురుదక్షణ యేమిత్తురొ | కుర్రలార చదువుదీరె ||గురు||

అ|| పరమానంద మొసంగెను | భావశుద్ధిభ క్తిగరిమ ||గురు||

మ|| చిర శుశ్రూషలొనర్చిన | వరులైనను శాస్త్రార్థము లి
ట్లెరుగ రచిరకాలమందె | యెంత తెలివితేటలున్న ||గురు||

2 నాకొమరుండుజలంబున | నోకృష్ణ మునిగిరాడు
లేకొక్కరు జేగలెను | లేకువా డికేమిసేతు

మ|| నీకసాధ్యమాకార్య మే | లోకంబున లేదెరుగుదు
నాకుర్రనిదెచ్చి గురు రు | ణంబు దీర్చుకొమ్ము చాలు ||గురు||

గీ|| అనుచు గురుడు కోర నాతనిపుత్రుని | కొరకు భర్మరాజు పురికినరిగి
యమునినడల బెట్టి యర్భకుగొనివచ్చి | గురునివలనమేటి వరములందె.

వచ|| ఇట్లు విద్యాభ్యాసంబు గావించి తిరిగి రామకృష్ణులు మధురా
పురంబుజేరి కుబ్జాసతి కోరికదీర్చి యామెకు వైకుంఠంబొసంగి య
కూర్మనిబంపి హస్తినాపురివార్తలాలించి సుఖంబుండిన—

మంజ—కంసునిభార్యలు హస్తినాపురియొను | గాధచింతతో పరిగీ
ధ్వంసమయ్యె మాకోర్కెలంచుతమ | తండ్రిజరానంధుకెగి |

కం|| యెరిగించిన నాతండని | తరదుర్వార విక్రమంబు తనరగ సైన్యా
కరుడైవడిజని మధురా | పురిముట్టడిసల్పె ఐదుముహూర్తములకొంక్ష

గీ॥ ఆజరాసంధుడాహవ మాచరింప | నెదిరిశ్రీరామకృష్ణులు విదితశరవి
తానములనొంప నాత డత్యధికకోధ! ఘూర్ణమాననుడై పల్కె
ఘోరిలీల॥

*సీ॥ ఆదలించిరోష్ణంగ యాలమందలుగావు గంధగజేంద్ర సంఘములు
గాని | పరికించివనగ సంభారవంబులుగావు వాజీంద్ర హేమారవములు
గాని | పదహాతి గూల్పుగ ప్రాతబండ్లివిగావు నగసమాన స్వందన
ములుగాని | ప్రియములాడంగ నాభీర లోకముగాదు కాలాభవైరి
వర్గంబుగాని గీ॥ యార్పవన వహ్నిగాదు బాణాన్నిగాని | మురియ
బృందావనముగాదు మొనలుగాని | యమునగాదు నటింప ఘోరాజి
గాని | పోరునీకేల గోపాల పొమ్ముపొమ్ము॥

వచ॥ అని వచియించు జరాసంధుని పదునుగల నారసంబులం బెండు
వడగొట్టిన నిలువంజాలక మరుడ తమపురికింజని కొన్నిదిసంబులకు
మరల నరుదెంచి వెనుకటివోలెనే పారిపోయి యాపాట్లుమరచి
మరల కొంతకాలంబున కరుదెంచు నిట్లుపడునేడుమాకులు మధుగా
నగరంబుపై జరాసంధుండు దండెత్తి విరమించుకునె నివ్వార్త
నాలించి యతని మామయగు కాలయవనుండు—

భూపాల—చతురశ్రగతి

ప॥ కాలయవను డరుదెంచెను | ఘనమధురానగరుపైకి ॥కాల॥

అ॥ చాలినంత సేవగూడి | స్వందన గజహయములతో ॥కాల॥

2 కూరయస్త్ర శస్త్రధరులై | కుంభిని యదువనడచు
వీరసైన్యములతోభేరి | ఘోరనాదముల తోడుత ॥కాల॥

3 నవరత్నస్థాపితమై | ప్రివిమల శోభాకరమై
తవురధస్తుడై చేతకో | దండమొకడు ధరియించి ॥కాల॥

గీ॥ ఇట్లు కాల యవనుడే తెంచి పురమును | ముట్టడింప వానిమొనలనిల్చి
జయముగొనుగ మదిని శంకించికృష్ణుండు | కరుణమీర విశ్వకర్మ
బిలచి॥

వచ॥ యమునానదీమధ్యంబున నొక పగరు కట్టుమని నియోగించిన నతం

డతిచిత్రంబుగా నొక పట్టణంబు నిర్మించి దానినుండి మధురాపురి
లోనికి భూబిలంబు గల్పించిన నామార్గంబున మధురవాసుఁలందఱు
నందుజేరి యుండి రద్దానికి శ్రీకృష్ణుండు ద్వారకయను నామంబు
నిల్పె నదియెట్టిదనిన-

కేదారగాళ—చతుఃశ్రగతి.

ద్వారకాపురంబు జన | వారంబులడంబు || ద్వార |

శ్రీరమణీకాపురంబు | చెలువంబుల దాపురంబు | ద్వార |

మి॥ వారణములు వాజులుపలు | తోరణములు శుందిరులు

వారణసేయగరాని | బంటులు రణమునగంటులు || ద్వార |

2. వింతవింతతోటలు పలు | విధములైనబాటలు

సంతసంబు గలిగించెడు | చాలయన్నతపుమేడలు

మి॥ సంతలు నగరులునూతులు | దంతివహములు హయముల

రంతులు పూదీపలచే | నంతోవింతేయెసగడు || ద్వార |

వచ॥ ఇట్టి ద్వారకానగరంబు నిర్మించి శ్రీకృష్ణుండొక్కరుండు మధురా
నగరంబువెడలి కాలయవనుని కగుపడ నతండదో కృష్ణుండనివెంటం
దవిలిన పెనుదవ్వు పరువిడి యొక గిరిగుహంబొచ్చి యందుం దపో
వృత్తినొడలు మరచియున్న ముచికుందుడను మునిండాసి తనచేలం
బతనిపైగప్పి తానొందుచో దాగున్న కాలయవనుండు సమీపించి-

గీ॥ తపమొనర్చెడు ముచికుందు దరిసి కృష్ణు | డనుచుకోపించి తన్నినం
తనె మునీదు | డక్షియుగ్గంబు దెరచిన యంతలోన | కాలయవ
నుండు భస్మమై గలసెభువిని॥

మంజ—అనుచు శుకుంఢరిగించిన విని | యాయవనీశుండిటులనియె

వినిపింపుడు ముచికుందు డెవ్వ | డెటుజనియెపిడప నది తెలియె॥

సీ॥ ముచికుందుడెవరన మున్ను యిత్వాకువంశోద్భవు మాంధాతకుద్భ
వించె | బలశాలి ధీశాలి ఖలదానవులబారినుండి జేవలలకు యండ
గాగ | నిలచిపెక్కేడులా యిలరేడు గాఢాడ భూలోకమున వాని
పుత్రమిత్తు | లందఱుగతియింప హరిహయు డెరిగింప శోకించియెటు

జనబాకు మోక్ష॥ గీ॥ మాశతోగోరి యీగుహనధికతపము జేయు
చుండ తనోబలమాయె యథము | కాలయవనుని గాల్పగా గడగె
నతని | నుతినిగని కృష్ణుడు తమ గతినొసంగె॥

వచ॥ ఆవల జరాసంధుడు యవనస్థేచ్ఛ నైశ్యంబుచోడురా మధురా
నగరంబుపై విడసిన రామకృష్ణులు యుక్తిగా నతనిందప్పించుకొన
దలంచి నమ్మిన సేవకులంగొని ప్రవర్తనాద్రివయింతేరిసి జరాసంధు
డెరిగి వెదకివేసారి గుహమార్గంబుల కాప్తంబులంగూర్చి దహింపం
జేసి రామకృష్ణాదులందు నశించిరని నిశ్చయించుకొని వెనుదిరిగి
చనియె-సివిధంబున శ్రీకృష్ణుండు శతృవుల నిర్జించి మధురానగరం
బుగ్రసేనునకొసంగి తానుద్వారకాధీశుడై చెలువందె-సంత—

మంజు—రై వతుడను రాజేందుగ్రుడు కూతును | రేవతి నాబడుబాలక
భావమాలర బలరాముని పత్నిగ | గావిం చెను జనులలరక॥

కం॥ భగవతి మున్నమృతము | నగభేదినిగెల్చి తెచ్చినటు కృష్ణుడు దా
జగతీనాథులు నందరు | దెసిసారగ భీష్మతనయ దెచ్చివరించె॥

వచ॥ అనియెరింగింప పరీక్షితుండు విశదీకరించుమన శుకుండిట్లనియె—

సీ॥ ఘన విదర్భాపురమును భీష్మకుండను ధర్మవర్తనుడు వదాన్యుడేలు
నతనికి బుతులు నైదుగురందులొ పెద్దకుక్కి ధర్మవీరహీను
డార్యదూషకుడగు నందరకడసారి చెల్లెలురుక్మిణీచెలువ వివిధ
విద్యాగుణాలయ పెద్దలబూజించు శ్రీకృష్ణనాథుగా చిత్తమందు

గీ॥ దలచి తల్లడమందు యుక్తవయసునను | యున్నయాబాల పెండిలి
నన్నిభీష్మ | డెరిగి కృష్ణుని వరియించుటెల్ల సంత సించినంతట రుక్మి
వచించునిట్లు॥

తైరవి—చతురశ్ర.

మ॥ గొల్లవానికాకట్టా | పిల్లనిచ్చుటా ॥గొల్ల॥

అ॥ కల్లరీడు వాడుమాయ | కాడు నల్లనివాడు ॥గొల్ల॥

ని॥ చెల్లెలికా కృష్ణుడుపతిగా | చెల్లడుగా | మీకీటు లుల్లముగా
చాలుచాలు తలపకుడిక ॥గొల్ల॥

2 అతిరూపశాలి | యగునీరుక్మిణీకి

పతిగాగ శిశు పాలుడే తగువాడు

మి|| వెతకితిరా | దుష్టునిచెలి | కతికెదరా | ముండగు గతిగనరా |

చాలుచాలు పెద్దవారు || గొల్ల || : 9.

మ|| కులమా గొల్లడు రూపమా నలుపు దాగోష్టింబావర్చుక సదా
లలనాసంఘముతోడ జారతయు చోరత్వంబులున్నాని సా
మ్మలుబాహోబలమన్ననున్న పశులంబోషించు బ్రందావనం
బుల నాకృష్ణున కెట్టులిచ్చుటలు పూబోడిక మదిందల్పరే||

వచ|| అని రుక్మి కృష్ణునధిక్షేపించి రుక్మిణీదేవిని శిశుపాలునకిచ్చుటకే
నిశ్చయించి యతనంబు లాచరించుచున్నంత రుక్మిణి యవ్వీధం
బెరింగి—

ముఖాః—రూపకిం.

ప|| ఎటుదోచదే నిం | కేమిసేయుదాన || నెటు||

అ|| కటకటా శిశుపాలు | గట్టుకొనగజాల || నెటు||

మి|| కుటిలుండై యగ్రిజన్ము | డిటుగావింప దలంచెను
పటుతరవైరము కృష్ణుని | పైదాలిచె నయ్యో నా || కెటు||

2 చిత్తము శ్రీవాసుదేవు | చేరినిలచి నాదినుండి
తత్తరమొదవెను నాకిక | దక్కడనుచు. ప్రియనాథుడు || నెటు||

మి|| యిత్తరినేనేమిజేసి | యేనియునతనిం గూడక
పాత్తు చేదివిభుతోడ | బూనజాల నక్కటకట || యెటు||

వచ|| యివ్వీధంబంతయు శ్రీకృష్ణున కెరుంగజేయ దలపూని రుక్మిణీదేవి
యగ్నిద్యోతనుడను విప్రుంబిలిపించి యర్ఘ్యపాద్యాదులంబూజించి.

మంజ—భూసురవర నీకిదెమొక్కెద నను బోయి కర్తవని జోకక
యాసరసీజాతుడు శ్రీకృష్ణుని | యావాసంబుకు వీరక||

వచ|| జని శ్రీకృష్ణపరమాత్మతో సమయంబెరింగి నిన్నెరింగించుకొని—

సీ|| భువనపావనమైన ముద్దుపదంబుల పెక్కుసారులుభక్తి మొక్కిత
నుము | దర్శనీయంబగు తవదివ్యరూపంబు కనులజూడగ నాసగంటి

ననుము । త్రికరణశుద్ధిగా దేవదేవుడవీవెయని పెక్కుసారులు యాడి
తనుము । తలిదండ్రులేనన్న తవదేవిగావించురని కాలముంబుచ్చు
జనియె ననుము గీ॥ అన్నయగు రుక్మిణీదీప రావనీశు । నాధుగా
జేయ నెంచియున్నాడునేడు । గావనీ కెరిగింపగా గంటిననుము । దిక్కు
సీవనివమ్మితి దేవయనుము॥

మంజు—మూడుదినంబులుయుండె వివాహము । మూర్ఖశిశుపాలుతోడకా
గూడదీవు రాకుండిన పాణిముకుట చెగుటయె నిజమిడక॥

గీ॥ అనియెరింగించి తోడి తెమ్మనిఘన వి । భూషణాంబరములనిచ్చి భూమి
సురుని బంపిరుక్మిణి కృష్ణుడేభంగిదలచు । నొక్కొయనిమది తలబోసి
యుమ్మలించె॥

వచ॥ అంత నయ్యగ్నిద్యోతనండు కతిపయదినప్రయాణంబుల విడర్భ
గదలి ఘోరాటవిందాటి యమునానదిండాసి కృత స్నానాది
కర్ముడై బల్లకట్టడం బూతగాగడచి ద్వారకానగర ప్రవేశమాచ
రించి శ్రీకృష్ణభవనాంతరంబుచేరిన శ్రీకృష్ణుండెదురేగి తోడి తెచ్చి
యర్ఘ్యపాద్యాది విధులపూజించిన—

కళ్యాణి—రూపకం.

ప॥ ధన్యాత్ములలోనకడు । ధన్యాత్ముడైతి కృష్ణ ॥ధన్యా॥

అ॥ మాన్యంబయ్యెనుదేహం । బమలచరిత భక్తిభరిత ॥ధన్యా॥

మి॥ కన్యారత్న మొ కర్తుక । కడుబాళిం బుపెమింక

నన్యోన్యము గూర్చు । దూతనై వచ్చితి మదిమెచ్చితి ॥ధన్యా॥

2 వరీనను బోలునట్టి । వారుపుడమిలోన కృష్ణ

నారాయణునకు లక్ష్మీకి । నమసురాయబారినైతి

మి॥ ఘోరౌఘంబులుడులైన । నారదనుత నినుగనుగొన

నారుక్మిణి చెప్పమాట । నానోటనె యాలింతువె ॥ధన్యా॥

మ॥ ధరణీభారవిదూర సీవయిని చిత్తంబర్మిలిం డాసె నా

వరుడీవంచుదలంచి సీమృదుపదాబ్జాతంబులం గొల్పుచుక

తరికై వేచిన నన్నదగ్గిజుడు చైద్యాధీశుకున్నిచ్చి పెం

డిలిగావించగఱూనె వచ్చినను బాళింకైకొనం జూడరే॥

వచ॥ యెల్లయే వివాహముహూర్తంబు గాన—

గీ॥ లగ్నముకుముందు గౌరియాలయములోని | కలమిగొంపోయి పూజ
గావింపజేసి | దీసికొనివచ్చువేళకుం దెగువజేళి | నన్నుగొంపోదు వీ
వని నమ్మియుంటి॥

వచ॥ అనియామె యెరిగించినది—

మంజ—అనియగ్నిద్యోతను డెరిగించిన | యాలకించి కృష్ణండు
మనమున సంతసమూరగ నాతని | కనియెనీగతి వినుండు॥

2 ఆవహూరి సోయగము గుణంబుల | నాలకించి తీవరకు

భావమామెపై జిక్కివచ్చెదను | పరిణయ కాలంబునకు॥

సీ॥ అనితరసామాన్యమై వింతగొల్పు నీయాననంబుకు ముద్దులంటిననుము
చిన్ననాటనుగోతె యున్నది నీయెడ నాళి యెత్తరి నెడబాయననుము
ననునమ్మియుండినవరులకు యేవేళనైన కష్టసుఖంబు లంటవనుము
రుక్మిప్రోద్బలముచే దోహి చేదీసుండు నీకరంబుచుబట్ట నేరడనుము

గీ॥ లగ్నకాలంబునకు నేనురాకపోను | నిన్నుగొనిపోకపోను నీయన్న
గర్వ | భంగమొసరింపకనుపోను భావమంను ! దిగులుడిగి ధైర్యము
వహింపు తెరవమిన్న॥

వచ॥ అని యెరిగించి కర్పూరవిడియ వస్త్రమాల్యాదులం బూజించి
షడ్రోసోపేతంబుగా సాదంబిడి యానాటికి నిల్పుకొని మరుదిసంబు
ప్రదోషకాలంబున దారకుండు బూన్చితెచ్చినయరదంబుపై శ్రీకృష్ణ
పరమాత్మ యగ్నిద్యోతనునితో నధివసించి ద్వారకవెడలి విదర్భ
సమీపించి యొకపూవసంబునందవిడిసి ముందు విప్రవరుని రుక్మిణీ
దేవికడకంపె—

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.

16. సత్య వివాహము.

—:0:—

గీ॥ వినుము శ్రీరుక్మిణీదేవి పెండిలికయి | పురమురుక్మి యలంకారముంబా
నర్చె | పలువిధంబుల వాద్యసంపదలు జెలగ | దరలివచ్చెను శిశు
సాల ధరణి ధవుడు॥

మంజ—రుక్మివారికి ను చేసి తెచ్చిదన । పోలనిల్పె 'విడిదింట'

రుక్మిణి పెండ్లికొమార్తెయ్యయ్య వారి దోవజూచు గడకంట'॥
వచ॥ అతఁ యిన్నిదోవనుండరుదెంచి—

హంజువోడి—తిక్కగతి.

ప॥ అమ్మ యెట్టి పున్నము నీ । వాచరించితో ॥అ॥

అ॥ యిమ్మహి నీవంటిభాగ్య । మెవరికున్నదమ్మా కొమ్మ ॥అమ్మ॥

2 మారజనకు ప్రేమంబును । చూరగొంటివే

కోరికలర వానిజలం । గూడనుంటివే ॥అమ్మ॥

3 అరనికీడునీవె నీ । కాలడేతగునే

కుతుకంబయె నాకు మీదం । పతులజూచినా ॥అమ్మ॥

మ॥ చనుదెంచె భవదీయనాధుడిట కీచందంబు దామెచ్చె పూ

వనిలో నిల్చెను నన్నుబంపె నెరిగింప' నీకియల్ శూరతం

గొనిపోవు' వెరచేది నిల్వముని మాన్యుండై ధరాదేవు డే

గిన నారుక్మిణి సంతసించె నతిభక్తిగొల్పె కాత్యాయన'॥

గీ॥ అంతలగ్నము దరికొన నందరధిక । కుతుకమున పెండ్లి వందిట'

గూరుచుండి । యంబికాదేవి పూజకైయంపి రెండ । రో చెలులుసేవ

కులతోడ రుక్మిణినటు॥

వచ॥ గోరీయాలయంబునం బురోహితోక్త మంత్రంబులందేవి నర్పించి

అంజలిబద్ధురాలై—

కళ్యాణి—హంకం.

ప॥ నీవేనాయిలవేల్పు । నిఖిలలోకమాతా...అ... ॥నీవే॥

అ॥ దేవకార్య నిర్వాహకి । దితిజహారిణి పతితపావని ॥నీవే ॥

మ॥ భావజవారు ప్రియకాంతా । పండిత పామరవంశ్యా

బోవుము నన్నోశ్యామల । భువనమూత పరమపూత ॥నీవే॥

2 శూలధారిణి ప్రకృతి । శూలిరాణి స్థాల్లేఖని

బాలప్రిపుర సుందరీ । బ్రహ్మరూపిణి లోకేశ్వరి గో

మ॥ పాలకృష్ణపోషిణీఖల । పాపదనుజ నాశిని

లీలావన భేలిని మాం । పాలయ కరుణాశిని ॥నీవే॥

వచ॥ యిట్లు పార్థివించి బయలు వెడలి ముందు నందముననుప్పొంగి వింత
వింత దుస్తులచే సింగారించబడి యిరువైపుల నగారాలు బిగించి పై
నధిష్టించి మేళవించువాని యిష్టంబెరింగి వర్తించు హయంబులును-
ఆవెనుక రజకుల పాలకీముందు బొంగులవలె నతిదీర్ఘంబులగు తమ
మెడల నమితదూరంబుగాజాపి తిలకించువారి నెక్కిరించుచు నడచు
బేగిరావులపై సింహితంబుగా గూర్చుండి నాభోతును ధ్వనించు పరి
చారకులును, ఆపిదప తూతూబాకా, సన్నాయి, వీరణము, ముర
జాది మంగళవాద్యంబులును, ఆవెనుకచూపరుల మనంబులు చూర
గొనునట్లు యభినయంబు గావించుచు భరత శాస్త్ర ప్రకారంబుగా
శృతియుక్తంబుగా పాడియాడు వేశ్యలును, ఆతరువాత విలువదుస్తుల
సింగారించబడి పిల్లకొండవలెనడతెంచు మదకరీంద్రముపై నధివసించి
వీధులమెట వివాహ వేదిక కడకునచ్చు రుక్మిణీదేవిని శ్రీకృష్ణుండో
డిసికట్టియెత్తి తనయరదంబునం జేచ్చుకొని పోవుచుండ—

గీ॥ పెండ్లివారికి చారులీవిధి నరుంగ॥ జేయశిశుపాల రుక్మిణుశేష సైన్య
యుతముగా వేగపరచి తారొక్క మొగిని॥ హరిరథముడాసి భల్ల
ముల్ పరపిరంతి॥

మంజు—కృష్ణుడంతతనని శితమార్గము॥ లేసి వానిదునుమాడక
కృష్ణునిపై నడిసైన్యంబంతయు॥ గేరుచు గ్రమ్మగ జూడక॥

2 అందరకన్నివిధంబుల శరముల॥ నాతండు తలంకకను
చిందరవందర గావించినగని॥ శిశుపాలుడు యనునికను॥

గీ॥ చోరతనమున మేనత్తుతునిదార॥ నవహరింతువె నీచుడా తృప్తయు
సిగ్గు॥ లేదె నినుయంతకాలయం బీదివంబె॥ జేర్చి శత్రునిశ్చేషంబు
జేయువాడ॥

వచ॥ అనిభేదలుక రణంబునకుం దొడరినంతలో బలరామాను లయదెంచి
కృష్ణునకు బాసటయైనిల్చి దురంబున శిశుపాలుం బరాజితుజేసి జరా
సంధుని నిరాయుధుంజేసి పుచ్చి దుర్యోధనుని నిర్వీర్యుం గావించి
కన్దుని దుర్లయంబడచి పెక్కురురాజుల నుక్కడంచిన రుక్మి శ్రీకృష్ణు
నిపై డాసి—

కామవస్థని—చతురశ్రాంతి.

ప॥ గొల్లజా॥ యెంతవనికి దలపడితివి ॥ గొ॥

అ॥ నా చెల్లెలినిటులపహరింప॥ చెల్లునా నిన్నదివల్లునా ॥ గొల్ల॥

2 నిలువరా॥ ఘోరసమర ముఖమునను గెలువరా॥

తలనిలువదు నాచేతిలో॥ తా'ప్పుడ గూలుచు నిజముగ ॥ గొల్ల॥

మ॥ అనిరొద్రంబున విల్లునెక్కిడి మహాస్త్రా'ళిక పయింగప్పు నా
తని నొక్కముద్దన చాపనిర్గత కరుణ దాజేసి పైజాసి యి
ట్లను శ్రీకృష్ణుడు బావ సీతుడగు మర్యాద నిడంబోలదే
యని యారుక్మి శిరోజముల్ పయినిమీసాదుల్ విడందీసిన్॥

వచ॥ సిగ్గంది తలవంచిన రుక్మిణి యిట్లనియె—

మంజ—తగునె యిట్లుగావింపగ నగ, ధర మీబోంట్లకటన్నన్
వగవకు బావమరందిగాన యిటు॥ పరిహసించితి నటన్నన్॥

గీ॥ రోసకడనేల సీతల మీసములను॥ చక్కపరచెను మంగలిశౌరిగాగ॥
యేరికబ్బును నివంటి కీరితియని॥ అన్ననూరార్చి రుక్మిణియంపెపురికి॥

వచ॥ అంత శ్రీరుక్మిణీ కృష్ణులు ద్వారావతికరిగి జగన్మోహనంబుగా
వివాహంబైన యావల కొన్నిదినంబులకు శ్రీరుక్మిణీగర్భంబున నొక
యర్భకుండుదయించె॥ శ్రీకృష్ణుడు జాతకర్మాదికంబు లాచరించి
పద్మ్యమ్నుండను నామంబిడి పెనుచుచుండ నొకనాడు—

మంజ—శంబుడును దనుజేశువొకడు యి॥ జాడ నెరిగి మదిలోన్
డంబముతో తనవైరియగునని॥ టక్కరి మాయావిధిన్॥

గీ॥ నిదురజోయెను పద్మ్యమ్ను నెత్తి పిన్న॥ నాట జలధిని బడవైచిన్
జలచర॥ మత్స్యమొక్కటి బాలునిం బట్టిమింగె॥ నెంతచిత్రమొ
గమగొనుం డీశుమాయ॥

వచ॥ అంత జాలరులు వలండుగుల్లొను మత్స్యంబులం గొన్నింటి నాశం
బరాసురునకు కాన్కగానిడ నతండు వానిచపనార్థము మహాన సగృ
హంబునకంచె నుడు వానిపరిచారికయగు రతీదేవి యామత్స్యగర్భ
స్తబాలునించి నిజనాథుండుగా మున్ను నారదునివలన భవిష్య

ద్విత్రైతాంశంబాలించిన కతుఁబున నెరింగి శంబరునికడకరిగి బాలునిం
జూపి యిట్లనియె—

మ॥ ధనుజాశ్వేర మత్స్యగర్భజని యీతంజేను పుత్రాద్ధి నె
ట్టన గాంక్షించితి స్వీకరింప కృపతోడ నాకుసీబాలునిం
గొను నాజ్ఞందయచేయుడుచనగ నాకూర్తాత్ముడటై సుతుం
గని పోషించుమటంచు బల్కె తనపాణింబూర్జునంచెచక॥

గీ॥ అట్లు రతిపోషణతవృద్ధి నంది రుక్మిణీసుతుఁడు పాప్తయవ్వనుండై
సురుచిర । రూపుడైనత రతివాని మోలనిలచి । అంజలి ఘటించి
యిట్ల నె నధిపవినుము॥

కీ॥వాణి—రూపకం.

ప॥ సుందరాకార ధీర । చూడుమునను పేమమీర ॥సుంద॥

అ॥ కందర్పా సురతసుఖము । నందేల్పుము కోరితిరా ॥సుంద॥

2 విన్నెనాధునిగ నోరి । యున్నదాన నాసమీర
వన్నెకాడ కొగిలొసగి । పాలింపర తాళజాల ॥సుంద॥

3 తలపకు వేరొండుగతిని । దరియుము ననుమారతతిని
నిలిపితి నీకొరకు పాణి । నిలము సదయహృదయమార ॥సుం॥

సీ॥ శంకింపవలవదో జగదేక సుందర వినుమీపు పూర్వము విష్ణుతనయు
డవుమన్నధుండవు భవదీయదారను రతియనుదాన భైరవుని కంటి
మంటచేసిపు భస్మమ్మయి నేగోరు వరమున శ్రీకృష్ణ పట్టివగుచు
జనియించితిని నినుశత్రుభీతిని శంబరాసురు డంబుధి వేసినంత

గీ॥ మత్స్యమొందుమింగె మఱిదానిజాలకుల్ । దెచ్చిశంబరునకు యిచ్చి
నత । దాసిగతిని యున్నదాననొటదిగని । వండుమనుచు నాకుబంపె
వాడు॥

వచ॥ మున్ను నారదుని కతుఁబున నిది యిట్లగునని యెరింగియున్న కతన
వానియాన నిన్ను బెంచితి. నని యెరింగించిన ప్రద్యుమ్నుండువిని—

మంజ—మగువా శంబర దానవునిపుడే । మృందిగచెడ గనుగొనుము
తగుననిదోచిన పిమ్మట నీయెడ తవులు కోర్కెయగు నిజము॥

గీ॥ అనుచు ప్రద్యుమ్ను డాశంబరాసురు జము । నాలయంబునకంపి పి
యాంగనగొను । మచుచు నెరిగించు నారదు మనవిపైని । కుతుక
మున నారతీసతిఁ గూడెరతిని॥

వచ॥ అంత రతీప్రద్యుమ్నులు ద్వారకా వగరంబుచేరి సుతవియోగం
బున వాడియున్న రుక్మిణీకృష్ణులకు వహస్కరించి రంత కొన్నాళ్ళకు
సత్రాజిత్తును నృపాలుండు కృష్ణుడర్చనార్థమై యరుదెంచినకృష్ణుండఁ
మంజ— అనఘ నీగళమునందలరెడు నా । హాకాంతివంతమగుచు
ఘనమణి నిత్తువె దానికైనవెల । గనగనావల్ల గొనుచు

గీ॥ అనగ నాతడనియె నాదిత్యువలన నా । కిదిశ్యమంతకాఖ్య నెసగు
మణి ల । భించె దినమునూరు యంచితబారువు । అనుసువర్ణవిచ్చు
నయ్యువించె॥

వచ॥ యొసంగజాలనని సత్రాజిత్తుడరిగె, నామరుదినంబు నతనితమ్ముం
డగుప్రసేనుండామణిని ధరించి హయంబెక్కి పేటకరిగిన మణి కాంతిని
జూచి యొకమృగపతి మాంస ఖండంబుగా దలంచి హయప్రసేనుల
జంపి దానిం దననోట గరచుకొని పోవుచుండ భల్లూకాధి పతి
యగు జాంబవంతుండెదిరి దానింజంపి యామణిం గ్రహించికొని,
గిరిగుహయందు తాను బెంచుచున్న బాలికామణిని లోలికామధ్యంబున
వేలాడంజేసె—

మంజ—అంతట సత్రాజిత్తు తమ్మునకు । నై పెద్దతడవు పరికించి
అంతుగానమిఁ చింతిలి యీగతి । యనియె నాత్మశోధించి॥

పూరికళ్యాణి—ఖండగతి.

ప॥ ఎంతపని గావించె । నేమిసేయుదు కృష్ణు ॥డెంత॥

అ॥ డింతమోసమొనర్చు । టరుగ నైతినిమదిని ॥ యెంత॥

2 ననుగోచినంత నెమణి । తనకీయ కుంటినని

ఘనుడైన నాతమ్ముని । గని జంపి మణిగొనియె ॥ నెంత॥

3 అకటకట మణిపోయె । వనుజన్ముడాపోయె

యిక నేమి గావించు । నెటువాని నిర్జింతు ॥ నెంత॥

గీ॥ అను వచనములు కృష్ణుండు నాలకించి | నిందపైఁగింపజాలక డెందము
ధృతి | బాయనీయక నొంటిగా వనులవెంట | నడచెనచ్చటను పృ
సేను గడగి వెనుక॥

మంజ॥ చనిచనియొకచో గాంచెతునుకలయి | చచ్చిపడియున్న హయమున్
గనియెదాని చెంగటనె పృసేనుని | కాయముగొనెవిస్మయమున్

2 అటసింహపదంబుల గుర్తుల | వరసివాని గతిజనియెన్

అటుపడిచచ్చిన మృగపతి గనుగొని | యకటాయేమిది యనియెన్॥

గీ॥ అవల భల్లూక పదరేఖలరసి వాని | పట్టి చని చని యొకపెను పర్వ
తంపు | గుహను గని దానిలోచేరి యహహ యనుచు | మెచ్చె మణి
కాంతి గనుగొని మించిదాని॥

వచ॥ కేలం గృహించిన జాంబవత్కుమారి విలపింప నా జాంబవంతుం
డరుదెంచి కృష్ణునింగాంచి—

శా॥ బౌరా యెవ్వడ వీవు నా మణిని నాహ్లాదంబుగా గొంచు వే
బారన్ జూచెదు చండ విక్రముడ నా బాహుబలంబించుకన్
ఘోరాజింగని జీవమున్న చనుమో కూర్మాత్మ యంచంత నై
జేరన్నిరువ్విర కబ్బె పోరు ఘనమై చింతింపగా రాకొగిన్॥

గీ॥ అట్లు పెనగుచుండ నా జాంబవంతుని | బలము తగ్గుటను కృపామ
యాత్మ | నీవె రామమూర్తి వెరుగక పోరాడి | తిని త్నమింపు మ్రొ
క్కి తనియె హరికి॥

హాహా—అది.

ప॥ గిరి ధర నీ మృదు పదముల నమ్మితి ॥ గిరి ॥

అ॥ కరుణాకర భక్త సంకట హర ॥ గిరి ॥

1. నీ, కరుణ జూపినను భవ నీ, రథి దాటింపు మునీ, శ్వర వందిత
రజ నీ, చరనాశనుడవని ॥ గిరి ॥

2. వాదా, యింకనైన నీదయ రాదా | నీపాద భక్తుడను గాదా,
శరణన్న బోచుటది, లేదా, యిటులుంట నీకు మర్యాదా, భక్త
ర్తిబాపచేగాదా, శ్రీశ్రీదా, ॥గిరి॥

కం॥ అనిసాగ్ధించియునాతడు । తనయను శ్రీకృష్ణుకొనగితన్మయభంగిక
జనెతపమొనర్ప కృష్ణుడు । తనపగరముచేరి బలికె తల్లికి నిటులక॥
మంజ॥ అమ్మ యీకోడలిం జూడుము దయ నీ । ననుచు నప్పగించెక
రమ్మని సత్రాజిన్నుపాలుని । రయమున బిల్వగ బంచెక॥
వచ॥ సత్రాజిత్తుడెంచిన కృష్ణుండు యుదంతంబంతయు సభాముఖం
బున వెలువరించి—

తోడి—చతురశ్రిగతి.

ప॥ ధన్యుడనైతిని, సత్రాజిన్నుప ॥ధన్యు॥
అ॥ మాన్యుడవిడునిందం । బాసితీ నాటిక ॥ధన్యు॥
2 నీమణిగైకొనిపేమముతోజను । నామదిసూరట నందునుయికపై ॥ధ॥
3 నిందబొందుకన్న, నిలచేడావిను । బొందినివిడచుటే, ముఖ్యముఖంబగు ॥ధ॥
చ॥ అని మణియొప్పుగించిన మహామహు డీవని నీచబుద్ధి నై
గనుగొనలేక నిట్టులాడి గట్టితిపాపము నిందబూన్చి నీ
మనమున దీనినెంచక కుమారిని సత్యుచు పెండ్లియాడి మ
త్తనువును వంశముక భువిని ధన్యమొనర్చుము నందనందనా॥
వచ॥ మణింగొని సత్యునిచ్చి వివాహమొనర్చె.
మంజ॥ పాండవేయులను జూడ నడచికై । పుండరీకాక్షుడరిగీ
ఖాండవంబు దహియింపజేసె నా । గాండివిదోడుగబరగీ॥
నీ॥ ధవునిగామదిగోరి తపమొనరించు సాధ్వీయగుకాళిందినిపెండ్లియయ్యె
మేనయత్తతనూజ మిత్రవిందనుకూర్చి తోడుతవరియించి తోడితెచ్చె
కోసలాత్మజ నేడుగోవృషభంబుల నిర్జించి పెండిలి నెమ్మియాడె
నందునిచెల్లెనిందన భద్రీయక కువలయాక్షిని గవగూడియుండె
గీ॥ నలన్వయంవరమున రాజులందరను జ । యించి మద్రభూమిశ్వరు
నిల్లుచేరి । లక్షణవరించె నిట్లు భార్యలనుగూడి । శుభము లందెను
కృష్ణుండు శూరవర్య॥
కం॥ నరకాసురుడను దనుజుడు । సురలోకం బొడిచిపై నిసురమాతచేరిక
మొరుగారు కుండలంబులు । ధైరవించిన కృష్ణుకడకు దేవేంద్రాదుల॥

వచ॥ యరుదెంచి మురనరకాసురుల తేరంగరింగించి చనివ కృష్ణుండు
రణముఖుండై చననుండ సత్యభామ యిట్లనియె—

నాదనానుక్రియ—మాచరిం.

ప॥ చిత్తగించు మానునవి । శ్రీవితేశ్వరా కృష్ణా ॥ చిత్త॥

అ॥ యిత్తరి నాదొకకోరిక । రిత్తజేయక దీర్చుడు దయ ॥ చిత్త॥

2 మీరొనర్చు కదనముగను । కోరిక పెద్దయు గలను

బోరెద పనిగల్గునెడల । పొందు నన్నుగొని యటకు ॥ చిత్త ॥

3 నరకుం డటిమూర్ఖుండని । సురలెల్లరు బల్కిరిగద

తరి యబ్బిన చూపెదము । దర్పము మీకండగాగ ॥ చిత్త ॥

గీ॥ అనుచు గోరిన సత్యను హరివలదని చెప్పి కోపంబు నందుటచేతరమ్మ
టంచు గరుకుని పై నెక్కి యతిరయమున । నరకుని పురంబుజేరి భీ
కర శరముల ॥

వచ॥ సింహ ద్వారంబు గూల్చి కోటబగిల్చిన నరకాసురుని తమ్ముడగు
మురాసురుడు వాని నందనులగు దాముండు, నంలేరిక్షుండు, శ్రీవ
ణుండు, విభాసుండు, వసుండు, నభస్వతుండు, నరణుండు ననునేడువరు
యోధులును రణంబున కాయితంబైవచ్చిన—

మంజ॥ రణ రంగంబున కృష్ణుడు మూరసుతు॥ లను నేడువర శరమొకటకా
అణగార్చెను మురు వేరొక్కమ్మున । అంత నరకుండు వనటకా॥

2 గని కదనమ్మున శతమార్గణములు । గాడినంత కృష్ణుండు

దునిమె వాని మధ్యమ్ముననే పలు । ఘన నారాచంబులజుండు॥

గీ॥ అపుడు కృష్ణుండు సత్య బలాధికత గ । నంగ దలపూని నరకు రణం
గణమున । శరము దవిలిన మూర్ఖుల్లి యొటిగినట్లు । గరుడు మూ
పున చల్లగా నొరిగెనంత ॥

మంజ॥ సత్యభామ విలుబూని నిలచి పలు । శస్త్రాస్త్రంబులు విసరక
అత్యాశ్చర్యముతో నరకుండనె । యతివా మెచ్చితి నినుదనరకా॥

కేదారగాళ— త్రిశ్రంగతి.

ప॥ భళిర యెంత గట్టిదానవె । బాలకృష్ణునకు దగవే ॥ భళి॥

అ॥ విలు బూనుట శరమేయుట । వీర పురుష లక్షణముగదె ॥ భళి॥

2 భుజబలం బింతయొప్పె | పురుషునిగా జేయకుండ

నజాడిటు చెలువగ జేసెను | నతని నేమనగ వలయు ||భృ||

మ|| అను నంతన్నరిలేచి సత్య నెడలో హర్షించి విల్లంది భీ

షణ నారాచము బట్టి నాడికిని దా సంధించి పైలాగి పై

చిన ఘోరంబగు శబ్దయు క్రముగ రక్షేశు శిరంబు భువి

దునిమో దేవతలెల్ల పుష్పములు చే తోమోడులై రాల్పగఁగ.

వచ|| అంత శ్రీకృష్ణుండు సత్యాయుతంబుగా ద్వారకంజేరి సుఖంబుండె.

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.

17. ఉపాపరిణయము.

—:0:—

వచ|| అవధరింపుము రుక్మిణీదేవి, ప్రద్యుమ్న, చారుధేష్ఠ, సుధేష్ఠ,

చారుదేవ, సుచారువు, చారుగుప్త, భద్రచారు, చారుభద్రంబు,

విచారువునను కుమారులం గనియె. నట్లే, సత్యభామా, జాంబవతీ,

నాగ్నజిత్తి, కాళింది, లక్ష్మణ, విశ్రాంతి, భద్రులును కుమారులం

గనిరి. రుక్మిణీ కుమారులలో ప్రద్యుమ్నండు మేనమామఃపుత్రి

యగు రుక్మవతినివరించి వివాహంబాడె నన పరీక్షిత్తునియె—

మంజ|| మునివర కృష్ణ కృతావమానమును | పొంది యెట్లు సుతనిచ్చెన్

మనమున గడుసందియము గల్గె దీనిని | మానుపదగు నిచ్చెన్ ||

వచ|| శుకుండిట్లనియె—

గీ|| రుక్మసుతను రాజలోకంబు నిర్జించి | తెచ్చి పెండ్లియాడె నిచ్చలవిడి

రణములోనెల్లప్పు ప్రద్యుమ్న నోడించు | బలుడు ముజ్జగాలి గలడె

చూడ||

వచ|| అంత నారుక్మవతి ప్రద్యుమ్నుల కనిరుద్ధుండను కుమారుండు

యించె. నతండు రుక్మమనమరాలగు రుక్మకాంతిని పరిణయంబయ్యె.

నావివాహానంతరము రుక్మి బలరామునితో జూదంబాడి యోడి

గల్చితినిని బొకంబులు పెల్కిన బలరాముండు వానిని వాని సహ

చరులం బట్టి పరేతాలయంబున కనిచె. నాఫల—

శం॥ బలిచక్రవర్తిని తన యులు నూర్వరు దానపెద్ద యజ్ఞలబాహు
బుకలితుడు బాణాసురు డెలమిమహేశ్వరునిభక్తు డింగితుడరయన్॥

మంజ॥ ఆబాణాసురు డీశ్వరుకైతప । మత్స్యగ్రంబుగ సల్పన్
ఆభూతేనుడు పౌతృత్వంబై । యడిగెనే వరమొదెల్పున్॥

అనందశైరవి—అదికాశం.

ప॥ జయమహాదేవ శంకర నిను । మదిన్ గొల్పెదనురా । జయ॥

అ॥ దయాభరణ నుత । దానకరుణ ధృత
భయంబుడిపి నను । పాలింపుమురా । జయ॥

2 వారా, నాకు దయ వరా, లొసగెదవ వరా, కేలగిరి
ధరా, వినుము మదిదెల్పుదురా, గిరింద్ర తనయా కుమారులతో
నీ వరుదెంచియు నా ద్వాగము గాయుడు । జయ॥

మ॥ అని పార్థించిన వల్లెయందు భవుడా యర్థాంగిని పుత్రునిన్
గొని బాణాసురునిల్లుచేరి సతులం గొంచుండె నారక్కసుం
డును వేబాహుల తీటదీరుటకు ముల్లోకంబులం గెల్పె నా
తకిం గూరిమి పుత్రియొక్కతె యుపాతస్వంగియుండెన్ స్వపా॥

జంఘాణి—తిక్కగతి.

ప॥ ఆయింతి, పూవిల్లు । చేబంతి, పూర్వదిగ్బంధంతి, వర్ణింపతరమా

అ॥ కాయజ చేతికటారీ । గాదె యామెరుగు మిటారీ । ఆయిం॥

2 కన్నులారాలేడి యన్నానుదిగదొక్క । చున్నావికంపులీనుమోవి
మొక్కు నెన్నగా సంపగి రీవి । నాభి, యన్నను సరినడబావి .
కురులు, దన్నుతమంబును సున్న, నడుము భళిర । యీయిం॥

వచ॥ యిట్టి సురూపయగు నుపాకాంతకు యవ్వనంబు పొడనూసినతరి
నొకలేయి పూలపాన్పున శయనించి నిమరించుచుండ—

మ॥ కలలో నొక్క మనోహరాంగు డెలమిన్ గావించి ముద్దాడి కీర్తి
డల జేలించిన యట్లుగాగ నది వీక్షణ్ దెల్పినింగాంచి పూ
వుల బాణుండిడు వేదనాభరమునన్ పొల్పేసి యుండంగ న
జ్జలజాక్షింగని చిత్రోరేఖయను ప్రజ్ఞాశాలి దానిట్లనున్॥

గీ॥ ప్రియ వయస్యను నాకు చెప్పిన ఫలమ్ము । గలదు గద యేల
యిట్లుంట గల తెరంగు । తెల్ల మొనరింపు మేదేని తీర్చి నీకుఁ బిల్ల
శాంగిని గావించు నిత్తరినన॥

భగవాంశాశీ—తిరుమల.

ప॥ కలగంటి కలగంటినే । వోసఖనేను ॥ కల ॥

అ॥ కలగంటి నొకజాణ । కాదు నాపక్కకు
కిలకిల నవ్వుచు ॥ కలికీ యే తెంచినట్లు ॥ కల ॥

2 నునుసిగ్గున నేను । కనియు కననియట్లు
నవవిల్లు డమ్ములు । నాపై విసరినట్లు
వనితా రమ్మని కేలు । బట్టి లాగినట్లు
జనునె సిగ్గుని కొగి । టను దార్చినట్లులు ॥ కల ॥

3 పక్కను చేరియు । చెక్కిలి నొక్కినట్లు
చక్కగ రతికేళి ॥ సుక్కజేసినట్లు
మక్కువ దీరిన । మరలి పోనున్నట్లు
దక్కితి పని నేను ! తను నిల్పినట్లులు ॥ కల ॥

చ॥ పనితరొ నన్ను కొగిట కృపామతి జేర్చి సుఖంపజేసి నా
మనము హరించినట్టి సుకుమారుడె నాధుఁడుగా దలంచి వా
ని నిలయ వర్తనంబులెటు నేనెటుగంగలదాన నేవ జే
యను నెటులభ్యుహాసనుచు నాత్మను వండురు చుంటి నీగతికే॥

వచ॥ అనియెరింగించి నిడూర్పుపుచ్చిన యుమా కుమారినిగని కుంభాంబు
నందనయగు చిత్రరేఖ ఇట్లనియె—

మంజ॥ కలలోపల గనినట్టి వానిపై । వలపు నిలుపదగునే
చెలి యాతండువర్తనది మనకుం । దెలియగాను వశమగునే॥

కం॥ అన వినియుమ సరియిట్లను । పనితాకలలోన నన్నువరియించిన యా
మనసిజ సుందరు దక్కొరు । మనమున దలపోయ చూడమాటలికేలా॥

మంజ॥ కలలో దోచినపురుషుం డిల్లపై । గలిగిన పెండిలియాను
కలుగనిచో మరణంబె పొసగు నా । కైస నిశ్చయమువినుము॥

- 2 అని విచారమును జెలిబుచ్చిన యా | యతివనుగని కాంతా
 విను ముల్లోకంబుల యువకుల | విధము చిత్రిగతు నంతా॥
- 3 సీతలో నిను వరియించిన ప్రియు | నీవు గనుగొని వచింపక
 యేకడ నుండిన దెచ్చి నీకిడెద | నేనిటు రజ్జులు వచింపక॥
- గీ॥ అని యెరింగించి చిత్రవిద్యా నిపుణత | గల్గినది యూట సకల భూ
 కాంతుల సుర | తనయులను నాగయువకుల దగుగతి లిఖి | యించి
 గొనివచ్చి యువకు చూపించె నిట్లు॥

- మం॥ అతుల వివిధ సంగీత పాటకులు | నాగంధర్వులు వీరల్
 సతత యవ్వనులు సిద్ధసాధ్యులు | చారణులన గను వీరల్
- 2 విమల సౌందర్య సంపదల దేలుమను | ద్వీరయక్షు లివ్వారల్
 అమల కళావి భవాస్పదులగు కా | మాకారులు నగు వీరల్
- *ఉ॥ మాళవ కొంకణ ద్రవిళమత్స్య పులింద కళింగ భోజ నే
 పాళవి పాండ్యదేశకురు బర్బర సింధు యుగంధ రాంధ్రబం
 గాళ కర్నాటకేంకణ త్రిగర్త సుధేష్ణ మరాటలాల పాం
 చాల నిషాద ఘూర్జరక సాళ్యమహీశులు వీరె కోనులీ॥

కేచారకాళ—చతురశ్రిగతి.

- ప॥ ఇతని జూడుమా | సతీ॥ యిత ॥
- అ॥ చతురుండతి బలుడు జరా | సంధుడు మాగధ తనయుం ॥డిత॥
- 2 సకల ధరాతల నాయక | సన్నతుండు భూరిబలుడు
 అకలంకుడగు భీష్మకు | నాత్మజుండు రుక్మినాము ॥డిత॥
- 3 సుగుణంబుల నెలవని బుధ | స్తోమమెన్ను బలవంతుడు
 భగదత్తుడు నరకుని సుతు | డగణిత సంపన్నుడు విను ॥మిత॥
- 4 నందక చక్రాబ్జగదా | నందిత హస్తాడు ఆశ్రిత
 వందితుండు పాండ్యకుడను | వాసుదేవ నాముడు వీ ॥డిత॥
- కం॥ కనుమిదె ధర్మజభీమా | ద్భనమాద్రేయులను పాండుజనపతిసుతులక
 వినుత పరాక్రమవిక్రమఃపునులను దేవాంశజాత కరులక సఖయా॥
- గీ॥ ధార్తరాష్ట్రుల గాంధారి తనయులను సు | యోధనాదుల నూర్గుర

యుజ్వలబల । విక్రముల సౌఖ్యవంతుల వెలదిమిన్న । యని వచించిన
యమయూరక నె నిలచిన॥

తైవి—రూపకం.

ప॥ వీడే వసుదేవు సుతుడు । వేదవేద్యు డభవుడుగను ॥వీడే॥

అ॥ నాడుకంస దనుజు జంపి । నట్టిబలుడు మురహరుడు ॥వీడే॥

మి॥ చూడచిత్రముగ గోవర్ధనగిరి । నాడుకేలనెన్ని గోపకు
లోడకుడంచని గాచిన । యుజ్వల తేజోనిధిచూడుము ॥ వీడే॥

2. గోపాలకుడనగ బరగి । పాపాత్ముల శిక్షింపుచు

కోపంబున కాలీయుని । గుండెలదరగా నర్చన

మి॥ మోపికగావించినవారి । యుర్విసాటిలేనిమేటి

చేపట్టిన దేవాదులు । చేరి సేవజేయుమరిక ॥ వీడే॥

వచ॥ ఉపాసుండరి యిట్లనియె-

గీ॥ అశివ నాకలదోచిన యతనికితడు । రూప చిహ్నంబులను సాటిరూ
పడుచు ద । సంబుగల వాడతండు ప్రాయంబు మొగ్గి । నట్టిడితండు
గాన నాకెట్టులీడు-

చ॥ అనిన యుపాకనుంగొనుము నాతనినందను డంగజుండనక

ననవిలుతుండనక బరగు నమ్రతనుండు భుజాబలుండు భీ

ముని మనశంబరాసురుని పోరజయించి వధించినాడు యీ

తని వరియించినన్సుఖ యుతంబని వేరుగజెప్ప నేటికి॥

మంజ—అనపటంబు పరికించిచూచి యువ । యనియెనిట్లుతలయూపి
వినుమీతడు నా విభుడుగాడుకడు । వేసటనందితిచూపి

2. అతనినూగు మీసంబులేడ యీ । యతనుని మీసములేడ

చతురుడైన నగుగాక వరింపగ । జాలమది వానివీడ॥

వచ॥ అన చిరునవ్వునవ్వి చిత్రేఖ యిట్లనియె.

మ॥ సకలోర్వీతలనాథ సన్నతుడు శక్వద్భూరి బాహుబలా

ధికు డుగ్రాహవకోవిదుండు త్రిజగద్విఖ్యాత చారిత్రికుం

డకలంకోజ్వల దివ్యభూషుడు విదర్భాధీశ్వరుండైన భీ

ష్మకభూపాల కుమార పాత్రుడితడో మత్తద్విరేఖాలకా॥

పచ॥ అని చూపిన సంతసించి యుమాసుందరి,

నాటకురంజి—రూపకం.

ప॥ ఔనువీడే నామానస॥ హరుడునుందరాంగీ॥ ఔను॥

అ॥ మానము చూరలబుచ్చిన॥ మాయదొంగనేడుదొరికె॥ నాను॥

మి॥ యీనవయవ్వనుపొందు॥ నెపుడుతనివి దీరగందు॥

మానిని నీదయ నేమందు॥ మంచిమేలుచేశితిందు॥ ఔను॥

2 కలలోపల నరుదెంచి॥ కామంబెదగల్పించి

సాలయగ రతిదేలించి॥ సూనశరుని బారివైచి

మి॥ తలపగ రానివిధంబున॥ దానేగిన దొంగవాని

దెలిపితివతి ముదమొదవెను॥ ధీశాలిని నతులందుము॥ యాను॥

మ॥ అనియూర్పుల్ నిగుడించు కోమలికను॥ అయ్యింతియోహోయుమా

నను చింతింపవె యింద్రజాలినని యీనాడేగి నాశాంబరి

ననవిల్కాని కుమారుడెచ్చి తవసన్మానంబు గైకొందు నీ

తనుగై సేత ముగింపు సంతకని యాతన్వంగి మాయావిధి॥

మంజ॥ వినువీధిం జని గాంచె తిల్లివ్వు॥ పవిత్రవ ద్వారకాపురమ్ము

కనులకు పడువు జేసెడు రుక్మ॥ కాంతి దివ్యహర్మ్యమ్ము॥

గీ॥ అర్థ రాత్రొంబునింటిలోసరిగి రుక్మ॥ కాంతిప్రకాశము శయినించి గాఢ

నిద్ర॥ మునిగియుండిన యనిరుద్ధు గొనిచనె దివి॥ చిత్రగతి నైంద్ర

జాలి యాచిత్రరేఖ॥

పచ॥ అనిరుద్ధుని గొనివచ్చి యుమానిలయంబు నన్నిల్పి యామెచేతుల

బహుమతులనంది చిత్రరేఖ చనిన కొండొక తడవున కాచిలుక

వజీరుముద్దారు నందనుండు తెలివింగని తనగృహంబు గామికించుక

విచారించు సమయమ్మున యుమాసుందరి నను సిగ్గున సమీపించిన-

మంజ॥ అతివా యెవ్వ తెవీవు నేనుయిట॥ కరుదెంచితి నేగతి నీ

పతియెవ్వరు యేపురమిది నీవిటు॥ వచ్చుటేమి సంగతి నీ

పచ॥ అనిన నయ్యా॥ యిది శోణగరము నేనీనగరాధీశు నేకపుత్రికను

అవివాహితను నీవు నాకలయందు దోచి నన్ను రతింగలసిన కతన

నిన్నేవరించి తెప్పించితిని—

పూర్వశాస్త్రజ్ఞి—చతురశ్రగతి.

ప॥ కరుణింపుమా । నాజివితేశ ॥కరు॥

అ॥ వరుడీవెయంచు । మదినమ్మియుంటినిశ్చ॥కరు॥

2 యెరుల గోరలేదంతకు । పరిణయంబు గాలేదిక

సురతం బొనరించితి కలహో । సుందరాంగ సతిగావను ॥కరు॥

గీ॥ అనుచుప్రార్థించునయ్యుమా యందమునకు । ముగ్ధుడై యనిరుగ్ధుండు
ముద్దులాడి । కౌగిటంజిక్కి రతికీళి కలసి మెలసి । సొలసి సొలయించి
యచ్చట మెలగుచుండె॥

మంజ॥ అంతకొన్నాళ్ళు జనినపైని నా । యింతికి నెలసరి దప్పె
చింతిలి పరిచారికలు భయమ్మును । చిత్తంబులనిగురొప్పె॥

2 మిన్నకున్న మోసంబువచ్చునని । కన్నన జనిబాణునకు
విన్నవించిరది చేతులు మొగిడిచి । వినయంబున ప్రభువరుకు॥

గీ॥ అటులెరింగించినంత బాణాసురుండు । కటముల దరగ దంత సంఘ
టనకోధ । ముట్టిపడ వీరసైనికు లొక్కమొగిని । తన్ను వెనుకొన
కూతు సదనము జొచ్చె॥

వచ॥ ఇట్లుదెంచి కుమారికా నిలయంబు కలయంబరికించి అనిరుద్ధుని
గాంచి రోషావేశంబున దూరిన నతండలుక దలపక వినయంబుజూప
బాణుండదయుండై సైనికులంజూచి యాగొల్లనిబంధింపుడన వారలు
పైరాకృష్ణ పాతుగ్గుడు సగుణ కార్యకుండై పదింట నేనింట నిర్వ
దింట నందరం బడగూల్చి బాణుండు దారసిలి శతప్రదరంబులనతని
నదలింప నతండిరువదియైదు బాణంబుల దొడిన బలిపుత్రుం డతని
కార్యకంబును వీరచి పైబడి బంధించి చెరయంమంచె-నావల—

మంజ॥ ఒక్కదినంబున ద్వారక కృష్ణుం । షోలగంబు నందుండ
అక్కడ కరుదెంచెను వారదుడను సెం । య మీద్రుడొక్కండు॥

2 హలికృష్ణాదులు యాముని । నర్హపాద్యాదుల వలరించి
బలికిట్లు తమబంధుమిత్రులకు । శలమ్ముల నెరిగించి॥

గీ॥ నారదా నర్హలోక సంచారి వగుట । నడుగుచున్నార మనిరుద్ధుడంతి

పురము | లోనశయనించి మరునాడు గానరాడు | చింతిలుచునుంటి
మతని వృత్తాంతమేమి||

వచ|| సీతెరుగవచ్చునంతవర కెరిగింపుమన నారదుం డిట్లనియె-

మలయమాయితము—యాపకం.

ప|| అఖిలభువన ధారుడవీ | వదియెరుంగవా ... ఆ ... ఆ ||అఖి||

అ|| నిఖిల మెరిగినట్టి నీకు | నేదెల్పుం గలాడనా ||అఖి||

మి|| సుఖముగ నిడుదించెడు మన | సూనశరని తనయునితో

సుఖయింపగ బాణాసురు | సుతమాయంగొని చనియెను ||అఖి||

2 అనిరుద్ధుండా యంగన | నశిను కేళి దచ్చుచుండ

వనితకు చూలొడవె తండి | వినికోపంబున సంగర

మి|| మున జామాతను బంధిం | చెను కారాగారంబున

నునిచె శోణనగరంబున | నుండెను మీపాతుండిపు ||డఖి||

చ|| అని యెరిగించినంత చటులాగ్నిహ దుస్సహ చిత్తుడై రణం

బున దనుకేసు గీడ్పరచి ముద్దుల హేతుని దెత్తచుదరుగ

జనవలె లెండటంచు హలి | సాత్యకి నాంబయుతంపు సేసలం

గొనిచనె శోణపూర్వరముకు వి నెనంతల బాణుడింతయు||

వచ|| నేటికింగదా? నానహస్రి భుజంబుల తీటదీరు పోరొనగూడినదని

సంతసించి దనుజచమూ సమేతుడై పురినిర్గమించి యాదవ బలం

బుల డీకొనె—

గీ|| నింతగనుగొని బాణుని యింటబంబు | వలెనటించెడు హరుడునుప

మధగణము | తోడునడువగ రణభూమి వేడుకలర | కేరెదివిజనమూ

హంబు దేరిచూడ||

వచ|| సంత నిరువాగుల రణంబావహిలై, నందొండ్లారుల ద్వంద్వ సమ

రంబు వర్ణింప నశక్యంబు. శ్రీకృష్ణ శంకరులును, కుమార మారు

లును, కుంభాండ కామపాలుడును, బాణతనయ సాంబులును,

బాణసాత్యకులును, రథిక రథికులు, నాశ్వికాశ్వీకులు, గజారోహక

గజారోహకులును, పదాతులు పదాతులును, తలపడిఘోరంబుగా

పోరాడుచుండ—

మంజ! వివిధాస్త్రంబులతో శంకర | మురభేది రణంబెల్లరకుఁ
తవుభయ మొదవించెను కొండొక | తడవుకు హరిభల్లముకుఁ ||

గీ॥ నిస్పృహత బొంది శార్వాణినేత వృషభ | రాజమూపున వ్రాలిన
రాక్షసేంద్రు | డెరిగి శ్రీకృష్ణునిం దాకి శరముల విలు | నెడసి రథ
నారధుల బాసి గుడిచెచింత ||

వచ॥ అంత బాణుడు పురికి బరువిడి శ్రేవజ్వరమును శక్తిసొండు బంపిన
నద్దానిపై కృష్ణుండు వైష్ణవ జ్వరంబు వైచిన నదియొడి హరిశరణు
జొచ్చె నావల శంకరుండు చెప్పరిల్లి పొంజలియె

కమాని—శ్రీకృతి.

ప॥ కరుణాకర మానేరము | క్షమియింపుము పరమాత్మా హరి ||కరు॥

అ॥ దురితంబొనరించినాడు | యెరుగక భక్తుడు బాణుడు ||కరు॥

మి॥ పరమ పావనంబయ్యె వానితను | భావంబులు మీదర్శనమున
చిరుతని దీవించి నన్ను | చింతించి వరంబొసగుము ||కరు॥

2 మనుమని పదలించి పుత్రి | మదిరంజల నిచ్చిపెండ్లి
ఘనగతి గావించి పుచ్చు | మనిబాణుని యెప్పించెద

మి॥ మును ప్రహ్లాదుని వంశం | బును గాచెదనని యనవే
కినుక బూనవలదు హేళన | కీడగ దలపుము మురపార ||కరు॥

చ॥ అనుచు నుతించి శంకరుడు యాహరి మన్ననలంది బాణుని
గని హరితోడి బాంధవము గల్గునె యెంతటి వారికేని నీ
మనమున శంకబూనక కుమారిని య య్యునికుద్ధ కిచ్చి య
త్యమపమ లీల పెండిలి రయంబున సల్పుము నాగనాతడు ||

వచ॥ సమ్మతించి హరితో సఖ్యంబు గావించి యుపానిరుద్ధుల వివా
హం బాచరించి యరణంబుల నొసంగి వీడ్కొల్పిన—

గీ॥ పాతునితో పాత్రితో మురవైరి ద్వార | కా ప్రవేశము గావించె
క్షౌవరుడగు | నృగుని శాపంబు దీర్చె నావృపుడనె నటు | లవలి
వృత్తాంతమంతయు నానతివె ||

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ.

సీ॥ ధరణీశవినుసుయోధను పుత్రిలక్షణ వాసుదేవునకు జాంబవతీకతన
గలిగిననందను ఘనబాహుబలయుతు సాంబునివరియించి సాహసింది
హస్తినాపురినుండి యతనితోవెడలిన కౌరవేసుడువిని కర్ణముఖుల
తోవెంటదివిలి పెన్దరమున సాంబుని నిర్జించిబంధించి నిలిపెజెరను

గీ॥ నారదునిమూలమునవిని నందతనయు | డింతపోరికిగవిసిన చెంతనున్న
సీరి సంధినిగావించి చేసెసాంబ | లక్షణాపరియము సలక్షణముగ॥

మంజ॥ ఆవల కుశలంబుగ ద్వారక పుర | మందు కృష్ణుడుండంగ
పావన గానరతుండు నారదుడు | పద్మనాభు జూడంగ॥

వచ॥ అరుదెంచి హరికినమస్కరించి సుఖోపవిష్టుండై యిట్లనియె॥
కాడ—త్రీశ్రితి.

ప॥ మనవిగైకొనుమయ శౌరీ | మహితస్వర్ణ వసనధారీ॥ మన॥

అ॥ మునిజనమానస విహారి | మురదానవ సంహారి॥ మన॥

2 నాకొక కోరికగల్గి | శ్రీకరమిము జేరితివిని
చీకాటెదో పోనిమ్మని | చేతువొసాయముదెలియకు॥ మన॥

3 మదనుడడయడైనా | యెడచూరల బుచ్చెగాన
సుదతినొకతె నొసగికాను | సుఖముచూర గొనజేయుము॥ మన॥

మ॥ అనిప్రార్థించిన కృష్ణుడిట్లను మహాత్మా నాపదార్థేలకా
మినులందొక్కతె నీనెయింతటి తలంపే మీకు సంధిల్ల నే
వనజాతాక్షి గృహంబునందిపుడు నేవాసంబుగావింపనో
గనియాలింగన చుంబనాది క్రియల గావింపుమానారదా॥

మంజ—అనియెరిగించిన వల్లెయంచుచని | యానారదు డంతంతక
వనజాతాక్షుని మాయనెరుంగక | వాడవాడలకు జనవింతక॥

గీ॥ ఒకటపాడుచుండు నొక్కచో నాడుచు | నుండు నొకటనపు నొకట
తగుల | మందునొక్కచోట నారగించు నొకంట | పవ్వళించు కృష్ణ
పతిముదమున॥

వచ॥ నారదుండిట్లలర గృహంబు లందును కృష్ణ పరమాత్మం గాంచి
యతని మాయా మహిమ కబ్బరమంది యొకయెడ కృష్ణుపాదంబు
లంబడి—

శీల్య—అది.

ప॥ దేవా! నీమహిమ గనగలనా ॥దేవ॥

అ॥ భావజ జనకా నీ॥ భక్తుడ దయగనుము ॥దేవా॥

2 నిన్ను నమ్మియున్నవారి॥ కెన్న మోక్షము పెరటి సురభి
యన్నమాట మదినినమ్మి॥ యున్నవాడ దయాశరభి ॥దేవా॥

3 ఒక్కరుండ వెట్టులుదయ॥ పెక్కురు కాంతల నేలుచు
వొక్కొయనుచు శంకదోచి॥ యుంట నిటులు గావించితి
వెక్కులేల దేలసితీ వస్థలిత॥ బ్రహ్మచారి వనియో ॥దేవా॥

వచ॥ యిట్లు ప్రార్థించి కృష్ణానుగ్రహంబుండి నారదుండరిగె. నావల
నానాదేశాధీశులకుదెంచి దేవా! జరాసంధుని దుండగంబుల సైరింప
జాలమనిన వారల నూరార్చి పంపి కృష్ణుండు నారదుని ప్రేరేప
నతండింద్రప్రస్థము—

సీ॥ ఆచార్యునొద్ద విద్యాభ్యాసంబు గావించుతరి కౌరవులు పాండుతన
యులపస॥ నోర్వజాలక విషంజాగిరంబుననిడి పాముల గరపించి
వవనతనయు॥ జలములం బడవైచి చంపగాజాలక లాక్షాగృహంబున
లాఘవముగ॥ పాండుతనయుల కుంతి పవ్వళింపగజేళి యగ్నిరగు
ల్కొల్పు టరసిభీము॥ గీ॥ సాయమున చావుదప్పి వేషములు విప్ర
బాలురట్టులు ధరియించి పరచి యేక॥ చక్రస్పరినుండి ద్రుపదు
మత్స్యంపు యంత్రే॥ ముడిపి నొప్పది పెండ్లాడి యుంట నెరిగి॥

మంజ॥ ధృతరాష్ట్రుడు పిలవించి సగము ధా॥తీతలము వారికిడగక
అతిమోదంబున నింద్రప్రస్థము నం॥ బొండవు లుండంగక॥

వచ॥ నారదర్షించి రాజనూయాధ్వరం బాచరింప నొప్పించివ ధర్మ
జుండు శ్రీకృష్ణుని రావించి యెరింగించిన కృష్ణుండు—

గీ॥ భీమపార్థుల గొనిచని భీషణబలు॥డగు జరాసంధు నురుమాడి
యఖిలరాజ॥ లోకమునుగల్గి మునిబంధు లోకమలర॥ యాగమును
ధర్మజుని పేరసాగజేసె॥

వచ॥ అందగ్రీ తాంబూలం బెవరికిచ్చుటయను సందర్శంబునంభీష్ముండు—

తోడి—చతురశ్రాంతి,

ప॥ ఇదదగుణ ధర్మజా ॥ యిడ॥

అ॥ పుడమీశుడు శ్రీకృష్ణ మూర్తి కగ్రతాంబూలం ॥ విడ॥

2 సకలలోక పూజ్యుడు సుర । సంఘవందితుడు దయామయు
డకలంకుడు వేదవేద్యు । డద్భుత చరితుడు ముఖ్యుడు ॥ నిడ॥

మంజ॥ అనియెరిగించిన శిశుపాలుండతి । కనలుచు నిట్టనియె
చనదీతని బూజింప వెర్రి గొ । ల్లనికి యేలనిది తెలియక॥

జంఘాటి—శ్రీశ్రీగతి,

ప॥ ఇంతతెలివి తక్కువపనియా । యిటుసేయుదే ధర్మజా ॥ యింత॥

అ॥ స్వాంతమందు జంకులేక యెట్టులు । శాంతనపుడు దెల్పెనీకు ॥ నింత॥

1 జలకమాడు నృజభామల । వలువలు గొనినందుల కా
కలికిని యాలనుజంపి । కులికిన ఘనకార్యము కా
తలవ సత్యభామ కాలి । తన్నులు దిని నందులకా
తెలుపు మగ్రతాంబూలము । దేనికి యీతనికిడుట ॥ యింత॥

సీ॥ వృద్ధుడంచెంచిగావించెదే పూజయీవనుదేవుకన్నచు వయసుగలదె
శూరత్వమదిదీనిచూచిపూజింతువే జరతనయనకు నోడిఫరచెగాదె
ధర్మజుడనిమదిదలచి చేయిదెపూజ నాపగాతనయన కగుననాటి
చక్రవర్తియటంచు చక్రిని పూజితె రారాజకున్నంత రాజ్యమేది

గీ॥ గొల్లకొంపలవెంబడి చల్లపాలు । దొంగిలుచు జీవనముచేయు దుండ
గీడు । యేమితిలకించినా నామహేశులున్న । సభనుకృష్ణుని పూజింప
సాగితివు॥

వచ॥ అనిన భీష్ముడిట్లనియె—

సీ॥ బాలహంతకి యయిపాలలో విషముంచుకొనివచ్చు పూతనంగూల్చి
నాడు । తల్లిగట్టినరోట తగముద్దులంగూల్చిగంధర్వ యుగమునుగాచి
నాడు । మన్నుదిన్నాడని యన్నచెప్పగ తననోటిలో బ్రహ్మాండ
కోటిజూపె॥ కాలీయధాని ఫణాగ్రములపైని తాండవమాడె సురలు
వేడంగ మున్ను॥ గీ॥ కంసునిం గాలయవనునికా కసిమసంగె॥ కొండ

వైకృతి రక్షించె గోపకులను । యిట్టి శ్రీకృష్ణు సరిపోల్చె నెవరి
కగును । యగ్రపూజకు తగునట్టి యనఘుడతడె॥

మంజ॥ అనవిని కృష్ణుడు శిశుపాలునకే । యాచరింపుడిపూజ

మనుజేశ్వరుడను గాను నాకిదే । మాడ్కిదగు సల్పుడోజ॥

వచ॥ అనిన దమఘోషాత్మజుండిట్లనియె—

గీ॥ అద్విరా గొల్లజా సేదయారసంబు । కోధమున కేచుజడియను రుక్మి
ణిసతి । దొంగిలిననాడు సీచావుతోలగె నిందు । తప్పదిక నగ్రపూజ
కతంబునవిను॥

గీ॥ కృష్ణుడిట్లను యీదుండగీడు నాకు । మేనమరదియగుట తల్లిమేలు
గోరి । యుంటితపరాధముల్ సై చియుంటినింక । నూరకొనజాలవీని
యాయువిదెలికె॥

మంజ॥ అనికృష్ణుడు ధర్మజు డొసంగిన । యాపశ్చేరముక బూని
కనలుచు విసరిన దునిమెనతని చ । కాఁయ్యధంబునై పూని॥

వచ॥ అంత రాజసూయాధ్వరంబు పూర్తియయ్యె—

గీ॥ హలధరుడునంత తీర్థయాత్రాభిలాష । నరిగయావంతి కాశ్యపాధ్వ
పగ్రయాగ । గయకురుక్షేత్రమాయ శ్రీకాళహస్తి । రామగుండము
నాదిక్షేత్రంబులకును॥

దేవగాంధారి—ఏకతాళం.

ప॥ కురువంశోద్ధారవినుము । కుచేలుడొకడు పేద ॥ కురు॥

అ॥ ధరణిసురుడు యోగరతుడు । దైవభక్తి తత్పరుడు ॥ కురు॥

2 శ్రీకృష్ణుని జాల్యసఖుడు । చిరిగిన వలువలు చాలిచి

తేకున మునిపల్లెలోన । దివిరి తపంబొనరించెడు ॥ కురు॥

వచ॥ ఆకుచేలున కర్ధాంగియగు వామాక్షీయందు యిరువది యేడ్దురు
కుమారు లుడయింప-

గీ॥ వీరవరచూడమే నిరుపేదవాని । కధికసంతాన మొకనాడు ఆకటనక
నకలువడి విప్రనందనుల్ యొకగతి తమ । జననికడకేగి యిటులేడ్వ
జాగిరంత॥

హిందుస్తానిముఖారి—చతురశ్రగతి.

ప॥ అమ్మా మేమాగలేమే యీ । మాకలి బాధకు నరనిముసంబైన॥ అ॥

1 ప్రాద్దునె త్తికొచ్చెనే యొక । ముద్దైన మాకీయజాల వేమిగతి॥ అమ్మ॥

2 కడుపుసాదబెట్టెనే యొక । గడియైన తిండిలేక జీవింపగాలేమే॥ అ॥

మ॥ అని వాపోయెడు పుత్రులంగొనుచు దానాత్మేశు సాన్నిధ్యముకొ

జని నాథాయటు జూడుడీ నిశువు లన్నా కాళ్లకుంజుట్టిరే

మనియూరారెచ్చెద నాకటం బడిరిటుల్ యాలోచనల్లేక కూ

ర్పొనిన న్నేమిఫలంబు లెడనిన పారుండుస్మరం చిట్లనుక॥

మంజ—చనితా దారిద్ర్యాంబుధి లోపల । బడిమునిగెడు మనకుకొ

గనదరియించెడు నొకగిలదెయెటు । గడచునేమిగావించుకొ॥

వచ॥ వామాక్షీ యిట్లనియె.

గీ॥ మీరు ద్వారకనాథుని కూరిమిసఖు । లంచువింటినిగాన నయ్యనఘు
దరిసి । లేమనిందెల్పు సాయంబు నేమియేని । సేయడే పోయిరండు
మీచి త్రమవల॥

వచ॥ అన కుచేలుం డబలా! అతండు నేనును బాల్యసఖులము. ఏడి చా
లాకాలంబయ్యె నదిగాక నేనా కడు పేద నతండా రాజాధిరాజ భోగ
వరుండు. నన్నిపుడు నిరసింపక పూర్వమైత్రిం జూపునే॥

గీ॥ యెట్టులైనను శ్రీకృష్ణు పట్టనంబు । చేరుటయెలెస్స దర్శన శ్రీలభించు
గాని రిత్తచేతుల పృథు గానబోదు । నాయనుచు చింతగల్గునో
హంసగమన॥

మంజ—అన వామాక్షీయు నాథాయటుకులు! గొని తెచ్చితి నొకరింటకొ

చినబాలుని పోరుడుప వానిగొని । శ్రీకృష్ణుని గనుగంటకొ

2 మంచిదిలేయని యాకుచేలుడుకొ । పంచచెరుగు నందుకొ

కొంచెము యటుకులుగట్టిద్వారక । కుకొ జనగనగ ముకుందుకొ॥

వచ॥ మెల్లమెల్లగా నడచుచు పాంధజనంబుల పదంబుల వాడినూదుల
క్రియగున్నుకొని వెచ్చర క్తంబు నూడ్చు తుమ్మముండులతో
నొప్పారి, జననిష్ఠనకుగ్ధంబులంద్రపు హరికికోరంబులదరి పారజేయు

సింహశరభ వ్యాఘ్రాది దుష్టమృగసంతాన ధ్వనులతోకూడి, గం
ధర్వయువతీజనగాన ప్రముది తోల్లాసంబున ఫణంబులన్నిప్పి యాడు
భుజంగ సమూహముతో మీరి ఘోరచండచండకరకరోష్ణ వేదనా
నివారణో ద్రిక్తచిత్తమత్ర మాతంగవిహరిత పుల్లకల్వారార విందా
లంకృత సరోవరంబులం జెన్నార్చి, శుకపిక శారికానికాయ సమృ
ద్ధంబై యలరారు కాంతారంబు నిర్గమించి యనేక జనపదంబులం
దాటి యమునానదిం బుల్లకట్టడంబునం గడచి ద్వారకానగరంబుచేరి
శ్రీకృష్ణుని దివ్యభవనంబుండాసి లోజోరంబోవ ద్వారపాలకులు
లడ్డగించి—

పంతుపరావళి—చతురశ్రిగతి.

ప॥ బాపడా ! నిలునిలుమిక ॥ బాప॥

అ॥ లోపలకేగగ నీవెటు ! లోపదు చిరిగిన గుడ్డల ॥ బాప॥

2 రాజాధి రాజులదె ! యీజనులందర గనుము
యోజకృష్ణు దర్శనమున ! కుండిరి నీకెటులొను ॥ బాప॥

3 పోద్దున నిద్దురలేచి నీ ! మొగముచూడ గతులుండవు
వద్దన్నను వినక లోని ! కద్దిరపోనుంటివి చాల్ ॥ బాప॥

గీ॥ అనుచు నడ్డగింప నాకుచేలుండేమి ! బలుకలేక ద్వారపాలురకడ !
నిలచి మదినిహరిని నిల్పి యీగతి పోర్ధి ! నంబు సల్పదొడగె నర
పతివిను॥

పాణి—రూపకం.

ప॥ మురళీ ధరవర ! గోపకీశోరా ॥ ముర॥

అ॥ శరణంటిని నను ! కరుణేంపుమురా ॥ ముర॥

2 నీమూర్తిని గను ! నాశవచ్చితిరా
శ్రీమనోహరా ! చెలికాడనురా ॥ ముర॥

3 ద్వారపాలు లిటనిల్పితిరా నా
నేరమేమి నేకుచేలుడనురా ॥ ముర॥

ఉ॥ అంతిపురంబునందు దనయంగనలందరు చేసేవల

త్యంతము సల్పుచుండ మృదు తల్పమునం బవళించి రుక్మిణీ
కాంతుడు నేకుచేలుడను గావుము నిల్పిరి ద్వారమును నం
చెంతయొక్కగోళమున కేగిన దిగ్గవలేచి పేముడి॥

వచ॥ ద్వారముకడ కరుదెంచి కుచేలుని గాగలించుకొని యెడవాత్తు
కొని లోనికిం దగురీతిగొనిచని తనహంసకూలికా తల్పముంజేర్చి—
మంజ॥ జలములు రుక్మిణిపోయ పాదములు | చక్కగాగడగి కృష్ణుండు
వెలగల చీనాంబరముల పాద | మృదుల తడియొత్తెనుజుండు॥

గీ॥ తక్కుగల కాంతలెంతయో మ్రోక్కి వీవ | నలను వీవగ గంధమ్ము
నలదకృష్ణ | డాకుచేలుని పాదంబులంటి మర్ద | నంబుచేయుచుదారల
నరసియనియె॥

మంజ॥ నాకుభక్తుడై సతమునన్ను విడ | నాడక కొల్చునెవండు
తేకువ వానికి నేభక్తుడనై | దివిరిసేవింతు జుండు॥

కం॥ మిత్రము కుశలమె నీదు క | శత్రుంబుకు నీకుశుధమె లావణ్యవతుల్
పుత్రులు పుత్రికలెందరు | యాత్రిజగమ్ములను ధన్యుడీవె కుచేలా॥
వచ॥ అన దేవా! నీకృపామహిమంబు కతన నందరుంగుశలమే. పుత్రు
లిర్వదియెడుగురు జనించిరని మిన్నకున్న శ్రీకృష్ణుండు తలయూచి—

భాగ్యవతి—చతురశ్రగతి.

వ॥ చెలికాడా మరచితివా | చిన్ననాటి మననడతలు ॥ చెలి॥

అ॥ తలపులాకటి గాగగురుని | ధామంబున మెలగుటలో ॥ చెలి ॥

2 గురుసతి యొకదినము వంట | చెరకు దెండు యడవిలోన
కరిగి యనగ నీవేనును | యరుగమా? వర్షమురాదె ॥ చెలి॥

గీ॥ యిట్లు చిన్ననాటి వెరిగించి కృష్ణుండు | నన్నుచూడ వచ్చినాడ
విదియె | చాలునాకుకాన్క సాదరంబున నేమి | తెచ్చినాడ వేది
తెమ్ము సఖుడ॥

వచ॥ అని గోర కుచేలుండటుకుల నిడుటకు శంకించి మిన్నకున్నంత

కృష్ణుండు వాని చేలాంచలంబుననుగ్మడిచిన యటుకులువిప్పి బ్రహ్మ
నందంబున నొకపిడికిలి భుజించి వేరొక పిడికిలిం బట్టిన—

మంజ॥ ధవుని కరము తెమలించి పట్టి వై । దర్శి యిట్లు తాననియె
యివియే చాలును భోగ భాగ్యముల । నిడుట కింక వలదనియె॥
గీ॥ కృష్ణుడావల మితుని కిడిచిరత్న । రత్నభూషలు చీనాంబరంబు
లొసగి । వీడుకొలిపిన పారుండువెడలి నిజపు । రంబుగనుగొనియమిత
విభాంతుడయ్యె॥

కేవాదశాశ—ఏకతాశం.

ప॥ అతుల విభవమీపురంబు । నారావర్ణింప దరమె ॥అతు॥
అ॥ నుతియింప గదగి భవనము । లతియున్నతమై దనరెను ॥అతు॥

2 వీధులతి విశాలన్ములు । వివిధ విఘ్న వారన్ములు
సాధుజనుల యాశీస్సులు । సౌఖ్యమె రూపందె ననగ ॥నతు॥

మ॥ అనివర్ణింపుచు యీపురంబెదియె నయ్యబ్జాత్ము శ్రీద్వారక
గొనదాడిరికి నంచు వింతవడు నగ్గోవింద పాదార వి
దనతద్భక్తియతుక కుచేలుదరి కాంతారత్నములచేరి పా
వనచారిత్ర భవత్పురంబిదియె దివ్యద్దేహముక మియదే॥

వచ॥ అని యొక దివ్యమందిరాంతరమునకుం గొనిచని రంతవామాక్షి
సభూషయై యరుదెంచి నమస్కరించి దేవా యిదియంతయు తమ
దయయును శ్రీకృష్ణానుగ్రహంబునను లభించెనని యెరిగించిన నా
కుచేలుండు సంపద తనకుగానట్లుగా దలంచిభగవద్భక్తివీడక తరించె
సూర్యోపరగా సమయంబున—

మంజ॥ గ్రహణస్నానమ్మును గావింపగ । రామకృష్ణు లెదదలచీ
గృహిణుల బంధుల పరిచారకులతో । గేహంబులెల్ల విడచి

2 మునుభాగ్గన రాముండు క్షత్రియుల ! దునిమి వారిరక్తమునక
ఘననదులను శమంత పంచకము । గానగు వానినొనర్చె॥

వచ॥ అట్టి శమంతపంచక నదీన్నారంబుచని కృతస్నాతులై యటకరు
 నెంచిన యాశీనర, మాతృస్య, కురు, కోసల, విదర్భ, సృంజయ,
 కాంభోజ, కేకయ, మద్ర, కుంతల, ఆరట్ట, కేరళాది భూపతులను
 నందగోపాది గోపాలురను, ధర్మభీమాష్టన నకుల సహదేవులును,
 భీష్మ ద్రోణాథృతరాష్ట్ర గాంధారి, కుంతి, ద్రోవది, హిడింబినంజయు
 విదుర, కృప, విరాట, భీష్మక, ద్రుపద, శైబ్య, దృష్టకేతు, కాశీరాజ,
 దమఘోష, విశాలాక్ష, బాహ్లిక, భూరిశ్రీవ, సోమ దత్తి, యక్ష్మా
 రోగ్రాసేన, యుద్ధవాదులంగలసి యిష్టాగోష్ఠిం బొగ్గి పుచ్చుచుండ
 నందు నందయశోదలంగని దేవకీవసుదేవులు—

శా॥ మాకుంగల్గిన నార్కృత రాత్మజుల ప్రేమంబూర్చి ముష్టుడు ము
 న్నాకంసుడు వధించె. వీనిని త్వదీయానంత కారుణ్య పృ
 ఙ్ణ కార్యంబుగ చూడగంటిమని సంప్రార్థింప నాలించి యా
 శ్రీకృష్ణుండు శిరః ప్రకంపనత లేచె యేరికిం శెప్పక॥

గీ॥ దాతయుగు బలినిలయ రసాతలంబు । కరిగి బలిచక్రవర్తి సేవాదు
 లంది । యతనికడనున్న దేవకీ సుతులనార్కృత రను గొనుచు వచ్చి
 యిచ్చెను జననికంత॥

వచ॥ దేవకీ దర్శనంబునను శ్రీకృష్ణమాతృతను స్పృహంబునను యా బా
 లురు దేవతామూర్తులం దాల్చి హరికినమస్కరించి సత్యలోకమరిగిరి॥

• మంజ—అనపరీక్షితుడు దేవతలీగతి । యగుటకే కతమొజుండీ

వినవేడుకగల్గెను వృత్తాంతము । వినిపింపు డఘముజెండీ॥

వచ॥ పూర్వము మరీచియను వానికి నర్షయను కామినికిని వీరు నందను
 లై జనించిరి. భారతీవిధాతలంగని తండ్రి కొమరితలకే సరసమా
 యని నవ్విన విధాత బ్రహ్మరాక్షసులుగా శపించిన వీరు హిరణ్య
 కశ్యపునకు పుత్రులై జన్మాంతరంబున శ్రీకృష్ణ సోదరులై జనించి
 కంసుచే నిహతులైరి.

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ

19. సుభద్రాపరిణయము

—:0:—

మోహన—ఖండజాత్యేకాశం

ప॥ ఆలింపు హరిచరిత॥ దూలింపు పాపమ్ముల ॥ నాలిం॥

అ॥ మేలెంచి భాగవత॥ మీపుసర్వమును పేరేము ॥ నాలిం॥

2 హరితనయుడు యతియై॥ హరిసోదరింగూడి

దురమందు హలిప్రముఖ వరులను నిర్జించిన కథ ॥ నాలిం॥

మంజ—యింద్రప్రస్థ పురంబునపాండవు॥ లింద్రవైభవము తోడక

సాంద్రీక్షిర్నిత్యో రాజ్యపాలనము॥ సల్పుచుండిరొకజాడక॥

గీ॥ యొక్కనాడుచేరె నక్కడ కతిప్రేమ॥ శౌరిగాన రతుడు నారదుండు

అర్జునపాద్యవిధుల నతనిపూజించి ధ॥ ర్మజుడు గోరెనిట్లు మర్మ

మొకటి॥

పూరికల్యాణి—రూపం.

ప॥ మోనిచంద్ర సుగుణసాంద్ర॥ మానితనిర్జరచంద్ర॥ మోని॥

అ॥ మానసీయ నామదినొక ఫల॥ శయము బాధగొల్పుచుండె॥ మో॥

మి॥ దేనికైన మాతమ్ములలో॥ గానికలహ ముదయింపదు యీ

మానిని దో॥వదికతమ్ములు॥ మానంబై నన్ను నేచు ॥ మోని॥

2 తరుణినొకతె నేవురుడగ॥ వరియించిరిగాన యెప్పు

డరమరిక కలుగునోయని॥ నిరతము తో॥భించుచుండు

మి॥ వెరపూహింపుడుదీనికి॥ సురముని వాగమవినుడవు

నిరసింపగలేము జనని॥ యెరిగించెను యేవురకని॥ మోని॥

సీ॥ అనిన నాతడిట్లు లనియె నొక్కయుచాయ మెరిగింతు మీరలేవురు

వినుండు॥ యొక్కొక్కరీసినొక్కొక్క వత్సరంబేలుడు తగవురాదించుకేని

యింకొండుయొక్కడు యీసతినేలుచునుండ పైవారలీయగ్మలిగృహ

సీమకేతరగా చెల్లదట్లైన పండ్రొండు మానంబులు నిండుభక్తి

గీ॥ తీర్థయాత్రాభిగమనంబు దేవపూజ॥ సల్పగావలె నీరీతి సమయ

మూను॥ డనగ నెల్లరు పట్లొప్పిరంత కొంత॥ కాలమరిగెను యొకనాడు

కారవేశ॥

వచ|| విప్రసంరక్షణార్థ మర్జునుండు ధర్మజుపాలి వత్సరంబున ఆయుధ
స్వీకారమాచరించి పాంచాలీనిలయ ప్రాంగణంబున జనుటతటస్థించె||
కం|| సమయంబు తెరగు పార్థుడు | యమనందనునాజ్ఞ నొక్కహాయన
మును యా | త్రామతిజనె నదులంటి మ | హామతులకు నొరులుచె
ప్పగావలయు నొకో||

వచ|| యిల్లుచని గంగానదిని ముగ్ధుచుండ నులూపియను నాగాంగన వరి
యించిన నద్దానిం బెండ్రాడి కొంతకాలముండి వెడల్చి చందనావతీ
పురంబుడాసి పూవనంబుంజేర||

ఉ|| అంగజాతమార్గణము నాబడు సుందరదేహవల్లి దూ
లంగ సఖీజనంబులతి శ్రావ్యమనోహర గీతిబాడ న
ర్పాంగదుపూజకై కుసుమ రాజగ్రహించుచు రాజకన్య చి
త్రాంగదగాంచె నిర్జిత మదారిపరాక్రము శక్తి నందనుక||

మంజ—కనిమోహంబెదనాటిస తండ్రికి | వినిపించెనంత నతడుకా
జనిపార్థునిగొనివచ్చి కూతునిడి | సల్పెవెండ్లి నతివేడ్కక||

వచ|| ఆతరి సచ్చిత్రాంగదకు జనించిన పుత్రుండు బభ్రువాహనుండన
బరగి చూతామహా కులోద్ధారకుండయ్యె నంత ఫల్గుణండు రైవత
కాదిచేరినట్లు శరకమారకుం డెరిగి వానిందరిసి యిట్లనియె—

సురట—చతురశ్రింగతి,

ప|| ధర్మరతా కుంతిసుతా | ద్వారకలో కథవింటివె|| ధర్మ||

అ|| నిర్మలహృది మాచెల్లెలు | నిన్నువలచె నెరుగుదుగద|| ధర్మ||

2 అగ్రజుడగు సీరపాణి | యంనుల కొడబడకయె మీ

యగ్రజునకు తనయునకిడ | నాలోచన సల్పుచుండె || ధర్మ||

కం|| కొవున నీవిటనొకయతి | గావేషము వేళియుండగావలె రాముం
డేవేళ యతులనమ్ముచు | సేవించును దాననిన్ను జేర్చునింటికిక||

వచ|| ఆవల సమయంబుచూచి సుభద్రా గొనిచనుమని రహస్యంబుగా
నరిగించి చనిన—

సీ॥ కస్తూరికా తిలకంబున నలరు మోమండున సూర్య వృపుండ్రంబుదీర్చి
తపనీయచేల బంధననొప్పుకటియందు సరవికాపాయవస్త్రంబుదాల్చి
శరణాగతా భయాభరణ యుక్తంబైన దక్షిణకరమున దండమూని
శత్రునిర్మథన భాస్వద్దాండివముదాల్చు డాకేలనొక కమండులువుదాల్చి
గీ॥ నిలచెసంయమియన భూమినేతయూర | అంగనల పొందురోశిసన్యాసి
యగుట | భావ్యమెటనైన నిప్పుడి పాఠ్యుడిచట | అంగనామణి గోరి
సన్యాసియయ్యె॥

వచ॥ శ్రీకృష్ణ మాయావచనంబుల బలరామాదులు రైవతకాద్రి
కరుదెంచి అందండుగల చిత్రంబుల కన్నులపంకువు గావించుకొని
నిర్గమించెడుతరి నమ్మాయామహానిగాంచి—

మంజ॥ శ్రీకృష్ణుండామాయ యోగికడ | జేరి యంజలి ఘటించి
ప్రాకృత కర్మంబులు సర్వంబును | బాసెననుచు పూజించి॥

గీ॥ వందనవిడ నాతని వనితలెల్ల | రటులగావించి రతడు శర్వార్పణంబు
టంచు బలుకుటెకాని యొండనడుకన్ను | లెత్తిచూడడు వారల
నించుకేని॥

వచ॥ బలరాముండా యోగిని సమీపించి పూజా నమస్కారంబు
లొనరించి—

తైఃపి—తిక్కగతి.

ప॥ మనవివినుము వో | మునినాథా నా | మనవి॥
అ॥ గనుచుముమ్ము మీ | కరుణ తోడుతను | మన॥

2 చాతుర్మాస్యలు | జల్లుడు మాయింట్
సేతుము మీపూజ | సేవలు భక్తితో | మన॥

మ॥ అనినం గృష్ణుడు వల్కునగ్గిజ యితండాలోచనంజేయ నా
మనమేమో మృషయోగిగా దెలుపు నేమానోపయిన్నింటిలో
నననిల్పందగదన్ను లేవతిభవుం డెల్లెంచరాదంచు నా
మునినిస్వండి సభక్తిగోర నగి యోభూపాల రూతండమక॥

అంశశ్చైవ—చతుశ్శిగతి.

ఐ॥ బలరామా! బలరామా!

అ॥ ఖలశాత్రున భీ॥ కర సంగ్రామా ॥ బల ॥

2 ఆనందమ్మొదవెను నీమాటలు॥ నాలకింప నేవ్రతమొక
దూనితి నటుజల్పుదేని॥ మీనిలయంబున నిల్పెద ॥బల॥

3 అవివాహితయగు నుక్తవ॥ యస్కను పావనచరితను
తపుగతి సేవింపనాకు॥ దార్పగలవె యోచింపుము ॥బల॥

గీ॥ అనిన బలరాము డార్థయోజన లవేల॥ కలదు సోదరి మాకు విద్య
లను వాణి॥ రూపమునరతి శాంతికుద్దీపనంబు॥ యాసుభద్రను మీ
సేవకై నిలుపుదు॥

వచ॥ అని యొడంబరచిన కృష్ణుండు—

మంజ॥ అన్నా యీవ్రతమెందైనను మును॥ విన్నామే యోజింపక
కన్నామే యిటువంటిమునిని చెలి॥ గావించువె పూజింపక॥

సీ॥ కాషాయవస్త్రముల్ గట్టిగా మొలజుట్టి శిరమున పెంజెడల్ చేర్చి
చుట్టి॥ రుద్రాక్షపేర్లు పేరురమున ధరియించి॥ మోమునిండుగ తెలి
బూదిబూశి॥ జపమాల కరమున చక్కగా నమరించి పాదములందు
పావాలుదొడిగి॥ వర్వతవసములంబడి సంచరింపుచు ముక్కుబట్టుక
లోన మూల్గుచుండి గీ॥ మునులమనుచును కొందరు బుధుల
మధుచు॥ గురువులమటంచు స్త్రీల నెక్కువగ దరికి॥ దీశి వారల
మోసంబుజేశి మాన॥ మును గ్రహింతురునిక్కంబు మోసగాండు॥

వచ॥ యీయోగియు నట్టిజేయని నామంబునందనుమానంబు పొడము
చున్నది. ఆవల నీయిష్టంబున హలాయుధుండు—

కేదార—చతుశ్శిగతి.

చ॥ చాలుచాలు పలుకకురా ॥చాలు॥

అ॥ యేలయిట్టి మానుల శం॥ కింపవలదురా సోదర ॥చాలు॥

2 పరమ తపోధనులౌచుని॥ వరులపట్ల నిట్లగు నే
యెరుగమె పెక్కుర నీకిపు॥ డిటుతోచె నిదేమొ ॥ చాలు॥

3 మునులన నిందియము లణచి । వనుల కందమూలంబు

లను భక్షింపుచు నుందురు । యనదగదిటువంటిమాట ॥చాలు॥

వచ॥ అనిన కృష్ణుండిట్లనియె—

సీ॥ మేనకారతిలోన మెలగి చేసినతపంబునుగు కౌశికుండు మునియెగాదె
వారనారీ స్తన భరిత దేహుండైన ఘనరువ్యశృంగుడు మునియెగాదె
మాంధాతతనయుల గాంధర్వవిధిగూడి తనిసిన సౌభరి మునియెగాదె
శర్యాతివృపతికిజామాతయైసుకన్యనుగూడు చ్యవనుండుమునియెగాదె
మునులతపములు నిష్టలు మోహనాంగి । దరియు దనుకనె యితని
వద్దను సుభద్ర । నందములప్రోవు నవయవ్వనాంగి నుంప । జనదనగ
హలి వినక యమ్మునినిచూచి॥

వచ॥ దేవా దయచేయుండని సభక్తియు క్తంబుగా దోడ్కొని చని యొక
నిలయంబున న్నిల్చి సుభద్ర నతనిసేవకై నియోగించిన కొన్ని దిన
మ్ములు గడ చన-

మంజ—వలసిన యుపచారంబులొనర్చు సు । భద్రచుగని పార్థుండు
చిలుకవజ్జీరు శరంబుల కులికియు । చేయుబట్టగానుండు॥

గీ॥ బాలయ్యాగదవే మంచిపానకమ్ము । తెమ్ముతరుణాంగి మేలుఫలమ్ము
లిపుడు । వలయుచూషించు మల్లె మొగ్గలుయటంచు । చతురవచ
నంబులన్బది నతడుదెల్పు॥

మంజ—ఒక్కదినంబు సుభద్రపార్థునకు । నోగిరంబు నమరించీ
మ్రొక్కియిట్టులనె మునివరకోరగ । బుద్ధిగలిగె నాలించీ

2 మంచియు తరం బిడుతప్పైన । మన్నింపుండనగా
నంచయాన సంశయ మదేలతగు । నభిలాషనుయడుగంగా॥

వచ॥ అనిన సుభద్రయిట్లనియె-

గీ॥ మీరుగనబోని దేశంబు లేరుచూచి । యుండురైనను నడిగెద యో
గివర్య । యింద్రప్రస్థపురంబు మీరెన్నడైన । గంటిరా పాండవుల
నందు గాంచినార॥

కం॥ వారందరు నొకచోను । న్నారా వీరాగ్రగణ్యు నరునరుగుదురా
చేరెనె యాతాదీక సం పూరితి గావించియిల్లు మునికులవర్యా॥
వచ॥ మాయాయోగి యిట్లనియె—

అథా—రూపకం

ప॥ అతివావిను దెల్పెద సీ । వడిగిన పశ్చకు నుత్తర ॥మతి॥

అ॥ సతతము నేనింద్రీ ప్రి । స్త పురంబుననె యుండు ॥నతి॥

మి॥ అతిబాహుశాలి కీ॥డి । కమిత హితుడ నేనతఃకు

యతడే నేనుగ వర్తిలు । గతి యెల్ల రెరింగినదియే ॥నతి॥

2 యిరువురమును యాతా॥ పరత దిరుగుచుంటి మిట

కరుదెంచితి గోకర్షము । నందునుండి పాండవులం

మి॥ దరుసీకు చుట్టలెగద వారం । దరిలోన పార్థునడిగెడు

తరుణీ నీమది నాతడు । దగిలెనేమొ వచియింపుము ॥యతి॥

ఉ॥ దాపగనేల సీపయి సతండనురక్తుచునాట కోమలీ

తాపసి వేసమూని నిరతంబు త్వదీయ సవర్యలంది సీ

చూపుల పల్కులన్నదిని । జొక్కుచు నియ్యెడనుండకీ॥డి సం

తాపముబాపి కౌగిట సతంబతిప్రేమ వసింపజేయవే॥

వచ॥ అని చిరునవ్వునవ్వి యోగి వేసంబుజ్జగించిన సుభద్రా సిగ్గిలి బిరబిర

పరవంబోవ నర్జునుండడ్డిన నాపెయిల్లనియె—

మంజ॥ పెద్దలుగల్గిరి వారలగోరిన । బావా సమ్మదమొందీ

ముద్దుగ బెండిలి గావించురు యిటు । మూర్ఖత యేలను జూడీ ।

గీ॥ ఆనిన పార్థునిబేల సీ జననిజనకు । లన్నలును వారిభార్యలు నంద

రెరిగి । యేయిటులు యివ్వపడిరి సీకేమిభయము ! రమ్మరమ్మని

యామెకరమ్మబట్టె॥

వచ॥ యిట్లు కౌగిటందార్చి ముద్దాడి శ్రీకృష్ణునిపంపున వాకిటనిలచిన

యరదంబుపై నర్జునుండు సుభద్రానునిల్పికొని యింద్రీప్రిస్తపురంబు

తెరపుబట్టిన యవాస్తర నెరింగి బలరాముండు సేనలం గూర్చుకొని

కవిసిన—

మంజ॥ కవ్వడి భీకరసంగ్రామంబున । గడగి యమబలంబు

దవ్వలబుచ్చిన హలాంకుడాహవ | దర్పమ్మున పైరాగఁగ్గ ||

గీ॥ కూరనారాచముల హలింబారజేసి | పార్థుడరదంబు నిలువక పరపి
యింద్ర | ప్రస్తపురమునుచేరె చ్చారకను రాము | కడకుకృష్ణుండు
నల్లన నడచి యనియె ||

వచ॥ అన్నా! విచారమేల. మేనత్తకుమారుండగుట స్వతంత్రించి గొని
పోయెనని యూరడించి—

గీ॥ తల్లిదండ్రులనెల్ల బాంధవజనముల | తోడగొంపోయి ధర్మజుతోడ
కుంతి | తోడయోచించి యచట పాట్లనకు సుగుణ | సర్వీరత్నివైభ
వంబున సంతసమున ||

వచ॥ ఆవల శ్రీకృష్ణవరమాత్మ భార్యలందరు సంతానంబుగల్గి వంశాభి
వృద్ధిని గావించిరి. వారిలో ప్రద్యుమ్ను, అనిరుద్ధ, దీప్తిమంత,
సాంబ, మిత్ర, బృహద్భాను, మిత్రవింద, వృక, అరుణ, పుష్కర,
దేవబాహు, శృతదేవ, సునంద, చిత్రభాను, వరూధక, కవి, అగ్రోధ,
అను పదునెనమంపు ప్రముఖులు. బలవరాకృతి శేముషీచురంధ
రులు. కృష్ణునకు కుబ్జయందు, యశోకుడనువాడు జనించి నారద
శిష్యుండై విష్ణుభక్తి నవలంబించె—

మంజ॥ విను శ్రీకృష్ణుని వంశంబును నే | వినుపించెద భూపాలా
విందగు జన్మము పావనమై తగు | వేధనుతంబది చాలా

2. పట్టమహిషియా రుక్మిణిగర్భము | ప్రద్యుమ్నుడు గలిగెగ్గ
దిట్టయాతనికి యనిరుద్ధుండను | దేవనుతుండొగి గలిగెగ్గ ||

గీ॥ అతనికుదయించె వజ్రుండు నతనికి ప్రతి | బాహుడు జనించె నరయ
సుబాహుడతని కుద్భవంబయ్యె వానికి నుగ్రసేను | డతనికతిబాహు
బలుడు జన్మంబునందె ||

కం॥ వానికి శతసేనుండను | ధీనిధిజనియించె నిట్లు ధీవర శ్రీకృ
ష్ణుని వంశవృద్ధి నందెను | భువనావన పార్థవౌత్ర పుణ్యచరిత్రా ||

వచ॥ ఇది శ్రీమద్భాగవతంబును మహాపురాణంబునందు దశమస్కం
ధంబని శుకమహర్షి పరీక్షిన్ను రేందుని శెరిగించె నావల—

శ్రీశ్రీశ్రీశ్రీశ్రీ,



శ్రీకృష్ణ—అవిష్ణుచక్రము.

శ్రీగురుపరబ్రహ్మణేనమః.

శ్రీ కృష్ణ భాగవతము.

(హరికథ)

ఏకాదశస్కంధము

—:0.—

20 జనమేజయ రాజ్యప్రాప్తి.

వచ॥ ఇట్లు సుఖంబులందేలు శ్రీకృష్ణపరమాత్మకడకు వాణీపురందరాది
బృందారకు లరుదెంచి నమస్కరించి—

కళ్యాణి—రూపకం.

ప॥ అఖిల లోకేశ కృష్ణ ! అఘవినాశ సర్వేశ ॥అఖ॥

అ॥ సుఖము లందె లోకమ్ములు ! చూడ దుష్టహతమయ్యెను ॥అఖ॥

మి॥ ఇకవైకుంఠము జేరగ ! నిదే యదను సమకూరెను
సకలముడిగె భూభారము ! శరణుభక్త మందారమ ॥అఖ॥

2 భూలోకంబున నీవు ! బుట్టి నూటయిర్వదైదు

శ్రీలలనాధీశయేండ్లు ! జెల్ల కలియుగంబుడాసె

మి॥ నేలయందుంట నీకోహరి ! చాలుదుష్టదమనమయ్యె
బాధిదేవతలు మొక్కుచు ! బల్కుమనిరి యిటు శ్రీకృష్ణ ॥అఖ॥

చ॥ అని యెరిగించి యాజ్ఞగొని యందరుచన్న ముకుందు డాసుహృ
జ్జనములజీరి యేమదివసంబులకు న్నలివచ్చు ద్వారకా
జనపద మద్దిలో గలయు సత్వరమంత పృథాసతీర్థమం
దునవసియింప బొందనుచు తొందరబుచ్చిన యుద్ధపుండనుక॥

మంజు! దేవాసీపాదంబుల నెత్తరి । నేవిడువక పూసంతుక

భావంబున శంకాతంకంబులు । పరిమార్పవె భావించుక ॥

వచ॥ అనిన శ్రీకృష్ణుండు యుద్ధవుని దరిజేర్చుకొని ద్వారక నిశ్చేమంబు గావించి యుద్ధవా! యింద్రియసౌఖ్యంబుల గోరక మానస వాగక్షి శ్రోత్రీ ఘ్రాణేంద్రియ గృహ్యమానంబగు వస్తుజాతంబులెల్ల నశ్వ రంబని నమ్మి దారీషణ, పుత్రీషణ, ధనీషణంబుల వర్జించి మోద భేదంబు లనఁచుండ వైవ ర్తింపుము. దారుమధ్యభాగంబున ననలుండు సూక్ష్మరూపున వ ర్తింఁచునట్లు శరీరంబున జీవుండు వసియించినటించు గావున పంచేంద్రియంబులకు దృష్టంబగు పదార్థంబనిత్యంబు. నిత్య దృష్టి జిహ్వంబని తెలియుము. దేహీ కర్మలబ్ధ దేహుండై యుం డియు సంసారమమతలు విడచి నిశ్చయజ్ఞానయుతుండై స్వక్షులబ్ధ పదార్థము నిజము. గాని క్రియ మాయాకల్పిత ప్రపంచము. అని త్యమేయని నిశ్చయించుకొని యనుని యమయాసన ప్రాణాయామ ప్రత్యాహార, థ్యాన, ధారణసమాధియను నష్టాంగ యోగమ్ముల లభించు అణిమాద్యష్ట శిద్ధులు యీమాయలోని వేననినద్గురు చరణార విందంబుల దరిజేరి చతుర్విధ శుశ్రూషల నాచరించి జీవబ్ర హ్మైక్య సంధానంబెరింగి తత్వమసీతి వాక్యార్థ లక్ష్యార్థంబులందెలశి అదియు ననిత్యంబేనని యావల నిర్వికార పరిపూర్ణంబు నెరింగియెరు కను విసర్జించిననరుండే జన్మరాహిత్యపదవి గాంచునని యెరిగించిన యుద్ధవుం డిట్లనియె.

మంజు—దేవా సీరూపంబే యేయెడ । దివురునద్దాని దెలియక

నావీనుల పర్యంబుగదెల్పుము । నావీనుమని హరియనియెక ॥

వచ॥ కురుక్షేత్రంబున జరిగిన కురుపాండవ రణమధ్యంబున పార్థునకు నాయెరిగించిన గీతలలో దశమాధ్యాయంబు నంగల యద్దానిని వినుము. భూతంబులం దాధార భూతంబునేను. సూక్ష్మగులుజీవుం డను. దేవతలయందు పద్మగర్భుడను. తనువుల హవ్యవాహను

డను. ఆదిత్యులలో విష్ణువును. రుక్మిణులలో నీలలోహితుడను. ఋషులలో నారదుడను, ధేనువులలో కామధేనువును, సింధులలో కపిలుడను. దానవులలో పక్షిహంతుడను. గ్రహములలో చంద్రుడను. నాగములలో హనుకిని. మృగములందు సింహంబును. వర్ణంబుల నోంకారంబును. నదులలో గంగానదిని. గిరులలో మేరువును వృక్షములలో సశ్వత్థాబును. వృతములలో సహింసయు. భాషణముల సత్యభాషణమ్మును. ఋతువులలో వసంతరుతువును. మాసంబులలో మార్గశీర్షంబును. యుగములలో కృతయుగమ్మును. యక్షులలో కుబేరుండను. వానరులలో నాంజనేయుడను. రత్నంబులలో పద్మరాగంబును. దానంబులలో అన్నదానంబును. తిథులయందేకాదశియు. మద్విభూతులుగా నెరుంగుమని యెరిగించి—

గీ॥ యాదవులు యనోభ్యవ్య నైరానుభూతుః । లై రథగజాదులం గూడి
ప్రాణములను । వీడిరను వార్తనిని హరివెడలి రామ । మూర్తితో
ఘోరకాననమునకు జనియె॥

మంజ॥ మార్గమధ్యమున హలి శ్రీకృష్ణుని । మాటపై నొకటనిలచి
నిర్గమించె వైకుంఠము హరియొక । నికుంజము క్రిందనిలచి॥

సీ॥ శయనించి దక్షిణచరణంబు వామపాదంబుపైనిల్చి మోదంబుతోడ
సంగుప్త మాడించుటరసి యొక్కకిరాతుదియొక హరిణికిర్ణాగ్రమనును
దలపోసి కరమునందలి శరమ్మునువీడ గానది శ్రీకృష్ణు కాలియందు
దవలిన వాడతి తందరనందుచు హరిపాదముల వ్రాలియఘమొనర్చి

గీ॥ వాడనాకిదిబామునే నరసురముఖ । వినుతు గొట్టితినిని యతిభీతిపేర
లుంగుననుయేడ్చు బోయకేలుంగవగొని । యనియె మోదంబుతోడ
శ్రీహరియిటులను॥

తోడి—చతురశ్రింగతి.

ప॥ పగవనేల యీచిన్నిపనికి నో । భక్తాగ్రణి గుణశాలీ వాలీ ॥పగ॥
అ॥ తగదెట్లు సన్ను చేయ నీ । పగదీరెను నామాటచెల్లెను ॥పగ॥

- 2 పూర్వజన్మమున నీవువాలివై । పుట్టినపుడు నేరఘరాముడ
పర్వతధీరుని నిను నేనొక । వలముచాటు నుండి కొట్టితిని ॥వగ॥
- 3 రామనన్ను మోసమున నీవిటు । పాణంబులకుంబాసితివే నిను
యీమాడ్కిని గామితునంచటి! వెరుగవెదానిని త్తరిని దీర్చితి॥వగ॥
- మ॥ అనియూరార్చినవాడు శ్రీహరిని భక్త్యావేశతన్ చూచుచున్
తనువుగ వీడి వికుంతమేగెను సురల్ దైత్యానికిం పుష్పచం
దన యుక్తంపు విమానముండిగిది పైసంజేచ్చి జైశబ్ద నా
ద నినాదంబులతోడజేర్చిరి మహాత్మా దివ్యవైకుంఠమున్ ॥
- వచ॥ పరీక్షన్మహారాజా! యిదిశ్రీమహాభాగవతంబునం దేకాదశస్కంధ
మని యెరిగించి—

ద్వాదశ స్కంధము

కం॥ వినుభావి కాలగతులున్

జననాథ బురంజయాఖ్య జనపతివంశం

బును కొంతకాలమేలిన

వెనుకను మూర్ఖులు ధరితి) విభుకాదు రొగిన్ ॥

మంజ॥ ఆమూర్ఖుల పాలనమున నొక్క మ । హా బలుండు చెన్నొందున్
భూమినిగనగా చంద్రగుప్తుడని । మోయుకీర్తి జగమందున్ ॥

వచ॥ మూర్ఖుల పాలన పన్నెండువందలయొడ్లు చన్న వెనుక బాన్వినంశ్వు
లేలుమరు. వీరలు మున్నూట నలుబది యేనబ్బుబులు పాలించిన
ఆవల ప్లేచ్చాదు లీధరాపాలనంబాచరింతురు. యవనులెనమండ్రును
బర్బరులు పదునాల్గురు, గురుండులు పదమువ్వురుం బాలింతురు.
అప్పటికి కలివి జృంభించి ధర్మసత్య దయాహీనులై జనులుకోధ
మాత్సర్యాబులుబొందుచు ప్రీతిబాలగో ద్విజాదుల సంహారంబు
నకు జంకక రోయకపరధన పరప్రీతాములై రజస్తమోగుణరతులై
యల్పబల యల్పజీవులై అన్యోన్యవైరాను భూతులై పృథు వేష

భాషాను రక్తులై వర్తితు రగత మేఘంబులు జలసూన్యంబులు
యోషధులల్పఫలదంబులు. సస్యంబులు నిస్సారంబులు నగునట్టితరి
దేవదేవుండగు నారాయణుండు ప్రజాపాలన తత్త్వరతశంభుత్వాగ్రామం
బున విష్ణుయశుండను విప్రునికు కల్క్యవతారుండై జనించి కూర
ఖండనం బాచరించు నత్తరి శంతనుని అగ్రిజుండగు దేవాపియు
నిక్షాకువంశజుండగు మరుత్తును పృథువులై ధరాపాలనంబు గావిం
తురు. కృతయుగ ధర్మంబు నడచును—

మంజ॥ నేనుమృతుడ నాచునంచు మదిలో । నేలరేడ చింతిలకు

మానిత భాగవతం బాలించితి । మరలరావు యీయిలకు

2 పదునెన్నిది పురాణముల లోపల నిదికడుముఖ్యంబు

నడమల మోక్షంబొసంగు దీనివిన । జాలినవారికి నిక్కంబు॥

వచ॥ ఇకపురాణంబుల వివరంబాలింపుము. నాజనకుండగు వ్యాసుండు
బ్రహ్మపురాణంబు పదివేలును (10000) షడ్జం బేబదియైదు
వేలు (55000) విష్ణుపురాణ మిరువదిమూడువేలును. (23000)
శైవం బిరువదినాల్గువేలు (24000) భాగవతము పదునెనిమిదివేలు
(18000) నారదం బిరువదియైదువేలు (25000) మార్కండేయంబు
తొమ్మిదివేలు(9000) ఆగ్నేయంబు పదునైదువేలనన్నూరు(15400)
భవిష్యోత్తరంబు పదునాల్గువేల యైదువందలు (14500) బ్రహ్మకై
వర్తంబు పదునెనిమిదివేలు (18000) తైంగంబు పదకొండువేలు
(11000) వరాహంబు యిరువదినాల్గువేలు (24000) స్కాందంబెను
బదియొక్కవేల నూరు (81100) వామనంబు పదివేలు (10000)
కూర్మంబు పదునేడువేలు (17000) మాత్స్యంబు పదునాల్గువేలు
(14000) గారుడంబు పంచొమ్మిదివేలు (19000) బ్రహ్మాండంబు
పన్నెండువేలు (12000) మొత్తము నాల్గులక్షల (400000) గ్రంథం
బని యెరిగించెనని సూతుండు శౌనకాదుల కిట్లనియె.

మంజ—తక్షకుండు కోలాహలమాంత్రీకు । దారిలోనగనిచునులక
లక్షలకొలది నిచ్చిపంపె వెను । రానీయక నృపుకడకు॥

చ॥ ధరణీసురుండు వొక్కరుడు ధాత్రీవిభుంగను కాంక్షపండు దా
కరమునబూని యేగుట తగంగని తక్షకుడంగుజొచ్చె భూ
సురుడు నృపాలుకిచ్చుట విహారగమంటిన తోనె శ్రీహరీ
శరణని యాపరిక్షితుడు చయ్యగనేగె వికుంతమంతట॥

వచ॥ నృపాలుమరణంబున కందరు విచారించి రతనికుమారుండగు జనమే
జయుం డొక్కింత విచారించి కృత్యంబులందీర్చి సర్పయాగం బాచ
రించుచు శ్రీవిష్ణువుచే వారింపబడినవెనుక మునులు రాజులు జనమే
జయునకు—

కేవలగౌళ — చతురశ్రిగతి.

ప॥ పట్టాభిషేకముగా । వించిరి జనమేజయునకు॥ పట్టా॥

అ॥ దిట్టప్రజాపాలనమున । ధీరుడు రణకోవిదుడని॥ పట్టా॥

2 మంగళతూర్యములు మ్రోయ । అంగనలు సేసలిడ వా
రాంగన నృత్యములు సెలగ । నఖిలమునులు దీవింపగ ॥ పట్టా॥

3 గోపాలాకృష్ణకవి । కోరిక కావ్యములు వ్రాయ
భూపాలురెల్లమెచ్చి । పొగడకనుల పండువుగ॥ పట్టా॥

ఇది శ్రీమహాభాగవత పురాణంబునం ద్వాదశస్కంధము.

—♦ గద్య. ♦—

ఇది శ్రీమద్బాలా తిపురసుందరీ వరప్రసాద లబ్ధ కవితా లంకార
శ్రీమత్కృష్ణసోత్ర పవిత్ర కొప్పరపువంశ పయఃపారా
వార తారాజార అష్టయామాత్య పాత్ర గుర్వయ
మంత్రిపుత్ర రాజ్యలక్ష్మణబా గర్భ శుక్తిముక్తా
ఫలాయమాన గోపాల కృష్ణమూర్తి

విరచిత

శ్రీకృష్ణభాగవతము స్వాము
సంపూర్ణం.

త ప్పొ వ్వు ల వ ట్టి.

| పుట | పంక్తి | తప్పు | ఒప్పు | పుట | పంక్తి | తప్పు | ఒప్పు |
|-----|--------|-----------|----------|-----|--------|--------------|--------------|
| 8 | 12 | గృధ్ర | గృధ్ర | 74 | 16 | దేని | దేని |
| 9 | 22 | తవ | తిల | 76 | 21 | యంద | యంద |
| 10 | 28 | పుత్రుల | పుత్రులు | 78 | 20 | దేగ్గు | దేగ్గు |
| 11 | 25 | పాదలై | పాదలై | 79 | 15 | యస్తి | యస్తి |
| 12 | 22 | దేవా | దేహి | 80 | 10 | నిందరక | నిందరక |
| 19 | 8 | విదురుండె | శల్యుండె | 83 | 22 | రమా | రమ్మ |
| 22 | 8 | స్నేహ | స్నేహ | 87 | 20 | తిని | తిని |
| 28 | 18 | నద్ది | నద్ది | 88 | 6 | నుండు | నుండు |
| 30 | 18 | డతి | డతి | | 12 | యన | యిన |
| 31 | 19 | లడి | లమడి | | 20 | క్రిడి | ప్రసి |
| 34 | 11 | చాల | చాల | 90 | 11 | అన్య | అన్య |
| | 15 | రెండు | రెండు | 92 | 18 | నాల్గు | నాల్గు |
| 35 | 16 | వివా | యవివా | 95 | 18 | బునా | బునా |
| 36 | 20 | తలంబు | తలంబు | 98 | 1 | క్తురుమునుల్ | క్తురుమునుల్ |
| 40 | 8 | నుండె | నుండె | | 16 | నిభూ | నిభూ |
| 41 | 10 | వికుంత | వికుంత | 103 | 20 | లాడు | లాడుచు |
| | 20 | క్రిష్ణ | క్రిష్ణ | 104 | 5 | కైట్టె | కైట్టి |
| 48 | 25 | నిటలు | నిటుల | 105 | 6 | కునకశ్శేపు | కునశ్శేపు |
| 50 | 7 | నఖి | నఖి | 106 | 19 | సులై | సులవై |
| | 10 | డన | డన | 107 | 6 | గదని | గదలి |
| 55 | 18 | వయ్య | వయ్య | 108 | 4 | యకు | యకు |
| 57 | 18 | చిర | చిర | 109 | 25 | రుదై | రుదై |
| 58 | 14 | దుమికి | దురికి | 111 | 17 | యింపక | యింపకు |
| 61 | 2 | పతి | పతి | | 25 | మున్య | ములున్య |
| 63 | 16 | అను | అను | 113 | 24 | నారి | నారి |
| 63 | 25 | వేల | ఏల | 115 | 5 | వచ్చినా | వచ్చినా |
| 65 | 10 | మందు | మంద | 117 | 9 | నీక | నీక |
| 68 | 9 | నాడు | నాడు | 118 | 6 | వసం | వొసం |
| 71 | 20 | నాకు | నాకు | | 15 | తిక | తిక |
| 73 | 27 | కుక్కు | దిక్కు | 121 | 8 | నటు | నటు |

| పుట | పంక్తి | తప్పు | ఒప్పు | పుట | పంక్తి | తప్పు | ఒప్పు |
|-----|--------|--------|--------|-----|--------|--------|--------|
| 121 | 4 | సెంచె | సెంచి | 129 | 20 | నైపు | నైపు |
| 123 | 22 | హాస | హీన | 130 | 27 | చెడు | చెడు |
| 124 | 7 | నేడ్పు | నేడ్పు | 131 | 9 | కంత | కంతు |
| 127 | 12 | గొన | గొనగ | | 20 | విటు | నిటు |
| 129 | 5 | గాధి | గాధికి | | 28 | యిప్పు | యిప్పు |
| | 6 | హుంపు | హుంపు | | | | |

N. B:-ముఖ్యమైన లోపంబులనే వ్రదహరించితిని. పాఠకులు ముందుగా సవరించుకొనవలయును.

చందాదారుల పేర్లు.

వరంగల్లు.

నేరళ్ళ లక్ష్మీవరసయ్య గారు.

తొగనోయి (కిరింనగర్ జిల్లా)

నాగమళ్ళ వీరయ్య వ. వీరమల్లు గారు.

కోటరామారెడ్డి వ. సదాశివరెడ్డి ,,

కోట మల్లారెడ్డి వ. రాజారెడ్డి ,,

తిప్పిరెడ్డి మల్లారెడ్డి వ. రామిరెడ్డి ,,

బోసగిరి బుచ్చయ్య వ. బాలరాజు ,,

పరాంకుళం లక్ష్మణస్వామి నాయక్

నగనూరి రాజమల్లు వ. బాలగౌడు

బోసగిరి గౌరయ్య వ. బాలరాజు ,,

నాంపల్లి కిన్నయ్య వ. నంబయ్య ,,

కనుకుల.

నాగమళ్ళ సోమయ్యగారు

మీసా వేంకట్రామయ్య వ. మల్లియ్య గారు.

తామిడి వెంకట్రామయ్య వ. రాజయ్య ,,

ఆలూరి వీరభద్రారావు వ. బుచ్చయ్య ,,

మామిడాపల్లె.

బాదాలబుచ్చయ్య వ. చంద్రయ్య గారు.

గొట్టుముక్కల మల్లయ్య వ. లక్ష్మయ్య ,,

కోమ్మిడి నరసయ్య వ. రామచంద్రయ్య ,,

చింతల రాజారెడ్డి వ. లక్ష్మారెడ్డి ,,

చింతల బుచ్చిరాజారెడ్డి వ. లక్ష్మారెడ్డి ,,

కోట మల్లారెడ్డి వ. వెంకటనరసింహారెడ్డి ,,

పెదబొంకురు.

తాటిపల్లి ముత్తిలింగం వ. పాపయ్యగారు

పెదకటాపల.

వెలిది వరమృగారు

కేకెట్టి రామయ్య వ. కిష్టయ్య గారు.

కనుకూల రాజయ్య, లింగయ్య ,,

యర్రోజులక్ష్మయ్య ,,

కొత్తపల్లి.

తొడుపునూరు నాథాయణ వ. మల్లయ్యగారు

కన్నా ఆనంతయ్య ,,

చెరుకు రంగారెడ్డి వ. రామయ్య ,,

చెరుకు నరసింహారెడ్డి వ. వెంకటారెడ్డి గారు.

చెరుకు కిన్నయ్య వ. కేశవరెడ్డి ,,

చెరుకు నరసింహారెడ్డి వ. రామయ్య గారు.

చెల్లూరి రాజయ్య వ. చంద్రయ్య ,,

పెల్లనాబాద్.

ముస్తాల బాలరాజు సీతయ్య వ. గౌరా గార్లు

గజ్జెపల్లి.

పర్వతభట్టరామచంద్రయ్యరాజేశ్వరరావుగార్లు

పెద్దాపల్లి జాగీరు

యెల్లంకి ముత్తయ్య వ. లచ్చయ్య గారు.

యెల్లంకి రాజేశం వ. లింగయ్య ,,

ఆల్లంకి సాంబయ్య వ. బాలరాజు ,,

మాడికెట్టి వేమయ్య వ. రామయ్య ,,

రామిడి హనుమంతు వ. రాజయ్య ,,

పెనుగొండలచ్చయ్యభాగ్యరంగమ్మ గారు.

కిన్నా లక్ష్మయ్య, వీరేశం ,,

కిన్నా సంగయ్య వ. లక్ష్మయ్య ,,

నాళ్ళ రామయ్య వ. సీద్దయ్య ,,

కొత్తిగమయ్య ,,

ఆకినపల్లిఆగయ్య ,,

బొడ్ల మల్లయ్య ,,

వేముల రామయ్య లక్ష్మయ్య

నైదాళంకరయ్య వ. భూమయ్య ,,

నైదా వెంకటేశం వ. రాజయ్య ,,

మంలెన మాణిక్యం వ. లక్ష్మయ్య ,,

పెనుకుళ్ళ రామస్వామి వ. ముత్తిలింగం ,,

జవ్వాజి సత్యనారాయణ ,,

ఆల్లంకి బుచ్చయ్య వ. రాజయ్య ,,

తొడుపునూరి నాగయ్య వ. కాజలింగం ,,

మాగల బుచ్చయ్య ,,

యెల్లంకి భద్రయ్య వ. సాంబయ్య ,,

యెల్లంకి లింగయ్య వ. బోజయ్య ,,

కిత్తెర్ల కాజన్న ,,

డిజ్జూరు తా, హుజూర్ ఆబాద్.

ముద్దపాని వెంకట బుగలారెడ్డి గారు.

తాడికల్లు.

భూపతి శంకరయ్య గారు.

సీతంపాళ్ళు.

చందా సర్వలింగం గారు.

చందా రాజేశం
గందె లింగయ్య
నరేంద్రుల వల్లయ్య
బూదనూరు

గిద్దె రమణారెడ్డి
కొమరకల్లి కామచంద్రయ్య
అనంతుల వీరయ్య
అనగం వెంకన్న
అనంతుల విశ్వనాథం
కుసుంబా శేషయ్య

ములకలపల్లి.

వడిజ వీరన్న వ|| రాజయ్య
గంగిశెట్టి రాజలింగం వ|| శ్రీరాములు
ఉయ్యంపడ తాళ్ళూరు.

జగ్గపాటి నాగభూషణరావు
పరాశరం వెంకటరమణాచార్యులు
చెరుకూరి సత్యనారాయణదాసు
చెరుకూరి చెలమానాసు
కటకంచిన కోటయ్య
కటకం రామలింగయ్య
ఉప్పలపాటి వెంకటప్పలరాజు
య్యోగారెడ్డి వెంకయ్య
అత్తోట వెంకట్రాముడు

,, చినవీరయ్య
బండారు కామయ్య
అత్తోట చినకోటయ్య

,, అప్పయ్య
,, పెదఅప్పయ్య
,, జానకయ్య
,, రత్తయ్య
,, నరసింహయ్య
,, చినవెంకయ్య
,, చినఅప్పయ్య
,, శివయ్య
,, వెంకయ్య
,, రా|| కో|| వెంకయ్య
,, కోటయ్య

రాయపాటి నాగయ్య
డిటో రాఘవయ్య

| | | |
|-------|---------------------|------|
| గారు. | రాయపాటి శుబ్బయ్య | గారు |
| ,, | డిటో నరసింహయ్య | డిటో |
| ,, | డిటో శ్రీవల్లయ్య | డిటో |
| | డిటో శివరామయ్య | డిటో |
| గారు. | డిటో గురవయ్య | డిటో |
| ,, | డిటో వెంకయ్య | డిటో |
| ,, | కెల్లెం వీరయ్య | డిటో |
| ,, | పులమాల పుల్లయ్య | డిటో |
| ,, | కొగ్గకుంట చినకోటయ్య | డిటో |
| ,, | వెలమ వెంకయ్య | డిటో |
| | వెలమ జవలయ్య | డిటో |
| గారు | నూతలపాటి నరసయ్య | డిటో |
| ,, | నలకాల నరసయ్య | డిటో |
| | రాటాల నూరయ్య | డిటో |

| | | |
|-------|-----------------------------------|---------|
| గారు. | గుంటూరు | |
| ,, | లంకెల కూనపాటి నరసింహారావు | గారు. |
| ,, | కొత్త అశోక గానోజ | డిటో |
| ,, | దేను వెంకటకోటయ్య | డిటో |
| ,, | కొత్తిమాను సత్యనారాయణ | డిటో |
| ,, | అన్నయ్యపేట. | |
| ,, | వేములూరిరామయ్య పెరమాళ్ళబూడికోటయ్య | గార్లు. |
| ,, | | |

| | | |
|----|--------------------|-------|
| ,, | సత్తెపపల్లి. | |
| ,, | చందలూరి శ్రీరాములు | గారు. |
| ,, | మట్టా సత్యనారాయణ | డిటో |
| ,, | వద్ది రామలింగం | డిటో |

| | | |
|----|---------------------------|-------|
| ,, | చింతిరేల. | |
| ,, | వెలిదండ సత్యనారాయణ | గారు. |
| ,, | మాదాని పురం రామానుజం | డిటో |
| ,, | చెరుకూరి కృష్ణయ్య | డిటో |
| ,, | మల్లారెడ్డి గూడెం. | |
| ,, | గుడుగుంట కృష్ణయ్యగారు. | |
| ,, | రేవురు. | |
| ,, | ముడియూరి అంకిరెడ్డి గారు. | |
| ,, | తెనాలి. | |
| ,, | నందిరాజు సీతమ్మ గారు. | |
| ,, | మరసరావుపేట. | |

| | |
|-------|--------------------------|
| గారు. | వెన్నా కృష్ణమూర్తి గారు. |
| డిటో | |

